# सम्प्राप्ति स्तर, बुद्धि-लब्धि एवं आयु वर्ग की भिन्नता के संदर्भ में किशोरों की समस्याओं का अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी की
शिक्षा शास्त्र विषय में पी-एच० डी०
उपाधि हेतु प्रस्तुत

2002

डा० रामलखन विश्वकर्मा
रीडर
शिक्षक प्रशिक्षण विभाग
डी० वी० कालेज, उरई

शोधकर्त्री
शिखा श्रीवास्तव

**डा0 राम लखन विश्वकर्मा**
रीडर, शिक्षक प्रशिक्षण विभाग,
डी0वी0 (पी0जी0) कालेज, उरई
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय

## प्रमाण पत्र

मुझे प्रमाणित करते हर्षानुभूति हो रही है कि सुश्री शिखा श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध **"सम्प्राप्ति स्तर, बुद्धि लब्धि एवं आयु वर्ग की भिन्नता के संदर्भ में किशोरों की समस्याओं का अध्ययन"** मेरे मार्ग दर्शन में पूर्ण किया है। यह शोध प्रबन्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के शोध अध्यादेश के सभी उपबन्धों की पूर्ति करता है। यह शोध सर्वथा पी-एच0डी0 की उपाधि के योग्य है।

यह शोध प्रबन्ध उन्हीं के अनुसंधान, परिश्रम और अध्ययन का परिणाम है। मैं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

पर्यवेक्षक

RM

डा0 रामलखन विश्वकर्मा

# घोषणा

मैं सत्यतापूर्वक घोषणा करती हूँ कि प्रस्तुत शोध – **'सम्प्राप्ति स्तर बुद्धिलब्धि एवं आयु वर्ग की भिन्नता के संदर्भ में किशोरों की समस्याओं का अध्ययन"** मेरी अपनी मौलिक कृति है एवं पहले कभी प्रस्तुत नहीं हुई है ।

शोधकर्त्री

शिखा श्रीवास्तव

शिखा श्रीवास्तव

# अर्पित सुमन

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध हेतु प्रारम्भ से लेकर उसकी समाप्ति तक श्रद्धेय **डा0 रामलखन विश्वकर्मा** से मुझे जो विद्धतापूर्ण उचित निर्देशन, दूरदर्शितापूर्ण प्रशिक्षण, प्रोत्साहन एवं सुलझा हुआ दृष्टिकोण असीम रूप से प्राप्त हुआ उसके लिये मैं सदैव ऋणी व श्रद्धावनत रहूँगी आपकी प्रेरणा मेरे लिये हर समय पथ प्रदर्शक रही उसे शब्दों में व्यक्त कर पाना मुश्किल है ।

शोध प्रबन्ध में संकलित तथ्यों के विश्लेषण के संदर्भ में विभिन्न पुस्तकालयों से सामग्री एकत्र की गई है । इस हेतु मैं बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी , डी0वी0 कालेज, उरई अर्तरा कालेज अर्तरा के पुस्तकालयों के प्रति कृतज्ञता अर्पित करती हूँ ।

इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में **डॉ0 (श्रीमती) शैलजा गुप्ता** का सहयोग प्रशंसनीय है । समय –समय पर उनकी प्रेरणा ने मुझे इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में सहयोग दिया है । मैं उन्हें अपनी कृतज्ञता प्रगट करती हूँ ।

प्रस्तुत शोध कार्य के टंकण में श्री नीरज महरोत्रा जी का जो सहयोग मुझे प्राप्त हुआ वह सदैव स्मरणीय रहेगा ।

मैं अपने पिता श्री **प्रयाग नारायण श्रीवास्तव** व माता **श्रीमती विद्या श्री वास्तव** के प्रति श्रद्धा के साथ नतमस्तक हूँ । जिन्होंने शोध कार्य शुरू करने तथा शोध कार्य को पूरा करने के लिये समय–समय प्रेरणा स्त्रोत के रूप में कार्य किया मैं उनकी सदैव ऋणी रहूँगी । मैं अपने दोनो भाई अमित श्रीवास्तव व सौरभ श्रीवास्तव व बहिन प्रियंका श्रीवास्तव के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ जिन्होंने समय–समय पर प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से शोध प्रबन्ध को पूरा करने में सहयोग दिया है ।

अंत में ईश्वर को श्रद्धा के साथ नमन करती हूँ जिनकी विशेष कृपा से यह शोध प्रबन्ध पूर्ण हो सका है ।

शिखा श्रीवास्तव
शिखा श्रीवास्तव

## सारिणी सूची

# विषय अनुक्रमणिका

| क्रमांक | अध्याय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|

# प्रथम अध्याय

## प्रस्तावना

समस्त मानव जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है । जो कुछ भी व्यवहार हमारे ज्ञान की परिधि को विस्तृत करें, हमारी अन्तृदृष्टि को गहरा करें, हमारी प्रतिकियाओं का परिष्कार करें, हमारी भावनाओं और कियाओं को उत्तेजित करें अथवा किसी न किसी रूप में हमें विभाजित करें वह हमें शिक्षित करता है । व्यापक रूप में देखा जाय तो प्रत्येक मनुष्य के जीवन के प्रत्येक अनुभव को ही शिक्षा कहा जा सकता है । वर्तमान में सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रकिया और प्रयोग की पद्धतियों का मूल स्त्रोत शिक्षा ही है ।

मनुष्य एक बुद्धिजीवी प्राणी है और जन्म से ही वह अपने आस–पास की प्रेरणाओं एवं अनुभवों व वातावरण से सीखता रहता है । बालक जन्म के समय अबोध शिशु होता है शनैः शनैः परिवार वातावरण समाज से सीखता रहता है ।कुछ समय पश्चात वह एक परिपक्व सामाजिक प्राणी बन जाता है । शिक्षा मनोविज्ञान की मात्रा में कह सकते हैं कि मनुष्य में वातावरण से अनुकूलन करने की प्रवृत्ति होती है । मानव भी गतिशील समाज की तरह गतिशील है । वातावरण से लाभ उठाना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है ।

परिवर्तन संसार का नियम है । मनुष्य भी इस संसार का अंश है इसलिये परिवर्तित संसार व समाज उसको प्रभावित करता रहता है । काफी समय पूर्व मानव की यात्रा का साधन ऊँट गाड़ी व बैलगाड़ी थी परन्तु वर्तमान में हमारी यात्रा का साधन अंतरिक्ष यान भी है जिसके द्वारा हम अंतरिक्ष में भ्रमण कर सकते हैं । यह सब परिवर्तन का ही प्रभाव है । जिसमें मनुष्य की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहती है । समय की इन्हीं परिवर्तित मान्यताओं, विचारों एवं स्वरूप से समाज के प्रत्येक व्यक्ति का जीवन प्रभावित रहता है ।

प्रगतिशील समाज में प्रत्येक व्यक्ति, समाज व समुदाय के अपने विचार, रीतियाँ, परम्परायें, आचार व व्यवहार अलग अलग होते हैं। प्रत्येक की रूचियाँ, अभिरूचियाँ,

आवश्यकतायें, योग्यतायें भी अलग अलग होती हैं । अलग – अलग योग्यतायें रूचियाँ व विचार इस संसार व समाज को परिवर्तित करने में अपना अपना अहम योगदान प्रदान करते हैं । अलग अलग भूमिका निर्वाह करने के पीछे ही मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है । जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति के व्यवहार, योग्यता, अनुभव व रूचि का आकलन होता है । जिसके द्वारा वह व्यक्ति की योग्यताओं व व्यवहार को परिमार्जित, परिवर्तित व परिवर्धित करके उसे समाज का महत्वपूर्ण प्राणी बनाया जाता है । इसी प्रकार ही रेमन्ट ने शिक्षा व मनोविज्ञान का मनुष्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान बताया है । "शिक्षा विकास का वह क्रम है जिससे मनुष्य अपने आपको आवश्यकतानुसार भौतिक, सामाजिक व आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है ।

आज के युग में ज्ञान विज्ञान इतना विकसित हो गया है कि उसने मानव के विकास के इतिहास को लिपिबद्ध कर लिया है । मानव विकास के इतिहास में ज्ञान–विज्ञान की अनेक नई शाखाओं का विकास हुआ है । मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक विकास के अनेक नवीन पहलुओं को प्रस्तुत करता है । जिससे नवीन उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं । व्यक्ति का जन्म विकास पतन तथा मृत्यु सदैव ही मानव के अध्ययन के लिये जिज्ञासा बने रहे हैं । आज व्यक्ति के विकास की विभिन्न अवस्थाओं का ज्ञान प्राप्त करना, अनेक नवीन पहलुओं का अध्ययन करने के लिये आवश्यक हो गया है । व्यक्ति के विकास के अन्तर्गत शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था व प्रौढ़ावस्था आदि की विशेषताओं, कमियों आदि का अध्ययन किया जाता है ।

विकास की इन अवस्थाओं में किशोरावस्था सबसे जटिल व महत्वपूर्ण अवस्था है । किशोरावस्था में जो मानसिक, शारीरिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं वे व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं । यह जीवन का सबसे कठिन काल है । सैद्धान्तिक दृष्टि से किशोरावस्था जीवन के प्रथम चरण की सर्वश्रेष्ठ पुनरावृत्ति मानी जाती है । वैयक्तिक एवं सांस्कृतिक भिन्नता के साथ–साथ किशोर काल जलवायु की भिन्नता के कारण विभिन्न देशों में विभिन्न उम्र पर पाया जाता है ।

एक किशोर न तो बालक होता है और न प्रौढ़ । हाई स्कूल के अंतिम वर्षों में अथवा कॉलेज जीवन के प्रथम , द्वितीय और तृतीय वर्षों में बालक प्रायः किशोरावस्था में ही होता है । उस समय उसकी बुद्धि, रूचि, अभिवृत्ति, सम्प्राप्ति एक दूसरे से भिन्न होती हैं, किशोर काल में विभिन्न गुण परिपक्व अवस्था में नहीं होते हैं । लेकिन प्रचुर मात्रा में होते हैं । इसलिये इस अवस्था में नयी नयी विशिष्ट समस्यायें उत्पन्न होती हैं । इस काल में शिक्षक का कर्तव्य होता है वह समस्याओं के स्वरूप और उनके कारण को भलीभाँति मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयत्न करें जिससे किशोरो की समस्याओं का समाधान भलीभाँति हो सके और उनके व्यक्तित्व का उचित विकास हो ।

किशोर काल का अध्ययन अत्यन्त गम्भीरता से करना चाहिये क्योंकि इसी अवस्था से किशोर का महत्वपूर्ण विकास शुरू होता है । अतः यही इसी तथ्य पर आकर समस्या उभरती है कि विभिन्न किशोरों के विभिन्न गुणों का विकास किस प्रकार से किया जाये जिससे वह सामाजिक कुशल प्राणी बन सके ।

<u>समस्या की पृष्ठभूमि</u> :

मनुष्य की स्वाभाविक शक्तियों का प्राकृतिक, सर्वांगीण विकास ही शिक्षा है । शिक्षा मनुष्य की बौद्धिक , नैतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि शक्तियों का विकास करती है । शिक्षा व्यक्ति के जीवन का आधारशिला है । शिक्षा ही विकास का पर्याय है । मानव जीवन के लिये शिक्षा एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है मानव में कुछ ऐसी मूल–भूत प्रवृष्टियाँ होती है जो सभ्यता तथा सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से उत्तम नहीं होती शास्त्रों में कहा गया है "जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्चयते" यहाँ शूद्र उन्हीं मूलभूत प्रवृत्तियों को कहा गया है संस्कार अर्थात् शिक्षा के द्वारा परिमार्जित होने पर वह द्विज अर्थात् श्रेष्ठ गुणों से युक्त हो जाता है शिक्षा मानव को सभ्य बनाती है उसकी आदिकालीन बर्बरता को नष्ट करती है, मानव को सुखी एवं सभ्य सामाजिक जीवन की ओर उन्मुख करती है ।

काण्ट के अनुसार "मानव को पशु से मानव बनाने वाली प्रकिया केवल शिक्षा ही है, शिक्षा के अभाव में पशु मानव समान हो सकते है ।"

मानव अपने थोड़े से जीवन काल में समस्त उपयोगी वस्तुओं का ज्ञान अपने आप नहीं प्राप्त कर सकता, यदि उसे प्रकृति पर छोड दिया जाय संसार रूपी अगाध समुद्र को जीवन रूपी नौका से पार करने में शिक्षा मांझी का काम करती है, मानव के अन्तर्निहित सभी गुणों एवं शक्तियों को विकसित करती है । वर्तमान सम्भावनाओं से परिचित कराती है, मानवी अनुभवों का पुनः संगठन एवं पुर्ननिर्माण करती हैं ।

इस संसार में प्रत्येक मनुष्य सम्पूर्ण इकाई है तथा प्रकृति की यह अद्‌भुत रचना है, प्रत्येक मानव के अंग एक जैसे होते हैं, छोटे, बडे, मोटे, पतले तो हो सकते हैं, टॉगे दो दो होती है तो असामान्य परिस्थितियों को छोडकर दो ही होगीं, यह उनसे चलेगा ही, यही बात हम नाक, कान, हाथ मस्तिष्क, ऑख या अन्यान्य अंगों के लिये भी कह सकते हैं । यही दशा मनुष्य के मनोभावों की भी होती है प्यार का, प्रसन्नता का एवं दुःख का आभास आदि प्रत्येक मनुष्य में होते हैं । भारतीय संस्कृति तो इस बात को भी मानती है कि प्रत्येक जीवित मानव में काम, कोध, लोभ, मोह एवं अहंकार के बीज होते हैं, यह बात और है कि प्रयोग रचनात्मक रूप ले या असामाजिक । समस्या तब उत्पन्न होती है, जब किसी इन्सान की आकांक्षायें, प्रवृत्तियॉं, इच्छायें या मनोभाव किसी बाध्य सम्बन्ध से टकराते हैं । ये बाह्य सम्बन्ध पारिवारिक, सामाजिक या आर्थिक कोई भी हो सकते हैं, ज्यों ही टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है त्यों ही मनुष्य के भीतर कुछ द्वन्द्व उत्पन्न होता है । इस समय बुद्धि या अनुभव ने मिलकर या अकेले बाह्य प्रभाव को समोह लिया या अन्य किसी के द्वारा उसे उचित दिशा निर्देश मिल गया तो मनुष्य का जीवन प्रवाह नित्य की तरह आगे चलता रहता है उदाहरणतः यदि व्यक्ति के अहम् को किसी और व्यक्ति ने आधात पहुॅचाया और बुद्धि ने केवल इतनी आवाज दी "कोई बात नहीं इस पर क्या झगड़ा करना तब तो समस्या उत्पन्न नहीं होगी, और अगर मनोभाव बाह्य आधात को सहन न कर सके और

बुद्धि भी घबराये तो व्यक्ति या तो खुद पर क्रोध उतारेगा अथवा दूसरे पर आक्रामक प्रतिक्रिया करेगा और अगर वो ये न कर सका तो लाख बचने पर भी उसके अचेतन मन में वह बात बैठ जायेगी और यही स्थिति समस्या उत्पन्न कर देती है ।

प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न है, उनमें व्यक्तिगत भिन्नतायें तो निश्चित हैं ही और यदि दो व्यक्तियों का वातावरण, परिवार, स्तर, आयु, योग्यता एवं बुद्धि, स्नेह, प्यार, सहानुभूति, ममता एवं वात्सल्य से वंचित बालक जिन्हें भाग्य की प्रतिकूलताओं ने विकसित होने से पूर्व ही धराशायी कर दिया है, उसका व्यक्तित्व, उसकी समस्यायें निश्चय ही उस बालक से भिन्न होगीं जिसका बचपन माता–पिता के ममत्व, वात्सल्य एवं स्नेह की छाया में पल्लवित एवं परिवर्धित हुआ है ।

इस समाज में प्रत्येक व्यक्ति समस्याओं से घिर हुआ है और लगभग सभी की समस्यायें एक दूसरे से भिन्न होती है । यह भी निर्विवाद रूप से सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी समस्या का समाधान अलग अलग ढंग से करते हैं तथा समस्या एक होने पर भी एक व्यक्ति उसी समस्या के प्रति सहज भाव से प्रतिक्रिया व्यक्त करता है एवं प्रसन्नता का अनुभव करता है जबकि दूसरा सदैव समस्याओं से बचने अथवा अस्वीकार करने की चित्तवृत्ति में रहता है ।

सामान्यतः वातावरण, पारिवारिक पृष्ठभूमि, आर्थिक स्तर इत्यादि को मुख्यतः समस्याओं के प्रभावक तत्व मानते हैं अब प्रश्न यह उठता है कि क्या संप्राप्ति स्तर, बुद्धि लब्धि, आयु वर्ग की भिन्नता एवं सामाजिक स्तर की भिन्नता समस्याओं को प्रभावित करती है ? यदि हॉं तो किस सीमा तक ? क्या उचित निर्देशन से समस्याओं का समाधान किया जा सकता है ? ये प्रश्न एक शोध समस्या निर्माण के लिये मार्गदर्शन देते हैं । एतदर्थ एक अनुसंधान की आवश्यकता प्रतीत होती है कि संप्राप्ति स्तर, बुद्धिलब्धि, आयुवर्ग की भिन्नता एवं सामाजिक स्तर की भिन्नता के कारण किशोरों की समस्याओं पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया जाये एवं उनके उचित निर्देशन हेतु सुझावों का निर्धारण किया जाये ।

किशोरों को अध्ययनार्थ इसलिये चुना गया है क्योंकि वे समाज व राष्ट्र के भावी कर्णधार है तथा समाज से उन्हें काफी अपेक्षायें रहती है । किशोर वर्ग को अपनी इस अवस्था में शारीरिक, मानसिक, भावात्मक, नैतिक एवं वास्तविक स्तर पर जो अनुभव होते हैं, वह वास्तव में जटिल और एक सीमा तक अलग प्रकार के होते हैं, क्योंकि वह बीच की अवस्था में होते हैं न बालक और न ही युवा जब कि युवा होते मन में असीम उत्साह, उत्कंठा, विचार कुछ करने की बलवती इच्छा आदि प्रचुर मात्रा में होती है । इसलिये किशोर वर्ग की समस्याओं का अध्ययन करके उनके सकारात्मक पक्ष को विकसित करना आवश्यक है ।

<u>किशोरावस्था में समस्याओं का कारण एवं किशोर</u> :

किशोर ही वर्तमान की शक्ति व भावी आशा को प्रस्तुत करता है । मानव विकास की विभिन्न अवस्थाओं में से किशोरावस्था विकास की तीसरी अवस्था है । सैद्धान्तिक दृष्टि से कैशोर्य जीवन के प्रथम चरण की सर्वश्रेष्ठ पुनरावृत्ति मानी जाती है । इस अवस्था में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं, वे व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं वह जीवन का सबसे कठिन काल है । इस अवस्था में न तो बालक समझा जाता है और न ही प्रौढ़ । इस समय बालक पुनः अस्थिर हो जाता है । उत्तरा बाल्यकाल में जो स्थिरता आती है वह समाप्त हो जाती है और शारीरिक एवं मानसिक व्यवस्थापन पुनः अस्त व्यस्त हो जाता है ।

किशोरावस्था का दौर परिवर्ती काल (ट्रांजीशनल पीरियड) होता है । जो बहुत से तनाव, टकराव और सामन्जस्य की समस्याओं से भरपूर होने की प्रवृत्ति रखता है । जन्म के बारे में किसी भी अवस्था में इतना ट्रीजीशन नहीं होता है जितना किशोरावस्था में होता है । इंग्लैण्ड की हैडो कमेटी रिपोर्ट के अनुसार :-

There is a tide which begings to rise in the views of youth at the age of eleven or twelve. It is called by the name of adolescence. If that tide can be taken at the flood and a new voyage begun in strength and

along the flow of its current. We think that it will more on the fortune.

किशोरावस्था संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था है । इस काल में किशोर को बिल्कुल नवीन संसार दृष्टिगोचर होता है परन्तु कार्य चिन्तन एवं अनुभूति की पुरानी आदतो से वह अपना मन पूरी तरह विमुख नहीं कर पाता है । उसे नयी सफलता पाने के लिये संघर्ष करना पड़ता है । वह बड़ी बड़ी आशायें बाँधता है । दिवा स्वप्न देखता है । इस अवस्था में किशोर अधिक ही महत्वाकांक्षी व कल्पनाशील होता है । किन्तु यथार्थ के धरातल पर बहुत सा अंश अपरीक्षित, अचित्रित, निर्जन प्रदेश जैसा होता है ।

किशोरावस्था का उचित उदय काल, वैयक्ति एवं सांस्कृतिक भिन्नता के साथ – साथ किशोर काल की जलवायु के कारण भी विभिन्न देशों में विभिन्न उम्र पर पाया जाता है । कैशोर्य के शारीरिक परिवर्तन के चिन्ह गर्म देश में शीघ्र दृष्टिगोचर होते हैं जबकि ठंडे देशों में कुछ वर्ष उपरान्त । उदाहरण के लिये इंग्लैण्ड में किशोर काल का प्रारम्भ लगभग पन्द्रह या सोलह वर्ष से माना जाता है जबकि भारत में किशोर काल का उदय लगभग तेरह वर्ष से माना जाता है । हालाँकि किशोरावस्था की कोई बिल्कुल निश्चित अवधि नहीं है । फिर स्थूल रूप से समय वह माना जाता है जब नव वयस्कों में योवनारम्भ के लक्षण दिखाई पड़ने लगते हैं ।

किशोर काल में शारीरिक विकास के स्पष्ट लक्षण स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगते हैं इस अवस्था में व्यक्ति लगभग अपनी पूरी लम्बाई पर पहुँच जाते हैं । एक और महत्वपूर्ण परिणाम यह होता है कि किशोर–किशोरियों में यौन–परिपक्वता आ जाती है, इस अवस्था में सामान्यतः मानसिक क्षमताओं की पूर्ण उपलब्धि भी हो जाती है । किशोरावस्था के समाप्त होते–होते लगभग सभी किशोर–किशोरियों में ये अपेक्षा की जाती है कि प्रौढ़ावस्था में प्रवेश करने पर वह एक नागरिक के रूप में उत्तरदायित्व वहन करने को तैयार रहेगा । किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध में पहुँचने पर बहुतेरे लोग इस तथ्य से अधिकाधिक अवगत होते जाते हैं कि जीवन के कुछ निर्णय

और जीवन संघर्ष के कुछ ऐसे पक्ष भी हैं, जिनका सामना व्यक्ति को अकेले ही करना पड़ता है, भले ही उसके शुभेच्छुओं और मित्रों की संख्या अनेक हो । ज्यों–ज्यों अपनी रूचियों कर्तव्यों और विश्वासों के सम्बन्ध में युवा व्यक्ति की धारणा स्पष्ट हो तो जाती है, उसे संभवतः इसकी भी अधिक जानकारी हो जाती है कि वह अन्य लोगों से किन बातों में भिन्न है ।

किशोरावस्था में मानसिक विकास बहुत शीघ्रता से एवं अधिक मात्रा में होता है । यह वह समय जब बुद्धि अपने विकास के चरम बिन्दु पर पहुँचती है किशोरावस्था प्रारम्भ होते ही यह विकास प्रारम्भ हो जाता है और किशोरावस्था के अंतिम काल तक सीखने की योग्यता पूर्ण हो जाती है । इस काल में मानसिक गुण जैसे कल्पना, स्मृति दिवा स्वप्नों की अधिकता, तर्क निर्णय शक्ति में वृद्धि आदि पाये जाते हैं । इस अवस्था में मानसिक स्वतन्त्रता की भावना प्रबल होती है । किशोर बड़े के आदेशों, विभिन्न परम्पराओं , रीति–रिवाजों और अन्ध विश्वासों के बन्धन में नहीं रहना चाहता है । किशोर–किशोरी अंशतः आमूल परिवर्तनवादी होते हैं । नवीन अपरिचित क्षेत्रों में बढ़ चलने की उत्तेजना होती है । वहीं वे दूसरी ओर अतीत में निवास करते हैं । अतीत में उनका जीवन जैसा होता है उसी पर उनकी भविष्य की कल्पना भी निर्भर रहती है ।

किशोरावस्था में ही किशोर अपने भावी व्यवसाय को चुनने के प्रति चिंतित होता है जिसका प्रभाव उसके जीवन के शेष भाग पर भी पड़ता है । इन अवस्था में जिन अनुभवों के आधार पर निर्णयों का निर्माण किया जाता है उन अनुभवों की प्राप्ति के पूर्व ही अनेक व्यक्तियों को भविष्य के लिये किसी निर्णय को बदलना, अपने को मोड़ लेना और अपनी जीवन दशा को पलट देना कठिनतर होता है, पूर्व में किये निर्णयों का बंधन दृढ़तर हो जाता है । व्यवसाय चुनाव करने के साथ–साथ इसी अवस्था में किशोर–किशोरियों को शिक्षा सम्बन्धी भी अनेक चुनाव करने पड़ते हैं कि वे पढ़ाई छोड़ दे या जारी रखे । हाई स्कूल या इण्टर के बाद आगे पढ़ाई करें । अथवा किसी दूसरे प्रकार के औपचारिक प्रशिक्षण के लिए तैयारी करें । इस अवस्था में किशोर– किशोरियों को आज के लिये जीना एवं कल के लिये पूर्वायोजन करना होता है ।

शैशवावस्था की स्वार्थ भावना, किशोरावस्था में परमार्थ भावना का रूप ले लेती हैं । इस समय किशोर में त्याग व बलिदान की भावना प्रबल दिखाई देती है । किशोरो में आत्म सम्मान की भावना प्रबल होती है । आत्म सम्मान की भावना के फलस्वरूप किशोरो में आत्म निर्भर तथा स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने की भावना जागृत होती है । अतः इस अवस्था में उनके साथ अमनोवैज्ञानिक व्यवहार न करके प्रेम व सहानुभूति द्वारा उचित बातों की शिक्षा देनी चाहिये । किशोर–किशोरियों पर निजी आन्तरिक दबाब तो पड़ते ही हैं उसके अतिरिक्त उसके समाज में ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं, जो लक्ष्य तक पहुँचने के अनेक प्रयत्न को जटिल बना देती है, उदाहरणार्थ उस व्यक्ति के लिये जो अपनी कार्य–क्षमताओं को चरितार्थ करना चाहता है, यह बात बड़े महत्व की है वह अपने पैरो पर खड़ा होना स्वतन्त्र रूप से सोचना और आत्म–निर्णय करना सीखे, किन्तु प्रबल सामाजिक शक्तियों से जूझते हुए इस ध्येय की प्राप्ति उसके लिये संभव नहीं हैं, चारों ओर से उस पर परम्परा के अनुरूप चलने के लिये दबाब पड़ते रहते हैं । उसे उसी ढंग से सोचना चाहिये जैसे और सोचते हैं । उनकी अनुभूतियाँ वैसी ही होनी चाहिये जैसी औरो की हैं । उसी प्रकार के व्यक्ति को अपना जीवन साथी चुने जैसा "वे" ठीक समझते हैं । इसी प्रकार के अन्य दबाब भी उस पर पड़ते हैं समाज के साथ सुसमंजित होने के लिये लोग उस पर जोर डालते हैं जिसका अक्सर परिणाम उसे अपने अच्छे और स्वस्थ हितों की बलि देकर भुगतना पड़ता हैं ताकि वह समूह के हितों के अनुसार चल सके । नैतिक क्षेत्र में अनेक अन्य परस्पर विरोधी दबाब होते हैं, लोग कहते है व्यक्ति को जी खोलकर उदारता बरतनी चाहिये और किशोर–किशोरों चारों ओर तीव्र और अवसर बहशी ढंग की प्रतियोगिता देखता है, अपने अधिकारों के लिये उन्हें तनकर खड़ा होना चाहिये पर कोई बेवजह भी एक गाल पर मारे तो दूसरा गाल भी घुमा देना चाहिये ।

किशोरावस्था में किशोर एवं किशोरों में तर्क की मात्रा प्रचुरता में व्याप्त होती है । वह माता–पिता व बड़े लोगों के साथ स्वस्थ संबंध स्थापित कर पाने में असुविधा महसूस करते हैं । यद्यपि दीर्घकाल तक किशोर एवं किशोरियाँ अपने माँ–बाप पर निर्भर रहते हैं । वे रात दिन

उनसे सम्बद्ध रहते हैं तथापि बड़े होकर उनमें स्वयं कुछ कर गुजरने की इच्छा बलवती हो जाती है । इसलिये उनके आचार–विचार व व्यवहार में आदि में व पूर्ववर्ती पीढ़ी के आचार विचार व व्यवहार में टकराव होता है । अतः इस अवस्था में माता–पिता, शिक्षक आदि का कर्तव्य है कि उनसे स्वस्थ संबंध स्थापित करके उनका सही मार्गदर्शन करें । किशोर सफलता प्राप्ति के लिये अवसर चाहता है । वह चाहता है कि वह कुछ ऐसा कार्य करे जिससे लोभ उसकी सहायता करें उसे बहुत कुछ समझे । किसी न किसी प्रकार उनकी आत्म प्रदर्शन की तीव्र भावना रास्ता खोजना चाहती है । अतः शिक्षित समुदाय को यह चाहिये कि उन्हें ऐसे अवसर प्रदान करें जिनके द्वारा वह इच्छित कार्यो को पूर्ण कर दूसरे लोगों की सहायता का पात्र बन सके और वह अपनी आत्म प्रदर्शन की भावना की भी परितुष्टि भी कर सके ।

किशोरावस्था सामाजिक व्यवस्थापन का समय है । उस काल अवधि में व्यक्ति सामाजिक संबंधों के बहुत से पाठ पढ़ता और बहुत से सामाजिक अनुभव प्राप्त करता है तथा सामाजिक परिस्थितियों में अपने को व्यवस्थित करने की चेष्टा करता है । किशोर काल के प्रारम्भ में बालक और बालिकाओं की मित्रता तीव्र संवेगों के ऊपर आधारित होती है । उत्तर किशोर काल में उस मित्रता का आधार वैयक्तिक दृष्टिकोण एवं रूचियों में समानता होती है । इस काल की मित्रता में एक दूसरे के प्रति दृढ़ प्रेम एवं प्रगाढ़ भक्ति होती है । वे एक दूसरे के प्रति वफादार होते हैं ।

डॉ0 जान के अनुसार शैशवकालीन काम भावना की पुनरावृत्ति किशोरावस्था में अधिक तीव्र एवं उच्चतर रूप में होती है । यह अवस्था उत्तर बाल्यकालीन सुसुप्त भावना का जागृति काल है । उसमें काम प्रवृत्ति जागृत होकर तीव्र रूप धारण करती है तथा व्यक्ति में प्रजनन शक्ति आ जाती है । इस अवस्था में किशोर अपने शरीर से भी प्रेम करने लगता है ।

मनोविज्ञान की भाषा में किशोरावस्था के समस्याओं की अवधारणा अमेरिका की प्राग्रेसिव एजुकेशन एसोसियेशन द्वारा अध्ययन के साथ उत्पन्न हुई । आर0जे0 हैविंग हर्स्ट ने अपनी पुस्तक किशोरावस्था की समस्याओं को समझकर पहचानकर इनके 10 कृकत्य बताये हैं –

1— विलिंग सदस्यों से सन्तोषजनक एवं परिपक्व सम्बन्ध,

2— सामाजिक रूप से स्वीकृत यौन भूमिका की पहचान एवं प्राप्ति ।

3— अपनी को देह को स्वीकार करना तथा उसका प्रभावी प्रयोग ।

4— प्रौढ़ो से भावात्मक मुक्ति प्राप्त करना ।

5— आर्थिक स्वतन्त्रता का विश्वास अर्जित करना ।

6— व्यवसाय का चयन एवं उसके लिये तैयार होना ।

7— विवाह एवं पारस्परिक जीवन के लिये तैयार होना ।

8— बौद्धिक कौशल को विकसित करना तथा नागरिकता के लिये अनिवार्य विचारों को विकसित करना ।

9— सामाजिक रूप से स्वीकृत व्यवहार को चाहना एवं प्राप्ति ।

10— व्यवहार निर्देशन की आवश्यकता महसूस करना ।

इन कृकत्यों की प्राप्ति के लिये अनेक समस्यायें आती हैं जो किशोरावस्था की प्रमुख समस्यायें हैं —

1— स्वयं के शरीर में आये परिवर्तनों को स्वीकार करने की समस्या ।

2— उभयलिंगी साथियों के साथ नवीन व अधिक परिपक्व सम्बन्ध स्थापित करने की समस्या

3— अपने लिंग की भूमिका को सीखने व स्वीकार करने की समस्या ।

4— माता—पिता तथा अन्य व्यस्कों से संवेगात्मक स्वाधीनता की समस्या ।

5— आर्थिक स्वाधीनता की समस्या ।

6— जीवन दर्शन एवं मूल्यों के प्राप्त करने की समरया ।

<u>समुचित निर्देशन की आवश्यकता</u>:

मानव जीवन की परिधि व्यापक है, व्यक्ति की समस्यायें भी बहुमुखी है । शिक्षा, व्यवसाय, स्वास्थय, घरेलू समस्यायें, अतिरिक्त समय का उपयोग, लोक व्यवहार आदि अनेक क्षेत्रों

में व्यक्ति निर्देशन की आवश्यकता महसूस करता है, इन क्षेत्रों को दृष्टि में रखते हुये विद्वानों ने निर्देशन के अनेक प्रारूप बताये हैं, प्रॉक्टर ने छः प्रकार का निर्देशन बताया है – शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक एवं नागरिक कार्यों में स्वास्थय एवं शारीरिक समस्याओं के लिये, अवकाश के लिये एवं चरित्र निर्माण के लिये, पैटरसन ने शैक्षिक, व्यावसायिक , व्यक्तिगत स्वास्थय सम्बन्धी एवं आर्थिक निर्देशन सम्बन्धी प्रारूपों का उल्लेख किया है, ब्रिवर के अनुसार शैक्षिक निर्देशन, व्यावसायिक निर्देशन धार्मिक निर्देशन, घरेलु सम्बन्धों में निर्देशन नागरिकता के लिये निर्देशन, अवकाश के लिये निर्देशन, वैयक्तिक निर्देशन उन्नति के लिये, निर्देशन उचित ढंग से कार्य करने के लिये निर्देशन, सहयोग एवं विचार सम्बन्धी निर्देशन तथा सांस्कृतिक कार्य सम्बन्धी निर्देशन, निर्देशन के प्रारूप हैं । उपरोक्त सभी प्रारूपों में से शैक्षिक एवं व्यवसायिक तो सर्वमान्य है तथा अन्य प्रारूपों को व्यक्तिगत निर्देशन में रखा जा सकता है । इस प्रकार निर्देशन के तीन प्रमुख प्रारूप शेष बचते हैं ।

1– शैक्षिक निर्देशन

2– व्यावसायिक निर्देशन

3– व्यक्तिगत निर्देशन

शैक्षिक निर्देशन, निर्देशन का एक महत्वपूर्ण प्रारूप है किन्तु यह व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत निर्देशन की सीमाओं को भी स्पर्श करता हुआ चलता है । जी0ई0 मायर्स के अनुसार "शैक्षिक निर्देशन छात्र के विकास या शिक्षा के हेतु अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करने के लिये छात्र के विभिन्न गुणों एवं विकास के अवसरों के विभिन्न समूहों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने वाला प्रक्रम है" रूटा स्ट्रैंग का मत है कि "शैक्षिक निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति को उचित पाठ्यक्रमों के वरण एवं उसमें प्रगति करने में सहायता देता है ।

किशोर काल का अध्ययन अत्यन्त गम्भीर एवं विशिष्ट प्रकार से करना चाहिये क्योंकि इस अवधि में अपराधों की संख्या सबसे अधिक होती है । को एण्ड को ने कहा है —– "किशोर ही

वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है । अतः किशोरावस्था में शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार ही शिक्षा का स्वरूप निर्धारित होना चाहिये ।

किशोर काल जीवन का सबसे कठिन और नाजुक समय है । इस समय किशोर में शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से क्रांतिकारी परिवर्तन होते हैं । इसी अवस्था में वह अच्छा या बुरा देश प्रेमी , देशद्रोही, धार्मिक, अधार्मिक , परिश्रमी अकर्मण्ड, सभ्य शिष्ट व सामाजिक या असभ्य, अशिष्ट असामाजिक आदि बन सकता है । शैक्षिक दृष्टि से यह काल अत्यन्त महत्वपूर्ण है । इस सम्बन्ध में वैलेन्टाइन का यह वाक्य उल्लेखनीय है –

"After long preaching on the part of psychologists, the great importance of the period of adolescence from an educational point of view is at last being widely recognised.

किशोरों को अक्सर भावी व्यवसाय की समस्या से चिन्तित रहना पड़ता है । उन्हें उचित मार्ग दर्शन नहीं मिल पाता है । समायोजन जीवन का सूत्र है । शिक्षा प्राप्त करने का उद्देश्य है – जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के मध्य समायोजन उत्पन्न करना । आज किशोरों से उत्पन्न छात्र असंतोष की समस्या के रूप में महत्व दिया जा रहा है । उचित निर्देशन ही इस बुनियादी समस्या का समाधान है ।

किशोरावस्था की सबसे बड़ी देन है – किशोरो के सोचने – विचारने और व्यवहार में मूल्यों का परिवर्तन होना । उनके स्वभाव में उदारता व सहनशीलता भी आ जाती है और व सत्य का निरूपण तथ्यों के आधार पर करता है । शिक्षाशास्त्रियों द्वारा किये गये अध्ययनों से यह पता चला है कि किशोरावस्था में बालक का व्यवहार अपने माता–पिता से भी बदल जाता है । वह नहीं चाहता है कि उसकी आलोचना की जाय उसके नैतिकता संबंधी दृष्टिकोण भी बदल जाते हैं । अतः आवश्यक है किशोर मन की आवश्यकतायें, परिकल्पनायें व उनकी क्षमताओं आदि व विस्तृत अध्ययन करने के पश्चात ही उनका समुचित मार्गदर्शन किया जाय । अध्यापक किशोरो की

इस प्रकार कहा जा सकता है यदि समस्या पीड़ित व्यक्ति को उचित समय पर निर्देशन मिल जाय तो उनके व्यक्तित्व का पूर्णरूपेण विकास निर्बाध रूप से हो सकता है । अर्थात् निर्देशन एक ऐसी प्रकिया है जिसकी सहायता से व्यक्ति समस्याओं को सुलझता हुआ लक्ष्य प्राप्त कर सकता है ।

**1.4 समस्या कथन :**

समस्या स्वयं में एक जटिल शब्द है और समस्याओं के कारण क्या है ? अथवा समस्याओं किससे प्रभावित होती है ? यह एक प्रश्न समस्त शिक्षाविदों एवं मनोवैज्ञानिकों के समक्ष एक चुनौती भरा प्रश्न चिन्ह उभार देता है, हालोंकि इस प्रश्न पर अलग–अलग विषयों में खोज की गई है मगर इसके पीछे कौन से कारण है यह स्पष्ट रूप से बता पाना असम्भव नहीं तो कठिन तो अवश्य है ।

अधिकांश लोग इसका कारण वातावरण को मानते हैं, मगर एक समान वातावरण होते हुए भी समस्याओं में भिन्नता पाई जाती है, जब इसकी तहों को उठाकर कारणों का अनावरण करते हैं तो अनेकानेक कारण उभरते हैं यथा संप्राप्ति की भिन्नता, बुद्धि लब्धि की भिन्नता, आयु वर्ग की भिन्नता, सामाजिक स्तर की भिन्नता आदि ।

अनुसंधात्री द्वारा इन समस्याओं की अनुभूति स्वयं एक हद तक अपने जीवन काल में हुई है । सबको समान सुविधायें, समान वातावरण एवं समान स्नेह प्राप्त होते हुये कुछ की समस्यायें अधिक कुछ की कम थी अर्थात् समस्याओं में असमानता थी, अब प्रश्न यह उठता है कि क्या विभिन्न महाविद्यालयों में पढ़ रहे किशोरों की संप्राप्ति स्तर, बुद्धि लब्धि, आयु वर्ग की भिन्नता एवं सामाजिक स्तर की भिन्नता भी उनकी समस्याओं पर प्रभाव डालती है ? यदि हॉ तो किस स्तर तक उनकी समस्यायें उनकी संप्रप्ति, बुद्धि लब्धि, आयु एवं सामाजिक स्तर से प्रभावित होती है ? क्या निर्देशन द्वारा इस प्रभाव को कम किया जा सकता है ये प्रश्न शोध को एक दिशा प्रदान करते

हैं । अतः शोधकर्त्री ने निम्नांकित समस्या को अध्यनार्थ चयन किया है । "संप्राप्ति स्तर, बुद्धि लब्धि एवं आयु वर्ग की भिन्नता के संदर्भ में किशोरों की समस्याओं का अध्ययन "

1.5 अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की व्याख्या :–

**शैक्षिक संप्राप्ति :** विद्यालयी विषयों या प्राप्त ज्ञान में विकसित कुशलता जो कि प्रायः परीक्षणों में प्राप्त अंकों या शिक्षक द्वारा दिये अंकों से ज्ञात की जाती है, शैक्षिक संप्राप्ति है । सम्प्राप्ति का अर्थ "डिक्शनरी आफ विहेविरल साइस में स्पष्ट किया है कि — "संप्राप्ति शैक्षिक कार्यो में प्राप्त की गई क्षमता का स्तर है यह सफलता विशिष्ट अथवा सामान्य स्तर की हो सकती है ।" इसे दो भागों में विभक्त किया गया है –

1– **उच्च संप्राप्ति** – कक्षा में प्राप्तांको के आधार पर विगत वर्ष की वार्षिक परीक्षा में 60 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाली किशोरियाँ ।

2– **निम्न संप्राप्ति** – कक्षा में प्राप्तांकों के आधार पर 50 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने वाली किशोरियाँ ।

**बुद्धि लब्धि :**

बुद्धि लब्धि परिपक्वता की गति का मापक है , इसके द्वारा हम व्यक्ति के बुद्धि स्तर का मापन करते हैं, किस अवस्था में व्यक्ति की कितनी बुद्धि होनी चाहिये, इसका निर्धारण बुद्धि लब्धि द्वारा किया जाता है । शोधकर्त्री ने बुद्धि लब्धि ज्ञात करने के लिये किशोरियों की बुद्धि के तीन स्तर निर्धारित किये हैं ।

1– उच्च बुद्धि लब्धि

2– सामान्य बुद्धि लब्धि

3– निम्न बुद्धि लब्धि

बुद्धि लब्धि ज्ञात करने का सूत्र निम्नांकित हैं –

$$\text{बुद्धि लब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{शारीरिक आयु}} \times 100$$

या

वास्तविक आयु

**आयु स्तर** -- हर्लोक के अनुसार "लैंगिक परिपक्वता एवं आयु में वैयक्ति भिन्नताओं के कारण किशोरावस्था को तीन अवस्थाओं में बाँटा जा सकता है ।

1– पूर्व किशोरावस्था 10 से 13 वर्ष तक

2– मध्य किशोरावस्था 14 से 17 वर्ष तक

3– उत्तर किशोरावस्था 18 से 21 वर्ष तक

<u>समस्यायें</u> :

"वस्तुतः समस्या का जन्म उस परिस्थिति में होता है जिसमें हम यह अनुभव करते हैं कि कुछ बात ऐसी है जिसके सम्यक समाधान के बिना कठिनाइयों का अस्तित्व बना ही रहेगा ।" प्रस्तुत अनुसंधान में निम्नांकित क्षेत्रों से संबंधित समस्याओं को ज्ञात करने के लिये अनुसंधात्री ने "युवा समस्या अभिरूचि" का निर्माण किया है ।

1– पारिवारिक समस्यायें

2– सामाजिक समस्यायें

3– व्यावसायिक समस्यायें

4– शैक्षिक समस्यायें

5– शारीरिक समस्यायें

6– संवेगात्मक समस्यायें

7— व्यक्तिगत समस्यायें

8— तिलिंगी समस्यायें

1.6 <u>अध्ययन के उद्देश्य</u> :—

संसार की प्रत्येक वस्तु, विचार तथा कार्य के लाभदायक परिणामों को तभी प्राप्त किया जा सकता है । जबकि उनके अपने पूर्ण निश्चित उद्देश्य हों । यही सत्य शोधकार्य के लिये भी लागू होता है । बिना उद्देश्यों को निर्धारित किये कार्य को समुचित एवं सुचारू रूप से आगे बढ़ाना असंभव हो जाता है । उद्देश्य हीन शोधकार्य सागर की लहरों पर उठती गिरती दिशा विहीन नौका के सदृश है । प्रस्तुत शोधप्रबन्ध की सफलता के लिये निम्नांकित उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है ।

1— संप्राप्ति की भिन्नता के कारण समस्याओं पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

2— बुद्धि लब्धि की भिन्नता के कारण समस्याओं पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

3— आयु वर्ग की भिन्नता के कारण समस्याओं पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

4— सामाजिक स्तर की भिन्नता के कारण समस्याओं पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

5— समस्याओं के समाधान हेतु निर्देशन के लिये निर्देशन देना ।

1.7 <u>प्राक्कल्पनाओं</u> :

अनुसंधान की प्रकिया में परिकल्पना एक महत्वपूर्ण स्तम्भ है, शोध विषय के बारे में प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् शोधकर्ता अपने दिमाग में एक ऐसा सिद्धान्त बना लेता है । जिसके बारे में यह कल्पना करता है कि यह सिद्धान्त शायद उनके अनुसंधान का आधार सिद्ध हो सकता है, ऐसे काल्पनिक निष्कर्ष को वह अन्तिम मानकर नहीं चलता है उसकी प्रामाणिकता अपने अनुभव तथा वास्तविक तथ्यों द्वारा सिद्ध करने की कोशिश करता है ।

परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर करता है । यह एक भी हो सकती है लेकिन यदि समस्या सर्वेक्षण प्रकार की है तो अनेक की हो सकती है । यदि समस्या बहुत जटिल अथवा प्रयोगात्मक हो तो एक ही परिकल्पना लेना उपयुक्त होता है । लेकिन तथा मेयर का कहना है "प्राक्कल्पना के अभाव में अनुसंधान एक अनिर्दिष्ट, विचारहीन भटकते राही के समान है, जिसकी उपलब्धियों का स्पष्ट अर्थों वाले तथ्यों में स्थान नहीं दिया जा सकता है । प्राक्कल्पना सिद्धान्त एवं अनुसंधान के बीच एक आवश्यक कड़ी है जो ज्ञान प्राप्त करने में सहायक है ।

**गुडे तथा हेट के अनुसार** – "प्राक्कल्पना इस बात का वर्णन करती है कि हम क्या देखना चाहते हैं । प्राक्कल्पना भविष्य की ओर देखती है । यह एक तर्कपूर्ण वाक्य है जिसकी वैधता की परीक्षा की जाती है । यह सही भी सिद्ध हो सकती है और गलत भी ।"

**यंग के अनुसार** – "उपकल्पना अध्ययन को निश्चायात्मकर्ता प्रदान करती है तथा शोधकार्य में समस्या को उचित ढंग से समायोजित करके उपयुक्त विधियों के निर्धारण से पहले अध्ययन के सभी आधारभूत उद्देश्यों को सामने रखकर शून्य प्राक्कल्पनाओं का निर्माण किया । जिसका तात्पर्य यह है कि जिन दो चरों का सम्बन्ध ज्ञान करने जा रहे हैं उनमें कोई अन्तर नहीं ।"

<u>प्राक्कल्पनायें</u> :

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने निम्न प्राक्कल्पनाओं को अध्ययन का आधार बनाया है ।

1– किशोरावस्था में संप्राप्ति स्तर की भिन्नता का किशोरो की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

2– किशोरावस्था में बुद्धिलब्धि स्तर की भिन्नता का किशोरो की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

3– किशोरावस्था में आयु परिवर्तन का किशोरों की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

4– किशोरावस्था में सामाजिक स्तर की भिन्नता का किशोरों की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

इन चार वैचारिक प्राक्कल्पनाओं को क्रमशः 38 सक्रियात्मक प्राक्कल्पनाओं में विभक्त किया गया है :–

1– <u>वैचारिक प्राक्कल्पना</u> :–

किशोरावस्था में संप्राप्ति स्तर की भिन्नता का किशोरों की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

<u>संक्रियात्मक प्राक्कल्पनायें</u> :

1– किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक एवं सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

2– पूर्व किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक एवं सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अनतर नहीं होता है ।

3– मध्य किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

4– उत्तर किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशारों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

2– **वैचारिक प्राक्कल्पना :**

किशोरावस्था में बुद्धि लब्धि स्तर की भिन्नता का किशोरो की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

**संक्रियात्मक प्राक्कल्पनायें :**

5– किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

6– किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

7– किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

8– पूर्व किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

9– पूर्व किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

10– पूर्व किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

11– मध्य किशोरावस्था में उच्च बुद्धिलब्धि एवं सामान्य बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

12– मध्य किशोरावस्था में उच्च बुद्धिलब्धि एवं निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

13– मध्य किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

14– उत्तर किशोरावस्था में उच्च बुद्धिलब्धि एवं सामान्य बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

15– उत्तर किशोरावस्था में उच्च बुद्धिलब्धि एवं निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

16– उत्तर किशोरावस्था में सामान्य बुद्धिलब्धि एवं निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरो की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

**3– वैचारिक प्राक्कल्पना :**

किशोरावस्था में आयु वर्ग की भिन्नता का किशोरों की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

सक्रियात्मक प्राक्कल्पनायें :

17– किशोरावस्था में पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

18– किशोरावस्था में पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरो की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

19– किशोरावस्था में मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

20– उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

21– उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

22– उच्च संप्राप्ति प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

23– निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

24– निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

25– निम्न संप्राप्ति प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

26– उच्च बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

27– उच्च बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

28– उच्च बुद्धिलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक, सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

29– सामान्य बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरो की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

30– सामान्य बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

31– सामान्य बुद्धिलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सावेंगिक, व्यावसायिक,शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक,सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

32– निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सावेंगिक, व्यावसायिक शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

33– निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सावेंगिक, व्यावसायिक शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

34– निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सावेंगिक, व्यावसायिक शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

**4– वैचारिक प्राक्कल्पना :**

किशोरावस्था में सामाजिक स्तर की भिन्नता का किशोरों की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

**सक्रियात्मक प्राक्कल्पनायें :**

35– किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक सावेंगिक, व्यावसायिक शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

36– पूर्व किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक सावेंगिक, व्यावसायिक शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एव विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

37— मध्य किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक सावेंगिक, व्यावसायिक शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है

38— उत्तर किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक सावेंगिक, व्यावसायिक शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

### 1.8 अध्ययन का औचित्य :

क्या संप्राप्ति, बुद्धिलब्धि, आयु एवं सामाजिक स्तर से समस्यायें प्रभावित होती है ? जब तक इस प्रश्न को बुद्धिमतापूर्वक हल नहीं किया जायेगा । तब तक हम किशोरों के व्यवहारगत परिवर्तन को नहीं समझ सकते और न ही उन्हें दिशा–निर्देश हेतु उचित निर्देशन ही दे सकते हैं, अतः संप्राप्ति स्तर, बुद्धि लब्धि, आयु वर्ग एवं सामाजिक स्तर की भिन्नता का समस्याओं पर क्या प्रभाव पड़ता है इस विषय की जानकारी गहराई से की जानी आवश्यक है । शोधकर्ता की यही अपेक्षा है कि प्रस्तुत शोध किशोरों की समस्याओं के सम्बन्ध में मूल्यवान सूचनाऐं प्रस्तुत करने में सहायक हों । अध्ययन के संभावित प्रश्न जिनका उत्तर मिल सकता है ।

1— संप्राप्ति की भिन्नता किस स्तर तक किन–किन समस्याओं को प्रभावित करती है ।

2— बुद्धिलब्धि की भिन्नता किस स्तर तक किन–किन समस्याओं को प्रभावित करती है ।

3— आयु वर्ग की भिन्नता किस स्तर तक किन–किन समस्याओं को प्रभावित करती है ।

4— सामाजिक स्तर की भिन्नता किस स्तर तक किन–किन समस्याओं को प्रभावित करती है ।

### 1.9 अध्ययन की परिसीमाऐं :

शोधकर्ता ने शोध हेतु कतिपय सीमायें निर्धारित करी है, शोध इन्हीं सीमाओं को ध्यान में रखकर किया जा रहा है –

1— प्रस्तुत अध्ययन में केवल जालौन जिले के किशोरों को ही लिया गया है ।

2— प्रस्तुत अध्ययन में केवल किशोरावस्था को ही अध्ययन का विषय बनाया गया है ।

3— प्रस्तुत अध्ययन में आठ समस्याओं पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत, एवं विलिंगी समस्याओं को ही लिया जा रहा है ।

1.10 निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि शोधकर्ती का अध्ययन, उद्देश्य, औचित्य यही है कि अभी तक ऐसे अनेकों शोध प्रबन्ध हो चुके हैं जिनमें संप्राप्ति पर समस्याओं का प्रभाव अथवा संप्राप्ति स्तर बुद्धिलब्धि एवं आयुवर्ग के मध्य समस्याओं के स्तर का अध्ययन किया गया है । परन्तु अभी तक संप्राप्ति स्तर की भिन्नता, बुद्धिलब्धि की भिन्नता आयु वर्ग की भिन्नता एवं सामाजिक स्तर की भिन्नता भी समस्याओं पर प्रभाव डालती है इस विषय पर शोध का अभाव है । अतः शोधकर्ती अपने अध्ययन द्वारा इस अन्धकार पर भी प्रकाश डालने की चेष्टा कर रही है ।

अध्याय :

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1— | प्रथम अध्याय | : | परिचर आवश्यकता, अध्ययन के उद्देश्य एवं अध्ययन की परिकल्पनायें |
| 2— | द्वितीय अध्याय | : | सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन । |
| 3— | तृतीय अध्याय | : | अनुसंधान विधि एवं आंकड़ों का संग्रह । |
| 4— | चतुर्थ अध्याय | : | प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या । |
| 5— | पंचम अध्याय | : | उपलब्धियों, निष्कर्ष एवं सुझाव । |
| | | : | सन्दर्भ ग्रन्थ सूची, |
| | | : | सारांश |
| | | : | परिशिष्ट |

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1– अग्रवाल एस0के0 : थ्योरी ऑफ एजूकेशन ।

2– विंधम एफ0 एल0 : एलीमेन्ट ऑफ एजूकेशन रिसर्च न्यूयार्क प्रिन्टिस् ।

3– बौलमैन बैंजामिन वी : डिक्शनरी ऑफ विहेविरल साइंस – 1954 अमेरिकन लायब्रेरी एसोसियेशन 1973

4– गुड कार्टरे वी : डिक्शनरी ऑफ एजूकेशन 1959

5– हैविंग हरर्ट आर0जे0 : डवलपमेन्टल टारकस एण्ड एजूकेशन न्यूयार्क लौन्गमन्ग्रीन एण्ड कं0 1952 (संशोधित संस्करण)

6– हर्लोक, एलिजावेथ : एडोलोसेन्ट डवलपमेंट, मेकग्राहिल बुक कं0 न्यूयार्क द्वितीय संस्करण 1954

7– हाल जी0एस0 : 'एडोलोसेन्स' इटस साइकोलॉजी एण्ड इट्स रिलेशन्स टू फिजियोलॉजी, अन्थोपोलॉजी, सोरियोलॉजी, सेक्स, काइम, रिलीजन एण्ड एजूकेशन न्यूयार्क, 1904

8– हॉर्न ए0एच0 : डेमोकेटिक फिलॉसफी आफ एजूकेशन मैकमिलन बुक कम्पनी, न्यूयार्क 1932

9– जैन के0सी0 : गाइडेन्स नीड्स इन स्कूल्स एजूकेशनल ट्रेन्डस अंक 11, 2 जुलाई 1976

10– जरसिल्ड अथारिटी : द साइकोलॉजी ऑफ एलोलेसेन्स मैकमिलन एण्ड कम्पनी 1963

11– जोन्स आर्थर जे : प्रिंसीपल ऑफ गाइडेन्स न्यूयार्क मैक ग्राहिल बुक कम्पनी चतुर्थ संस्करण 1951

12— जायसवाल सीताराम : शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श, विनोद पुस्तक मंदिर आगा, 1990

13— काण्ट ई0 : दी एजूकेशनल थ्योरी ऑफ इम्मेनु अरकांट अनुवादित एवं प्रकाशित एडवर्ड फ्रेंकलिन बकनर के द्वारा

14— मार्येस जी0ई0 : प्रिंसीपलस् एण्ड टैक्नीकस् ऑफ वोकेशनल गाइडेन्स न्यूयार्क मेकग्राहिल बुक कम्पनी 1941

15— पाठक पी0डी0 : शिक्षा, मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 1972

16— नन्दलाल : योजना सितम्बर 87 पंचवर्षीय योजनायें एवं गरीबी

17— शर्मा एन0एन0 : आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान आगरा हरप्रसाद भागर्व , 1973

18— स्टीफेलरी बुफोर्ड एण्ड स्टीवार्ट नोरमैन आर : प्रिंसीपल ऑफ गाइडेन्स 1970 छठों संस्करण

19— स्टप्स एमरी और वालक्रिस्ट जी0एल0 : "प्रिंसीपल एण्ड प्रेक्टिसेज इन गाइडेन्स" न्यूयार्क मैकग्राहिल बुक कम्पनी 1958

20— श्नागरा , एफ स्टेटन : डायनेमिक्स ऑफ एडोलसेन्ट एडजस्टमेन्ट दि मेकमिलिन को0, न्यूयार्क, 1963

21— गैरीसन, सी0 : साइकलोजी ऑफएडोलसेन्ट,ऐंगिल वुड, न्यूयार्क, 1965

22— फ्लेनिंग, सी0एम0 : एडोलसेन्ट : इट्स सोसल साइकॅलाजी, लंदन रूटलेज एण्ड केगन पॉल लिमिटेड, 1948

23— बुच, एम0पी0 (सम्पादक) : सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, ए0एस0ई0, बड़ोदा, 1972

24. Buch M.B. (Editor) : Second Survey Research in Education, New Delhi, 1979.

25. Buch M.B. (Editor) : Third Survey of Research in Education, New Delhi, 1987.

26. Buch M.B. (Editor) : Fourth Survey of Research in Education, New Delhi, 1991.

27. Buch M.B. (Editor) : Fifth Survey of in Education, New Delhi, 1997.

# द्वितीय अध्याय

## सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रकिया में एक महत्वपूर्ण कदम है । शिक्षा के सभी प्रकार के अनुसंधानों में संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण एक अत्याज्य अंग है बिना इसके कोई भी अनुसंधान उच्च स्तर का नहीं हो सकता है । वस्तुतः संबंधित साहित्य का अध्ययन किये बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान है । अन्धेरे में चलाये गये तीर की दिशा निश्चित न होने के कारण यह निश्चित नहीं होता है कि तीर लक्ष्य भेद पायेगा कि नहीं उसी प्रकार से संबंधित साहित्य का अध्ययन किये बिना अनुसंधान की सफलता भी संशय में रहती है । गुड वार एवं स्केटस के अनुसार एक कुशल चिकित्सक के लिये आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंधी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे । उसी प्रकार शिक्षा का जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में नित नवीन संबंधित सूचनाओं व संबंधित क्षेत्र की समस्याओं के बारे में जानकारी एकत्र करता रहे ।

पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अन्तदृष्टि प्राप्त होती है । यह अर्न्तदृष्टि उपकरणों के चयन, अनुसंधान विधि के चयन, समस्या के परिसीमन, समस्या की सुस्पष्ट परिभाषा आदि के बारे में प्राप्त होती है । ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिये आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है । वर्तमान ज्ञान की जानकारी साहित्य के गहन अध्ययन से हो सकती है । इस गहन अध्ययन से अनुसंधानकर्त्री को विद्वता प्राप्त होगी और जिस क्षेत्र में उसने अपना अनुसंधान विषय चुना है वह उस क्षेत्र का विशेषज्ञ बन सकता है । यह विशेषता उच्चकोटि के अनुसंधान के लिये आवश्यक है ।

के0एफ0 रमल ने लिखा है कि नियमानुसार कोई भी शोध संबंधित लिखित विवरण तब तक उपयुक्त नहीं समझा जाता । जब तक उस शोध से संबंधित साहित्य का आधार उस विवरण में न हो ।

शोधकर्त्री ने संबंधित साहित्य का अध्ययन निम्नवत् रूप में किया है :–

2.1.1 Boulon-Diaz, Frances, Ph.D. Temple University, 1992 The effects of intelligence, social class, early development and pre-school experience on school achievement of Pureto Rican Children.

This study explored the effects of seven independent variableds on school achievement of normal Puerto Rican Public School children with the following research question :

How do intelligence, social class, early motor and language development, pre school experience, gender and composition of household contribute to school achievement of pre- teenage children in Puerto Rican Public Schools ? Grade Point Average (GPA) was the dependent measure of achievement.

The subject were 65 children aged 9 to 11 years, studying in grades four to six, at seven urban public schools. They belonged to the sample of 2,200 children selected for adapting the Weschler Intelligence Scale for Children Revised (WISC-R) for the Puerto Rican population. The demographic characteristics, developmental milestones and other measures of this sample present similar, trends to those of the complete standardization group.

Intelligence was measured with the WISC-R Puerto Rico. Parents completed a General Information Questionnaire which provided data on development, family background, and school experience.

Multiple regression analyses showed that IQ (Beta = .66) and Social Class (Beta = .30) explained half of the variance in GPA (Adjusted R= .49). Pearson r's between GPA and Social Class (.40) and GPA and IQ (.66) were significant at the .01 level. When boys and girls were compared, parental characteristic and social factors had an impact on boys 'GPA and IQ that was not observed for the girls.

The salient influence of social class on school achievement raises concerns about the possibilities of the lower class to achieve significant participation and use of the communities ' opportunities for advancement in society. School performance of girls seemed less dependent on social family influence than the performance of boys. These differences need to be explored more directly with a larger sample.

<u>2.12</u> Serebreni, Riqua Russell, Ed. University of Arkansas,1992.

A study of the relationship between personality factors and achievment in the college student with learning disability.

The increasing numbers of students with learning disabilities (LD) are enrolling in programs of higher education and present concerns that college and universities must address if they are to provide accessible and effective programs for this population.

Research concerned with the achievment of the LD college student is sparse A wealth of research and secondary level students with learning disabilities as well as that which addresses various methods which have been used to help these students learn. Few studies have been done explore personality characteristics of students with learning disabilities. No studies were found which have investigated the relationship between and the achievment of students with learning disabilities.

Subject were 103 LD students at the University of Arkansas. Sex, age, race, degree, program, or year in college were not controlled. Data, consisting of intelligence, achievment, and personality scores, were and in investigating personality and its relationship to achievment.

Results showed that the Ld college student differs significantly from the 16PF Questionnaire undergraduate norm group on eight personality factors. Four personality factors measured by the 16 PF Questionnaire, Form A, were moderately related to achievement of the LD college student. Achievement was measured by the ACT or equivalence scores and/ or high school grade point average. Personality factors were not significantly related to college grade point average. Five LD subtypes were identified with in the total L.D. population of the study. While the types differed significantly on several aspects of intelligence and action achievment, they did not differ significantly on college achievement.

2.1.3 Aselting, Robert Hall, Jr. Ph.D. The University of Michigan, 1992.

The impact of personal divorce on adolescents.

This study examines the long and short term effects of parental separation and divorce on several indicators of adolescent adjustment using data from a longitudinal survey of 1208 high school students in the Boston metropolitals area. Results show that parental marital disruption is weakly associated with emotional problems, and is strongly associated with behavioural problems and poor school performanc. Differences in adjustment bythe recency of the divorce are observed, as separation with in the past years is strongly predictive of emotional problems, and separation or divorce prior to the past year is

associated with problems of undercontrol and poor school performance. Consistent with gender differences in socialization, sex-specific patterns to tch expression of distress following parental divorce are observed.Girls are more apt to experience emotional problems following recent divorce, while boys more behavioural problem to experience in responce to earlier. Class difference in divorce effects are also observed, as youths from higher socio economic contexts are more emotionally troubled by recent divorce, and youths from lower socioeconomic contexts exhibit poorer behavioural adjustment to earlier divorce.

Several hypothesized mechanism of divorce effects are examined, including the explanatory role of prior standard of living and degree of interparental conflict, and the mediating influence post-divorce parent-child relations, friend relations, parental monitoring, negative life changes, and remarriage. The failure of these explanatory and mediating factors to account for the emotional effects of recent divorce suggest further research on the content of children's short term separation responses. Analyses of the long term consequences of divorce show that parental remarriage is generally beneficial, although youths in higher socioeconomic contexts exhibit better emotional functioningin singleparent families. Post-divorce life circumstances completely account for the effects of distant divorce on emotional problems and substantially reduce differences in behavioural problems and school performance. This is due primarily to the mediating influence of negative life changes involving self and family.The preponderance of negative events among children of divorce is tied to disruptions in the home environment, which interfere with children's socialization.

**2.1.4** Hagen , Jeananne Reister, Ph.D. Iowa State University, 1992. The influence of demographic, achievement and socioeconomic factors on proportions of students with disabilities.

This research study examined the relationship between demographic achievement, and socioeconomic factors and differences in proportions of students served in special education in school districts and intermediateeducation agencies (AEAs) in Iowa. Vast differences were found in the proportions of students being served in special education programs ranging from 3% to 17% of school district populations. Four research questions were addressed in the study : (a) Are demographic, achievement, and socioeconomic factors related to the proportion of students served in special education in school districts? (b) Are demographic, achievement, and socioeconomic factors related to the proportions of students served in special education in area education agencies (AEAs)? Is the relationship between demographic, achievement and socioeconomic characteristics and the proportion of students with severe disabilities different from the relationship of these same factors and the proportion of students with mild / moderate disabilities ? (d) Can a procedure be developed that would assist in predicting the proportion of school district's population that should be served in special education ?

The specific measures of demographic, achievement, and socioeconomic characteristics used in the study were: district size, population density, pupil-teacher ratios, percentage of adults lacking high school diplomas, Iowa Test of Basic Skills scores, average gross income, property values, and percentage of students recieving free and reduced price lunches.

Althogh significant cor elations were found between six of the eight variables and the proportion of students in special education, the confirmed relationship of all these variables accounted for only 17% of the variance in proportions of students. Relationships among the variables to proportions of special education students appeared highly idiosyncratic in the AEA analysis with no observable pattern identified. Four of the eight factors cor elated more strongly with porportions of students served in programms for severely disabled than proportions of students served in programs for severely disabled. A prediction equation was developed to determine the proportion of who should be served in special education in each school district in Iowa based on demographic, achievement and socioeconomic variables.

Findings in this study were consistent with prior research suggesting relationship between the variables tested and proportions of students in special education. However, results would indicate that the relationship between the variables and the proportions of students in special education were not of magnitude that would justify the current range in proportions of special education students. Further analysis in the form of case studies at the school district and building level is needed in order to more fully understand the present variation among schools as districts in the proportions of students in special education.

2.1.5. Wong, Edward, G.Ph.D. The University of Akron, 1991.

An investigation of home, school, and religious factors that relate to achievement of hispanic space and twelfth-graders in the United States.

The purpose of this study was designed to investigate various factors in the lives of Hispanic students that may have an influence on their school achievement and on their attitude towards school.

Specifically, the research focused on certain factor in the make up of the students ' home life, participation in an preparation for school and in their religious lives that might be predictors of achievement in or attitude toward school.

This study investigated the possible relationship between home school and religious factors and achievement of 2,721 selected. Hispanic high school sophomores and seniors. Scores on a standardized vocabulary, reading, and math test were used as measures of achievement.

Multiple linear regression was used to test each of the four general and 18 specific research hypotheses. Statistical significance was determined by the use of the F test at the .05 alpha level. Each hypothesis was also analyzed for practical significance. The Scheffe formula was utilized as a correction of multiple comparisons.

This investigation used a major national data set collected in 1980 by the National Opinion Research Center and titled High-School and Beyond (HSB). Two instruments were used to collect information about 58,270 sophomores and seniors enrolled in 1,015 public and private high schools across the United states. Instruments number one was HSB Student Survey, while the other was the HSB Student Test Battery. The HSB Survey also contained an over- sampling of the Hispanic subgroups, which allowed for a more comprehensive investigation and analysis of the educational outcomes for Hispanic students. From the total sample realized, this investigation included 2,721 students who identified themselves as Hispanic in this research study.

The knowledge of possessions in your home : (a place to study, daily newspaper, encyclopedia, typewriter, books, room of your own,

and a calculator) turned out to be negatively related to achievement scores. The greater the number of possessions in the home, the lower the achievement test score. Finds also indicated that the number of completed courses in high school Mathematics, English or Literature, Science and remedial or advanced courses was predictive of acheivement scores.

2.1.6 Pusatere-McKenna, Carol, Ph.D. University of Pittsburgh, 1991. Stress-reated variables and the academic achievement of elementry school students.

This study examined the variables of gender, stressful life events, behavioural adjustment, and socioeconomic status (SES) as predictors of academic achievement. Also of interest was the relationship among each of the variables.

The parents of 184 children in grades 3 and 4 from two schools responded to a survey with questionnaries about SES and the stressful life events experienced by their child since birth. The child's reading teacher completed a rating form on each child to measure hebavioural adjustment in school. Test scores in reading and math from a group administered test were obtained from the school records.

The data were analyzed using the total samples, and then splitting it into two smaller samples with considerable differences in SES. For the total sample, significant correlations were found among most of the variables with each other, and with reading and math. Multiple regression and stepwise regression showed that all four factors contributed to reading, and that SES and behavioural adjustment contributed to math. However, the amount of variance accounted for by each of the variables was relatively low. Therefore,

there was not strong support for an association among any of the individual variables and achievement for the total sample.

When the sample was split between the schools, multiple regression analyses in the school with a lower SES population indicated that the four variables did account for a measurable amount of variance with achievement. Stepwise analyses indicated that the best variable to predict reading or math achievement was behavioural adjustment. Moreover, these findings suggest that the relationship among stressful life events, gender, behavioural adjustment, and achievement becomes clearer as the SES of the family decreases.

2.1.7 Ciampa, Diange, The University of Michigan, 1990.265pp.
Adolescent life events, perception, and relationship to risk behaviour.

Seven hundred and twenty nine senior high school students were surveyed to determine their level of participation in nine risk behaviours. The behaviours were : (1) not using seat belts, (2) riding with a drinking driver, (3) speeding, (4) drinking and driving (5) smoking,(6) use of over the counter drugs (7) marijuana, (8) use of cocaine or other hard drugs , (9) use of alcohal. The students were also asked to respond to a list of fourty-five life events, which included : death of a parent, moving, failing a class, getting drivers licence, outstanding personal achievement, parent's divorce, getting stopped by the police, change in physical appearance etc., by indicating which of these events they had experienced. In addition, they were asked to give their perception of how the event would impact them.

Teens who experienced a greater number of life events reported higher levels of involvement in risk behaviour than their peers who experienced fewer life events. Deviance events were significantly related to all nine of the risk behaviours, and failure events to eight of

the nine. Autonomy events were inversely related to risk behaviour, as students experiencing a higher number of these events reported less involvement in all of the nine risk behaviours.

Gender was a significant factor in the perception of life events with female assigning higher scores to thirty-four of the thirty- five life events.

2.1.8 Kwa, Lydia Woon -Ai, Ph.D. Queen's University at Kingston (Canada), 1990.

Perceptions of parents, teachers and adolescent of commpetence and depressive behaviours.

One of the primary concerns in current research on depression in childhood and adolescence has to do with definition. The degree of interest in and acknowledgement of the depression phenomenon in childhood and adolescence was minimal until the late 1970s. Recent research interest have ranged from an emphasis on incorporating a developmental perspective to focussing on psychometric issues. This study required a sample of grade seven and eight students, their parents and teachers to complete questionnaires on the adolescents' psychological functioning. The two main foci of the research were (1) the degree of correspondence between reports obtained from rates; and (2) the relationships of depression and competence variables for each group of raters. Using Campbell and Fiske's (1959) multimethod approach, low convergent validity was found for the domains of depression and physical appearance. The significant relationship between physical appearence and depression for adolescents was also significantly greater than that same correlation obtained for parent's scores, and suggests the important place of physical self-concept and body image in relation to adolescents' reports of depression. A

principal components analysis of all the depression and competence scores yielded six components, three of which were behavioural conduct, athletic competence and scholastic competence. The other three components each loaded on parents', teachers', or adolescents' scores of social acceptance, physical appearance and depression. Stepwise mutiple regression analyses- done separately for parents, teachers and adolescents- used components from a principal components analysis of competence scores as statistical predictors for depression. It was found that the performance component - behavioural conduct and scholastic component was more important for parents and teachers and male adolescents than the peer/ interpersonal component, which consisted of scores on social acceptance, physical appearance and athletic competence, For female adolescents, the peer component was more important.

Although some constraints exist in generalizing to other populations, the results were consistent with previous research, and reflect the different interpretations of parents, teachers and adolescents of depressive behaviours and their connection to competence issues for adolescents. This thesis proposes that low convergent and discriminant validities, especially for depression and physical appearence, could be alternatively interpreted as evidence of schemata of value systems unique to parents, teachers and adolescents; that perceptions of psychological functioning proceed from different notion of what constitutes mental health.

2.1.9 Acker, Haskell Brewington, Ph.D Georgia State University- College of Education, 1990.

Depression, learning disabilities and social competence in prepubertal children.

Purpose. The basic dimensions of childhood depression have been revealed through research with in the past 25 years. However, diverse classification systems, varied diagnostic approaches, and inconsistent prevalence rates reflect a lack of consensus regarding the nature of depression in children. The purpose of this study were to investigate the prevelance of childhood among learning disabled students in public school setting, evaluate the correlation between a self report and diagnostic interview schedule as well as the correlations between measures of childhood depression and a measure of social competence.

Methods. The sample for this study consisted of 96 4th and 5th grade children, balanced in terms race, gender, and placement in two categories : self-contained learning disabilities classrooms and general education classrooms.

Subjects were administered the Children's Depression Inventory (CDI) and the Children's Rating Scale Revised (CDRS-R). Subjects were also related on social competence with the Corners Teacher's Rating Scale (CTRS).

Three-way analyses of varience examined differences in scores on the CDI as well as the CDRS-R with respect to school placement, gender, and race. Pearson product moment correlation procedures assessed the strength of the relationship between the CDI and the CDRS-R, and the CDI and the CTRS, and the CDRS-R and the CTRS.

Results. Analysis of data revealed significant differences in the severity of depression between learning disabled and normal children with respect to CDI scores but not with respect to CDRS-R scores. Results did not reveal to CDI scores but not with respect TO CDRS-R scores. Results did not reveal significant differences with respect to

race or gender. Positive correlations were found between scores of the CDI and the CTRS, and the CDRS-R and the CTRS.

**Conclusions :**

The results of the study suggest that there tend to be differences in sympton severity between learning disabled and normal children and that race and gender are not significant contributors to those differences. Findings provide continuing documentation that deficits in social functioning appear positively correlated with depression in children. The study illustrates the importance of distinguishing between sympton, syndrome, and disorder with respect to childhood depression. Findings suggest that learning disabled children in public schools exhibit mild to moderate symptons of depression, which is in contrast to research indicating that institutionalized learning disabled children exhibit severe depressive symptomatology.

2.1.10 Tucker, Elizabeth Parke, Ph.D.Kenl. State University,1990.

A retrospective study of the aptitudes, behaviours, intellence, and achievement patterns for three groups of special education students.

The purpose of this study was twofold: (1) to study retrospective the results of two group measurements (the Primary Mental Abilities test and the Iowa test of Basic Skills), the Wide Range Achievement Test, and one behavioural rating scale, the Devereux Elementry School Behaviour Rating Scale and their usefulness to the "Up-Front" team ( in intervention assistance team) in making suggestions for interventive and/or referrral for a multifactored assessment, and (2) to study the relationship and/or implications of these other measurement results to achievement results of the ITBS in grade three and to the results of the Wechsler Intelligence Scale for Children-Revised (WISC-R) given at the initial assessment of children who were then

placed in LD,SBH, or DH groups. The study too was to help define patterns in complexity (heterogeniety) of students with special education placement.

Data was recorded from the group test scores and individual assessment records for all fifth grade students with learning disabilities (LD) severe behavioural handicaps (SBH) or developmental handicap (DH) in nine of twelve school districts in Mahoning County in the school year 1985-86 and 1986-87. A total of 169 males and 62 females were in the entire pool of 231. Ages represented were from 9 years 11 months to 12 years 3 months. The learning disabled sample consisted of 197 children 146 males and 51 females. The developmentally handicapped sample contained 26 children; 17 males and 9 females. The severe behaviour handicapped sample contained 8 children; 6 males and 2 females.

This study lends support to the usefulness of the meaningful interpretation of the results of the group aptitude and achievement test scores and of the factor scores obtained from the Devereux Elementry School Behaviour Rating Scale to the "Up-Front" (intervention assistance) team as it considers interventions and/or a multi-factored assessment for children who are referred with in the school setting because of academic problems.

<u>2.2.1</u> Dotan, Niva Ben-Sar, Ph.D. University of California, Berkely, 1990.

The relationship between childhood depression and school achievement.

The purpose of this study was to investigate the relationship between childhood depression and school achievement and with a group of children who scored high on the depression measures used, to

compare the groups of high and low achievers in an attempt to identify variables associated with the differences between them. The results of this exploratory study were related to the theoretical models developed to explain chilhood depression and examined in turn for evidence in support for one or more of them.

Using scores on the Child Depression Inventory, the Peer Nomination Scale for Depression and teacher rating, 32 students from grades 3rd, 4th, and 5th were selected to participate in the control group. Using the scores on the California Tests of Basic Skills two subgroups were formed in each of the depressed and control samples : Those who scored high constituted the high achieving groups and those who scored low constituted the low achievers groups. These four groups were contrasted on measures of congnitive functioning, attributional style, temperament scores, a behaviour rating scale and the number of days absent and/or tardy since the begining of the year.

The results showed that there were significant differences between the depressed and control groups on most of the measures used. Low school achievement as measured by scores on the California Tests of Basic Achievement was present in 68% of the depressed sample, but in only 27% of the control sample.

Results on a two factor ANOVA revealed that the differences between the four groups on the congnitive and achievement variables were associated with the achievement level factor. Most of the measures of behavioural and emotional functioning and the temperament trait of mood are associated with the factor of depression/nondepression. The temperament trait of mood also showed a significant interaction between the two main effects (depression/control and low/high achievement). The relationship

between an early tendency to modiness and depression in childhood as well as the possible effect of modiness on academic achievement was discussed and suggested for future research.

2.2.2 Diachuk, Christopher Michael Paul, Ph.D. University of Albrla (Canada),1990.

Children as behaviour change agents : The ecological effects of a peer-mediated intervention on the problem behaviour of six behaviour-disordered elementry school pupils.

This study was designed to investigate the effects of several behaviour management strategies in modifying inappropriate behaviour and fostering appropriate ones, in elementry school boys placed in a self contained classroom for behaviour dis-ordered children.

The experimental subjects of the study consisted of six boys identified by the school system as having behaviour dis-ordered severe enough to warrant placement in a self-contained special education classroom for one year. The independent variables consisted of a teacher-directed peer confrontation approach devised by Bellafiore and Salend (1983) and four specific techniques for establishing ecological home-school link ages. The ecological model of behaviour dis-orders provided the conceptual framework for applying the intervention stratagies.

Instruments used in this multiple baseline across subjects design included the Child Behaviour Checklist, the Behaviour Rating Porfile, the Child Home, School and Community Checklists, the Life Event Scale-Children and a family-school relationship pattern measure.

Analysis of the data was both quantitative, to determine the statistical significane of baseline, intervention and followup score

differences in the behavioural measures used, and qualitative, to describe the therapeutic significance of changes observed in various ecological settings. Three hypotheses related to problem behaviour, the keyvariable of concern, were tested. In addition, this investigation briefly examined four exploratory variables, stressful life events, self-perceptions of problem behaviour and peer relationships.

Data analysis revealed that Hypothesis 1, which predicated a significant reduction in school problem behaviours, as well as Hypothesis 2 which predicted a significant decrease in home problem behaviours, were confirmed. Hypothesis 3, which predicted a significant reduction in community problem behaviours, was also confirmed. Both quantitatively and qualitatively, the data revealed that the intervention strategies were effective in significantly reducing the number of problem behaviours that the target subjects exhibited and that the effects generalized to other ecological settings during the 17 week intervention period.

The results of the investigation are discussed with reference to the efficacy of the strategies used and the ecological model of behaviour dis-orders. Implications for theory, research and practice suggestions for classroom management for behaviour disordered children.

<u>2.2.3</u> Watts, Karen M.Ed.D. University of Maine, 1990.

The impact of stepfamilies on adolescent academic achievement.

The purpose of this investigation was to test a conceptual model of the effects family configuration on the academic achievement of adolescents. Two familial dichotomies were contrasted : non-divorced families versus pooled stepfamilies and stepmother versus stepfather families.

The study was designed to fill some of the voids currently reported in the stepfamily literature. Specifically, this study was based on the High School and Beyond (HSB) longitudinal data set. HSB is a large, nationally representative database of approximately 58,728 high school students from 1,016 high school across the U.S. For the purpose of this study, the 1980 sophomore cohort was used. Listwise deletion of this study, the 1980 sophomore cohort was used. Listwise deletion of cases yielded 9,057 students (4,873 females and 3,184 males) who had complete data on all nine variables contained in the model).

A conceptual model of the family configuration on academic achievement was tested using path analysis. In addition to family configuration, the model included race, socioeconomic status, verbal ability, parental involvement, self-concept, academic orientation, and educational aspirations. Findings suggested that whether one was from a non-divorced, stepmother, or stepfather family had no direct or indirect effect on his or her academic achievement in high school. Rather, achievement was determined previously by verbal ability and educational aspirations. However, the total effect of family configuration (.06)--- the combination of direct and indirect effect-did exceed Pedhazur's (1982) criterion for meaningfulness (.05). Implications of the findings are discussed for school and family practitioners, coupled with recommendations for future stepfamily research.

2.2.4. White head, Deborah Ann, Ph.D East Teas State University.
1990.

An investigation of parent-adolescent relationships and academic achievement from the perspective of attachment theory.

**Purpose of the study** :-

The main purpose of the present study was to investigate the relationship between parent-adolescent attachment and academic achievement. An attempt was made to measure the five dimensions of attachment, to determine their relationship to the quality of parent-adolescent attachment,and to determine their relative contribution of overall quality of attachment, to four measures of academic achievement : grade point average, perception of teacher interactions, academic self-concept, and study habits.

**Procedure** :-

The subjects were 134 senior high school students from North Centre Texas. They completed several self-report questionnaires and a demographic data card. Their grade point averages were obtained from the school counselor.

**Results** :-

The data was analysed using four stepwise multiple regressions.The best predictors of grade point average were the variabler intellectual-cultural orientation and parent availability. For teacher interaction, the best predictor was parent-adolescent attachment. For academic self-concept the best predictor variables for study habit scores were parent-adolescent attachment, parent availability, and intellectual-cultural orientation.

The results of a Pearson product moment correlation coefficient revealed that all but two measures of the five dimensions of attachment correlated significantly with the overall measurement of attachment. The two exceptions were the Independence subscale of the Family Environment Scale and the Achievement Orientation subscale of the Family Environment Scale.

**Conclusion** :-

It was concluded that parent-adolescent attachment was relatively unimportant to adolescent academic achievement. Only a small portion ( less than 30 percent ) of the variance in academic was accounted for by any combination of the independent variables in the present study. Therefore, other factors not measured in the study must contribute more to the variance in acdemic achievement in the population studied. The implications for attachment theory, limitations of the present study, and dirrections for study, and directions for future research were discussed.

2.2.5 Schneider, Steven Craig, Ph.D. Texas A&M University, 1990.
The relation of parenting styles and family environmental components to school performance.

The purpose of this research was to determine wheather a predictive relationship exists between family environment variables and parenting style variables and whether either is predictive of school performance. The ten components descriptive of family environment were cohesion, expressiveness, conflict, independence, achievement orientation, intellectual-cultural orientation, active-recreational orientation, moral religious emphasis, organization, and control. Parenting style variables evident in the home were classified as authoritarian, authoritative, or permissive. School outcome variables measured were grade point average, absences, conflicts with authority, and achievement.The subject for the study were 207 adolescents from grades 9 through 12, randomly selected from a high school population of 1300. Subjects were asked to complete a questionnaire dealing with their situation at home and at school as it currently existed. The survey called for responses to demographic information, to a set of questions

used to classify the style of parenting used in their home, and to the Family Environment Scale whcih is a measure of quality of family of origin environment.

The results of the study supported the existence of a concomitant relationship between family environment and school outcome variables. Grade point average was significantly related to independence, achievement orientation, and intelectual -cultural orientation; attendence was significantly related to achievement orientation; and conflict at school was significantly related to the lack of moral -religious emphasis. With regard to pridicting grade point average, achievement orientation in the home was most predictive of the ten environment components. However, the ability of family environmental factors to predict attendence pattern, school conflict, or academic achievement was not shown to be significant.

Finally, in terms of the ability of parenting style to predict school outcomes, authoritarian parenting was shown to be predictive of grade point average; authoritative and permissive parenting styles were shown to be predictive of attendence patterns; but, none of the parenting styles were shown to be significant predictors of either conflicts with authority or achievement.

2.2.6. Evans, Steven Wayne, Ph.D. Case Westorn Reserve University, 1990.

Attributions, means- end problem solving and aggresive boys; The role of intelligence.

Peer rejected and aggresive elementry school age boys have been the focus of much current research. This population is at significant risk for continued mental health difficulties into adulthood. In an attempt to define the social cognitive process which may

contribute to the aggresive and rejected nature of these children, researchers have uncovered two social cognitive processes which appear to operate differently in aggresive/ rejected boys as compared to their nonaggresive/nonrejected peers. These two areas are attributions and menas-end problem solving. The two studies described in this paper examine these two processes and attempt to better define their potential influence on te behavioural differences these two groups. These studies place a special emphasis on the role of intelligence in these processes and group differences.

Results of the first study indicate that the attributional biases found in aggresive/rejected boys are partly a function of intelligence. The hypothesis was put forth that the abilityto reason from past experiences and predict the motivations of others' actions is related to intelligence. Therefore since aggresive/ rejected boys are reported to be the targets of considerble peer hostility, it was predictive that the more intelligent aggresive/rejected boys would demonstrate a greater hostile bias than the less intelligent boys. The result are consistent with that prediction however future studies are needed before completely accepting the hypothesis.

The second study review a variety of scoring methods for a commonly used methods for a commonly used method of testing means - end problem solving with aggresive/rejected boys. Previous studies indicate that qualitative scoring techniques are more effective with this population than quantitative techniques in predicting aggresion and social with drawl in eight to eleven year old boys. This study noted the previous findings which indicated that the effectiveness of these techniques should be considered after controlling for

intelligence. Both techniques used in this study were found to predict aggresive and withdrawn behaviour after cotrolling for intelligence.

2.2.7 Fox, Douglas Leo, Ph.D. University of Minnesota, 1990

The relationship between personality factors, preference of goal structure and actual academic achievement of university students.

This study investigated the relationships between personality factors, goal structure preference and academic achievement of 180 university students. The Personal Reactions Inventory was used to ontain measures of three personality traits: dominance, extraversion and defensiveness. The Social Interdependence Scale was used to measure preference for competitive, cooperative and individualistic goal structures. Predominant goal structure used as a measure of academic achievement. Results of the study suggested that students scoring high on extraversion preferred, and earned higher grades in, cooperative goal structured courses. However,they did not significantly prefer competitive over cooperative goal structuring, and did not earn significantly higher grades on competitive versus cooperative goal structured courses. High scores on defensiveness were not significantly related to preference for, or grades earned in, individualistic goal structured courses. Infact, students scoring high on defensiveness actually preferred cooperative and competative goal structuring and achieved higher grades in cooperative goal structuring and achieved higher grades in cooperative goal structured courses.

2.2.8 Samules, Susan Kaufman, Ph.D. The University of Connecticut, 1990 145 pp. Major Advisor. Richard Bloomer. The relationship of gender, achievement, and parent attitude to students' attitude toward school. Samuels,

The purpose of this study was to determine the extent to which student attitudes towards school could be explained by the set of demographic (gender), cognitive (academic acheivement), and family/environmental (parent attitudes) variables.

A sample of 313 students in grades 3-8 was drawn from six public schools in a subarban Connecticut town. California Achievement Test scores were obtained from the school records. Students were administered the school Sentiment Index(SSI) during the school day. The Primary SSI was used for grade 3 students; the Intermediate SSI was administered to grade 4-6 students; and the Secondary SSI was given to student in grades 7-8.

Parents of the students in the sample were sent a 17- item questionnaire by mail. Items from two subscales of the States of Connecticut Parent Attitude Towards School Effectiveness (PATSE) scale comprised the parent questionnaire (School/Community Relationships and High Expectations). The return rate was 64%, or 199 parent surveys.

Data were analysed using stepwise and forced - entry, hierarchical multiple regression at each level of the School Sentiment Index.

Results indicated that student attitudes towards school could not be predicted by the set of variables. No variables entered the stepwise regression procedure at either the primary, intermediate, or secondry levels. Forcing the variables into the hierarchical regressions, one at a time, did not produce significant multiple correlations at any of the three levels.

Z-scores were computed for all student attitude raw scores, and the data were then analysed across grades. Since all students in grades

3 through 8 were included in one analysis, "grade" was entered as a fifth predictor. Despite combining students into a larger sample, the stepwise and hierarchical multilpe regression did not yield significant results. This investigation supported previous studies which found no relationship between attitude and achievement. It did not however, support the majority of studies which found significant gender diferences with respect to student attitude. The inclusion of parent attitudes as exploratory variable did not add to the prediction, and further, showed no meaningful relationship between parents' attitude and their students' attitudes toward school.

2.2.9 Fraleigh, Michael J. Ph.D. Stanford University, 1990. 347 pp. Adviser: Sanford M. Dornbush.

The relationship between family structure and academic achievement among adolescents.

The relationship between family structure and the acdemic achievement of children has emerged as an area of central concern in the sociology of the family and sociology of education literatures. While a grade deal of this research has focused upon the achievement of grade school children, relatively little attention has been paid to adolescent achievement, and even fewer studies have later academic achievement.

Using a detailed taxonomy of family composition and retrospective data which span the entire life of the adolescent, the research presented examines the relationship between changes in family structure and the academic achievement of adolescents as measured by high school grades Compared to each alternative family form, adolescents who have two natural parents in the home tend to be

more academically successful. Only small differences are found among the various single parent and step parent categories.

Looking at the relationship between family structure and achievement for each of four racial/ethnic categories reveals that the strongest differences are found with in the White and Asian Subsamples. By comparison, relatively little differnces in grade point average is found across the various family forms among Black and Hispanic adolescents.

The second part of the analysis develops structual equation models which include additional home background variables. In general, the impact of family structure is found to operate almost entirely through parental educational and family income, mainly parential education. Again, important differences are found across racial/ethnic categories.

Finally, analyses based upon retrospective longitudional data reveal a positive, linear correlation between the social/developmental stage of the child at the time of first family disruption and high school grades. In general, the older the child at the time of family diruption, the higher the grades in high school.

<u>2.2.10</u> Price,Rosemary P.h.D. University of Southern California 1989. Adolescent academic achievement in relation to temperament, gender and parental divorce.

Tempramment, measured by grade-point average (GPA), were assessed in 62 community college students, half of who were form divorced families and half from intact families. Subjects were matched on gender, ethnicity, and socioeconomic status. GPA (obtained from high school transcripts) was measured one year before and one year after parental divorce. After controlling for initial GPA, final GPA was

found to be significant relation to parental divorce and adolescent gender. A downturn was observed in ....... GPA in subjects from divorced homes, particularly in the males. Academic achievement bore only a slight relationship o temperament, with some indication that adolescents who were most irregular in eating, sleeping, and daily habits patterns had the highest GPA. (Copies Available Exclusively from Micrographics Department, Doheny Library, USC, Los Angles,CA 90089-0182.)

**2.3.1.** Gross, Miraca Una Murdoch, Ph.D. Purdue University, 1989. Children of exceptional intellectual potential: Their origin and development. (Volumes I and II)

This dissertion reports on the first two years of a longitudinal study of the intellectual, academic, social and emotional development of 31 Australian children, aged 5-13 years, who have scored at or above IQ 160 on the Stanford-Binet Intelligence Test (L-M). Fifteen children were selected for intensive study during the years 1987-1989.

As this is the first such study conducted in Australia, research has been theory developmental rather than theory confirmatory. Findings of the study have been compared to the findings of the very few previous studies of exceptionally gifted children, which originate from North America and Europe.

The academic attainment levels of the subjects have been assessed through standardized achievement tests in elementary school subjects areas. Self-esteem has been measured with the Coopersmith Self -Esteem Inventory (SEI) (Coopersmith, 1981) and moral development with the Defining Issues Test (DIT) (Rest, 1986). Information on the children's early development, family history, school history and attitude to school, reading development and reading

interests, hobbies, and play preferences has been compiled through the use of questionnaires, and through regular taped interviews with the children's parents and the children themselves.

The children displayed remarkable precocity in the development of speech, movement and reading. The majority entered school with the academic achievement levels of children several years their senior. Generally, the schools have failed to make an adequate responce.The considerable majority are working, in school, several years below their tested achievement level. There is a high incidence of under achievement for peer acceptance; neverthless the majority experience moderate to severe degrees of social isolation. Social and general self-system are significantly higher among those who have been radically accelerated.

A miniority of the subjects have experienced exmplary educational programs, and these are discussed and analyzed, as are examples of inadequate curriculum design and in appropriate grade placement. This study reinforces the recommendations of previous researchers that exceptionally and profoundly gifted children require an educational program significantly differentiated from that which would be appropriate for moderately gifted age -peers.

2.3.2 Addes, Bina Gold barten, Ed.D. University of Massachusetts, 1988.

The relationship between family cohension and adaptability and children's academic performance.

This study, using a family systems perspective, investigated the relationship between parental involvement and children's academic performance. More specifically, the study explored the relationship between family patterns of cohension and adaptability and children's

academic performance in reading and arithmetic. Fmily satisfaction and certain parental behaviors pertaining to education were also examined in relation to their effect on academic performance.

A cross - sectional sample of 79 sixth graders were placed in one of three reading and arithmetic groups ( overchievers, on level, underachievers) according to their scores on the Comprehensive Tests of Basic Skills (CTBS). Each child completed the Family Adaptability and Cohension Evaluation Scales (FACES) and the Family Satisfaction Scale. Oner parent from each family also completed the above questionnaire and a Demographic Form.

It was hypothesized that families who functioned in the balanced areas on the variables of cohesion and adaptability would have children who performed onmor above grade level in reading and arithmetic. The results indicated that there was no significant relationship between these family characteristics and children's academic performance. The homogeneity of the sample, in term of class and educational background, with its leaning toward high achieveing children is a possible explanation of the result.

Family satisfaction was examined as a measure for assessing family functioning from the subject's perspective. High family satisfaction was hypothesized to be related to academic achievement. This relationship was not statistically supported, although a trend in the expected direction was reported.

Some significant findings were reported between parental educational attitudes and behaviours and children's academic performance. In the reading (correlated with aptitude) group, the parents of the overachievers were statistically the most satisfied with their children's education. This finding was predicted. However,

contrary to prediction, the parents of children in the lowest reading group (grade equivalent only) and in both arithmetic groups (grade equivalent ad achievement corelated with aptitude) were the most satisfied with the quality of their children's education. These unexpected results are thought to reflect the quality of educational services provided with in the participating school district.

2.3.3 Nasseh, Arshidokht Arshi, Ph.D. George Peabody College for Teachers of Vanderbilt University, 1988.

Comparison of intelligence and achievement levels of Laotion and American fourth-grade students in four schools with an ESL/bil-ingual program.

The recent influx of immigrants and refugees into the United States from around the world, especially from Indochina, has significantly increased nationwide enrollment in public schools of children whose primary language is not English. Limited English proficiency (LEP) students generallyhave been shown to be several years behind other students on standardized achievement and intelligence tests, resulting in an increasing number of LEP students being placed in special education and eventually dropping out of school.

The purpose of this study was to determine whether an IQ differential existed between Laotion and American students on two language free, culture-fair measures of intelligence. Additionaly, the IQ scores on a standardized achievement test, with special attention to reading, language arts, mathematics, and science. A group of 21 Laotion LEP students and a group of 21 American students enrolled in the same ESL/billingual elementary schools were administered Raven's Coloured Progressive Matriçes (SPM;1958). The Stanford

Achievement Test (SAT; Gardner, Rudman, Karlsen, & Mervin, 1982) scores of the participants were obtained from school system records. Uncorrelated the test were used to compare the scores of Laotian and America students, and the .05 level of confidence was used to establish significance of differences on all tests.

The Laotian and America student groups did not differ significantly in intelligence level on either the CPM or SPM. On the SAT, the Laotian group scored significantly lower than the American group on the Social Science, Science, Reading, Listening, and Language subtests as well as on Total SAT. On the Mathematics subtest however, the Laotian students did not differ significantly from American students.

It was conclude that the Laotian LEP students displayed comparable intelligence levels to their American counterparts when measured on language-free IQ instruments, as well as comparable achievement levels on the language-free Mathematics subtest of the SAT.

Reference. Gardner, E.F., Rudman, H.C.,Karlsen, B., & Mervin, J.C. (1982). Stanford Achievment Test (7thed.). New York : Harcourt Brace Jovanovich. Raven, J.C. (`1958). Stanford Progressive Matrices. London : Lewis & Co. Raven, J.C. (1962). Coloured Progressive Matrices. London : Lewis & Co.

2.3.4. जाकिया ए0 सिद्दी व एण्ड आर0 फातिमा बिल ग्रामी (1984) में 160 छात्रों पर अध्ययन किया । जिसमें 40 उच्च, 40 निम्न, तथा 40 औसत संप्राप्ति के थे, उनका मध्यमान क्रमशः 56.74, 42.82 तथा 35.00 रहा, इससे निष्कर्ष निकला कि उच्च तथा औसत संप्राप्ति वाले छात्रों के स्कूल

संबंधी अनुशासन में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है, और न ही औसत तथा निम्न संप्राप्ति वालों में । किन्तु उच्च तथा निम्न संप्राप्ति वाले छात्रों के व्यवहार में .05 स्तर पर सार्थक अन्तर है ।

2.3.5 1982 ने 603 किशोर छात्रों की समस्याओं का अध्ययन किया उनकी रिलैटिव आवृत्ति इस प्रकार है : आरमूनी

(1) भविष्य में व्यावसायिक और शैक्षिक क्षेत्र में .90 ।

(2) धन रहने की परिस्थितियाँ एवं रोजगार क्षेत्र में .87 ।

(3) स्कूल कार्य से समायोजन .87 ।

(4) वैयक्तिक मनोवैज्ञानिक संबंध .63 ।

(5) स्वास्थ्य और शारीरिक विकास .55 ।

(6) सामाजिक मनोरंजनात्मक कियायें .36 ।

(7) पाठ्यक्रम और शिक्षण प्रकिया संबंधी .32 ।

(8) सामाजिक मनोवैज्ञानिक संबंध .20 ।

(9) घर एवं परिवार .18 ।

(10) कोर्टशिप, लिंग एवं विवाह .17 ।

(11) नैतिकता और धर्म .14 ।

2.3.6 सुनीता मेंहदीरत्ता (1979–80) एम0एड0 छात्रा ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि उच्च संप्राप्ति वाली छात्राओं में शाब्दिक योग्यता, तार्किक योग्यता, बौद्विक क्षमताएँ, सीखने की गति, उपलब्धि की आवश्यकता, निम्न संप्राप्ति वालों से कहीं अधिक थी तथा निम्न संप्राप्ति वालों में समर्पण, प्रभुत्व व प्रतिरक्षण की आवश्यकता अपेक्षाकृत अधिक थी । समायोजन आकामकता, पोषण, विनय, संबंध, स्वायत्ता, पराश्रय तथा प्रदर्शन दोनों में समान था ।

2.3.7 श्रीमती सुधा शर्मा (1979–80) ने शैक्षिण रूप से प्रतिभाशाली व पिछड़े किशोरों की शैक्षिक निर्देशन संबधी आवश्यकताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया । अध्ययन के सम्पूर्ण न्यायदर्श के

माध्यम से जयपुर नगर की हायर सैकेन्डरी एवं सैकेन्डरी विद्यालयों में 10 कक्षा में पढ़ने वालें छात्रों को लिया । जिसमें राजस्थान बोर्ड की सैकेन्डरी परीक्षा में 75प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले 50 पिछड़े किशोरों का चयन किया ।

2.3.8 पुष्पा गुप्ता (1977–78) ने एम0एड0 में वनस्थली में पढने वाली छात्राओं की समस्याओं का सर्वेक्षण किया । अध्ययन में 30 छात्रायें पी0 यू0 सी0, 58 छात्रायें , बी0ए0 प्रथम वर्ष तथा 30 छात्रायें बी0 एड0 से ली । निष्कर्ष निम्नांकित आया ।

(1) बी0एड0 की छात्राओं की समस्यायें कम तथा पी0 यू0 सी0 एवं बी0ए0 की लगभग समान है।

(2) जिस वर्ग की समस्यायें अधिक है वे कम समायोजित है तथा जिसकी समस्या कम है वह अधिक समायोजित है ।

(3) व्यक्तिगत समस्याओं के लिए अधिकांश छात्रायें माता–पिता का मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहती है ।

2.3.9 मूले – किशोरावस्था की आवश्यकता एवं समस्याओं का अध्ययन , प्रशिक्षण महाविद्यालय नागपुर ,1971 प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य हाईस्कूल के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों का वर्गीकरण , उपलब्धि के लिए प्रेरक समूहों की भिन्नता , विद्यार्थियों का वर्गीकरण ,उपलब्धि के लिए प्रेरक समूहों की भिन्नता , विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं व्यवहार , विद्यार्थियों की आवश्यकतायें तथा मूल्य प्रणाली का अध्ययन करना था ।

2.3.10 सेथ – किशोरियों की समायोजन समस्यायें, पी0 एच0 डी0 सन् 1970 । लखनऊ शहर की किशोरावस्था की युवतियों की चिन्ताओं तथा समस्याओं का अध्ययन करना था इनमें निम्नलिखित समस्यायें पाई गयी है :–

(1) परिवार में समायोजन संबंधी समस्यायें ।

(2) विद्यालय में समायोजन संबंधी समस्यायें ।

(3) लिंग भेद से संबंधी समायोजन समस्यायें ।

(4) व्यक्तिगत समायोजन समस्यायें ।

(5) सामाजिक समायोजन समस्यायें ।

(6) व्यावसायिक समायोजन समस्यायें ।

2.4.1. दुर्गाप्रसाद सिन्हा (1970) ने अपने अध्ययन मे पाया कि निम्न संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों में उच्च शैक्षिक संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा कम बुद्विलब्धि ,अधिक चिन्ता तथा कुसमायोजन पाया गया ।

2.4.2 वीर सिंह (1967) ने बी0 एड0 कक्षा के 85 छात्र अध्यापकों के अध्ययन के आधार पर अपने लेख में छात्राओं की समस्याओं पर अध्ययन प्रस्तुत किया । यह अध्ययन प्राइमरी स्कूल एवं हायर सैकैन्डरी स्कूल तथा इन्टरमीडियेट कालेज के उन्ही बालकों पर किया, जो समस्याओं से ग्रसित थे। इसमें 50प्रतिशत समस्याओं के कारण घर का वातावरण पाया गया । तथा 25 प्रतिशत समस्यायें स्कूल के कारण उत्पन्न हुई , शेष 25 प्रतिशत अन्य कारणों से ।

2.4.3 रोजनवर्ग , (1965) ने अपने अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला कि उच्च वर्ग के लड़के निम्न वर्ग की अपेक्षा आर्थिक निष्पत्ति रखतें हैं ।

2.4.4 कक्कर ( 1964) इन्होंनें किशोरो की समायोजन संबधित समस्याओं का अध्ययन किया जिससे निम्न निष्कर्ष निकले , 43 प्रतिशत बालकों की घर समस्यायें अधिक थीं तथा लड़कियॉं अधिक संवेदनशील एवं लड़के अधिक समस्याग्रस्त थे।

2.4.5 1963 – 1964 'एम के0 रैना, एम0एड0 ' ने शैक्षिक निष्पत्तियों की तुलना की जो निम्नलिखित हैं ।

(1) उच्च संप्राप्ति वाले 88 प्रतिशत सामान्यतः अच्छी और बहुत अच्छी आदतों वाले थे तथा 84 प्रतिशत निम्न संप्राप्ति , बुरी और बहुत आदतों वाले थे ।

(2) उच्च एवं निम्न संप्राप्ति के अध्ययन संबधी आदतों का मध्यांक 137.70 और 113.72 है।

(3) वस्तुनिष्ठ परीक्षा के प्राप्तांक और अध्ययन संबधी आदतों के प्राप्तांकों में उच्च प्राप्तांक प्राप्तकर्ताओं और निम्न प्राप्तांक प्राप्त कर्ताओं में सह सम्बन्ध गुणाक .83 और .56 है ।

2.4.6 जेम्यूर (1963) अपने दूसरे अध्ययन में जेम्यूर ने शैक्षिक संप्राप्ति की प्रसांगिक पृष्ठभूमि कारकों से संबधित किया । उन्होंने बताया कि युवाओं की (19 वर्ष से कम) संप्राप्ति प्रोढ़ो की अपेक्षा अधिक होती है , तथा पिता का व्यवसाय एवं अभिरूचि भी शैक्षिक संप्राप्ति को प्रभावित करती है ।

2.4.7 जेम्स व्हाइल (1962) – ने अपने अध्ययन के लिए 220 हाईस्कूल छात्रों का चयन किया । उन्होंने ग्रेड तथा लिंग के आधार पर इन्हें दो समूहों में बॉटा । इन दोनों समूहों की तुलना समायोजन संबंधी समस्या 'एपियर रेंटिंग इन्सट्रूमेन्ट' तथा 'टीचर्स रेटिंग इन्सट्रूमेन्ट' के द्वारा परिणाम निम्न रहे। उच्च संप्राप्ति वालें सामाजिक रूप से अधिक समायोजित एवं समूह तथा अध्यापक के प्रति कम आकामक थे । नेतृत्व संबंधी गुणों से युक्त थे, इनका लक्ष्य, अभिवृत्ति, अध्ययन की आदत भी निम्न संप्राप्ति वालों से अधिक थी ।

2.4.8 एडवर्ड फेकिंल (1960) ने 50 उच्च 50 निम्न संप्राप्ति वाले छात्रों का अध्ययन कर पता लगाया कि उच्च संप्राप्ति वाले समूह की बुद्विलब्धि का मध्यमान 140.66 तथा निम्न संप्राप्ति का 141. 00 था, अध्ययन से पता चला कि निम्न संप्राप्ति वालों की शाब्दिक योग्यता तथा आंकिक योग्यता बहुत कम थी इनकी रूचि यान्त्रिक एवं कुछ कला में थी । इनमें कम्पयूटेशनल, साइटिंफिक इन्टरैस्ट बहुत कम था ।

2.4.9 शा (1958) ने अपने अध्ययन में जो कि उन्होंने निम्न संप्राप्ति के संबध में किया था उसके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि निम्न संप्राप्ति वाले छात्रों के घर में गलत वातावरण, उनका कमजोर आर्थिक स्तर, माता पिता की ठीक प्रकार की शिक्षा का न होना पाया गया , उन्होंनें यह भी ज्ञात किया कि ऐसे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में घृणा तथा शत्रुता घर कर जाती है ।

2.4.10 प्रथम अध्ययन जेम्पूर (1958) 200 कालेज विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों का अध्ययन किया । इसमें उच्च एवं निम्न संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों का अध्ययन किया । परिणामस्वरूप अध्ययन की आदत एवं संप्राप्ति के मध्य सह संबंध .51 पाया गया ।

2.5.1 वैल्श (1956) ने उच्च एवं निम्न शैक्षिक निष्पत्तियों वाले छात्रों का तुलनात्मक अध्ययन किया एवं निष्कर्ष निकाला कि उच्च एवं निम्न स्तरीय शैक्षिक निंष्पत्ति वाले छात्रों की स्वधारणा में अन्तर पाया जाता है ।

2.5.2 हरलॉक (1955) ने पूर्व किशोरावस्था में आने वाली समस्याओं का अध्ययन किया व पाया कि पूर्व किशोरावस्था के शुरू में स्कूल , माता पिता , अध्यापक से संबंध , विपरीत लिंग से आकर्षण संबंधी समस्यायें अधिक होती हैं । तथा उत्तर किशोरावस्था में पारिवारिक अधिक होती है । कुछ गंभीर समस्यायें यथा स्कूल कार्य, वैयक्तिक, मनोविज्ञान समायोजन, परिवार के संबंध तथा अर्थ संबधी का भी सामना करना पड़ता है ।

2.5.3 ओखलामा विश्वविद्यालय (1952) में चार वर्ष तक की गई शोध से ज्ञात हुआ कि उच्च शैक्षिक संप्राप्ति वाले चारित्रिक रूप से स्वजागरूक और जिम्मेदारी लेने के इच्छुक होते हैं । दूसरी ओर निम्न शैक्षिक संप्राप्ति वाले विरोधात्मक प्रेरक से निर्देशित होते हैं । अपनी द्वन्द्वात्मक प्रवृत्ति के कारण जागरूक नहीं होतें ।

2.5.4 हापोक (1945) ने अपने अध्ययन में इस बात का उल्लेख किया है कि सीनियर तथा जूनियर हाईस्कूल के विद्यार्थियों की कौन कौन सी समस्यायें उनके सामने आती है । उन्होंने उसके लिए 7 सीनियर स्कूल के बच्चों ने सर्वप्रथम प्राथमिक , व्यावसायिक समस्याओं से संबंधित तत्पश्चात् शिक्षा, मनोंरंजन सामाजिक तथा नैतिक बातों से संबंधित जो समस्यायें आती थीं उनका उल्लेख किया ।

2.5.5 एच0 एम0 वैल्स (1938) ने छात्रों द्वारा विशेष क्षेत्रों मे पाई जाने वाली विभिन्न समस्याओं की खोज की, इन समस्याओं के क्षेत्र थें :—

(1) आर्थिक क्षेत्र

(2) आचरण एवं नैतिकता

(3) शैक्षिक एवं व्यावसायिक चयन

(4) घर

(5) मनोरंजन एवं अन्य

57.7 प्रतिशत छात्रों के समस्यायें आर्थिक शिक्षा के क्षेत्र में,11.12 प्रतिशत की आचरण एवं नैतिक क्षेत्र में , 10.6 प्रतिशत की शैक्षिक व व्यावसायिक चयन संबंधी, 7.1 प्रतिशत घर तथा 4.7 प्रतिशत मनोरंजन के क्षेत्र में एवं 8.6 प्रतिशत अन्य क्षेत्रों से संबंधित थी । यह अध्ययन 16 से 24 वर्ष तक के विद्यार्थियों पर किया गया ।

2.5.6 पाठक (1922) ने अध्ययन करके पाया कि जो विद्यार्थी शैक्षिक संप्राप्ति की दृष्टि से ऊँचे थे उनकी बुद्धिलब्धि भी निम्न वालों से अधिक थी ।

2.5.7 बी0 एल0 वर्मा ने व्यक्तिगत समस्याओं एवं बुद्धिलब्धि के सह संबंध पर अध्ययन किया । बुद्धि परीक्षण एवं प्राब्लम चैकलिस्ट के क्षेत्रों में सह संबंध गुणांक निम्न रूपों में आया । एच0 पी0 डी0 .15, एच0 एफ0 .24, एम0 डब्ल्यू0एफ0 .14, बी0 जी0 .21, पी0 बी0. 26, एल0 सी0 .20, कम्पाजिट आर, 21 है जो कि .01 स्तर पर सार्थक नहीं है । बुद्धि परीक्षण के आधार पर आर्थिक प्राप्तांको से समस्याओं में कमी आती है । अर्थात् अधिक प्राप्तांक वालों की समस्यायें कम होती हैं , पर यह अन्तर अधिक ऊँचा नहीं है। अतः यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि समस्याओं का पूर्णतः अन्त हो जाता है या केवल कम हो जाती है ।

2.5.8 में लेन्ड ने यह निष्कर्ष निकाला कि उच्च शैक्षिक संप्राप्ति के प्रेरक वहॉ विकसित होते हैं कि जहॉ कि संस्कृति व परिवारों में माता पिता व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर अधिक महत्व देते हैं । निम्न संप्राप्ति प्रेरक माता पिता के प्रभुत्व के कारण होती है ।

2.5.9. फ्रेमन पेयन एल0 ने अपने अध्ययन में पाया कि निम्न संप्राप्ति का दिमागी कियाओं की अपेक्षा सामाजिक कियाओं पर अधिक ध्यान है ।

2.5.10 डा0 एन0 बागिया ने 618 छात्रों पर जो सैकेन्डरी स्कूलों में अध्ययनरत थे , अध्ययन किया । इस अध्ययन द्वारा उन्होनें विद्यार्थियों की कठिनाइयों एवं समस्याओं को वर्गीकृत कर अधिक पाई जाने वाली समस्याओं को बताया । ये लगभग 4142 समस्यायें थीं । जैसे शैक्षिक विद्यार्थियों की परस्पर , अध्यापकों से, स्कूल प्रशासन से,एवं स्वयं से संबधित समस्या ।

The Meghalaya SCERT. James, L. (1989) located the possible causes of poor performance of pupils in the HSLC examination of Meghalaya Board of School Education as less time devoted to teaching and homework, failure on the part of teachers to give individual attention and provision of inadequate facilities.

Tripathy, A. & Tiwari, B.D. (1991) made evident the differential effect of demonstration on the verbal problem-solving of eighth and ninth class pupils with high and low degree of dependence - prones were more efficient than their high dependence - prone counterparts. A findings such as this in the line with the theory that high dependence prone pupils have lesser capacity to analyse and mostly take a passive approach to solve problems involving reasoning.

Kaushik, N.K. (1988) studied the long term effect of advance organisers in relation to reading ability, inteligence and scientific attitude of the learners and found that the general introduction or overview which generally precedes learning material is less effective as compared to the advance organisers. Secondly, the benefit derived from advance organisers is positively correlated

with higher intelligence , reading comprehension and scientific attitude.

Kumar, M.S.G. (1991) studied the effect of intelligence, achievement (biology) and extraversion on the questioning ability of class IX pupils. Kumar, M.S.G. (1991) found that intelligence, achievement in biology and extraversion influenced the number and level of questions asked.

SCERT (State of Meghalya) studied by using a parental encouragement scale. Aggarwal, K. (1986) made comprehensive districtwise comprisons amongst the different educational groups of secondary schools in the Garhwal District of Uttar Pradesh. It was noticed that the high-achieving group was found as getting a higher amount of parental encouragement in all the groups based on gender district and urban-rural location demonstrating thereby parental involvement as a positive correlate of academic achievement.

Srivastava, L. (1988) studied the influence of some variables - academic achievement, personality, socio-economic status on vocational development. The study conducted that vocational development was related to academic achievement and socio-economic status but was not related to sex different levels of education.

Mulia, R.D. (1992) studied the effect of grade, gender and area on the I.Q. levels of the secondary pupils in Ahmedabad District. While no significant difference was found in the I.Qs of boys and girls, the main effect of area and grade was significant, the difference being in favour of urban boys of class IX.

## REFERENCES


1. Acker, Haskell Brewington, Ph.D. - Georgia Statt Univ. College of Ed. 1990.

2. Addes, Blna Goldbarten, Ed.D - Univ.of Massachusetts, 1988.

3. Aselting, Robert Hall, Jr. Ph.D. - The Univ. of Michigan 1992.

4. Boulon-Dlaz, Frances, Ph.D. - Temple University, 1992

5. Ciampa, Diange Leslie, Ph.D. - The Univ. of Michigan 1990.

6. Diachuk, Christopher Michael Paul Ph.D. - Univ. of Albrla (Canada)

7. Dotan, Niva Ban-Sar, Ph.D. - University of California Berkeley, 1996.

8. Evans Steven Wayne, Ph.D. - Case Western Reserve University, 1990.

9. Fox, Douglas Leo, Ph.D. - University of Minnesota 1990.

10. Fraleigh, Michael Jr. Ph.d. - Stanford Univ. 1990.

11. Gross, Miraca Una Murdoch, Ph.D. - Purdue University 1989.

12. Hagen, Jeananne Reister, Ph.D. - Iowa State University.1992.

13. KWA, Lydia Woon-AI, Ph.D. - Queen's University at Kingston (Canada) 1990.

14. Nasseh, Arshidokht Arshi, Ph.d. - George Peabody College for Teachers of vanderbilt University 1988.

15. Price, Rosemary, Ph.D. - University of Southern California, 1989.

16. Pusatere Mckenna, Carol, Ph.D. - Univ. of Pittsburghs 1991.

17. Samules, Susan Kaufman, Ph.D. - The University of Connecticut, 1990.

18. Schneidur, Steven Craig, Ph.D. - Texas A&M University '90.

19. Serebreni, Riqua Russell Ed. - Univ. of Arkansas, 1991.

20. Tucker Elizabeth Parke, Ph.D. - Kenl State Univ. 1990.

21. Watts, Karen, M.Ed. - Univ. of Maine, 1990.

22. White Head, Deborah Ann. Ph.D. - East Teas State University 1990.

23. Wong, Edward, G, Ed.D. - The University of Akron 1991

DISSERATION ABSTRACT INTERNATIONAL 1986, 1988, 1991, 1992, 1993, 1994.

Encyclopedia of Education - 1988.

ICSSR Research Projects - 1969-1988.

# तृतीय अध्याय

## " अनुसंधान विधि एवं आकंडों का संग्रह "

किसी भी क्षेत्र में कार्यरत अनुसंधानकर्ता जब तात्कालिक सिद्धान्तवादों का अध्ययन करता तो उसे उसमें कई रिक्त स्थान नजर आ सकते हैं । जिनकी पूर्ति हेतु नया अनुसंधान कार्य किया जा सकता है । कई बार तात्कालिक सिद्धान्तवादों से कई नये प्रश्न या अधिसिद्धांत सामने आते हैं । इन्हें परखने के लिये अनुसंधान आवश्यक होता है । अर्थात् अनुसंधान कब उदय होता है ? अनुसंधान समस्या में संबधित परिकल्पना के पश्चात उसके परीक्षण के लिये आवश्यक तथा तर्क संगत आंकडों के संकलन की आवश्यकता होती है । क्योकि यह जरूरी है कि हमें कहाँ की और कितनी जनसंख्या पर परीक्षण डालने है, हमारी अनुसंधान विधि कौन सी है तथा हम किन किन परीक्षणों का प्रयोग कर रहे हैं तथा प्रदत्तों के मापन एवं गणना के लिए किस–किस सांख्यिकी को प्रयोग में ला रहें हैं । इन सब का निश्चय किये बिना किया अनुसंधान एक अर्निदष्टि, अनियोजित विचारहीन उस भटकते राही के सदृश हैं जो अपनी मंजिल तक पहुँचने के साधनों एवं राहों से अनभिज्ञ होता है । अतः शोधकत्री ने अपने शोध को एक निश्चित एवं योजनाबद्व दिशा प्रदान की है उसी का विवरण इस अध्ययन में किया गया है ।

### 3.1 अनुसंधान की विधि :

शोध विषय की समस्या का भली प्रकार समझकर अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य के अवलोकन व निर्मित उपकल्पनाओं से प्रेरित होकर शोधकत्री ने आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि को उपयुक्त समझा क्योंकि इस शोध समस्या के मुख्य उद्देश्य अनुसंधान की आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि से अधिक सम्बन्धित है ।

**करलिंगर के अनुसार** –"सर्वेक्षण शोध सामाजिक वैज्ञानिक अनुसंधान की एक शाखा है जिसके अन्तर्गत सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरों के घटनाकम,वितरण तथा पारस्परिक अन्तः संबंधों की

खोज के उद्देश्य से चयनित प्रतिदर्श के आधार पर बड़ी तथा छोटी जनसंख्याओं का अध्ययन किया जाता है

### 3.2 तथ्य संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण :

कानबेक ने अपनी पुस्तक इन्सैन्शियल ऑफ साइकोलीजिकल टेस्टिंग में लिखा है 'परीक्षण में विश्वसनीयता ,वैधता, कम मूल्य वाला होना चाहिए, परीक्षण व्यक्तिगत परीक्षणों की अपेक्षा सुविधाजनक तथा कम खर्चीले होते हैं ।

कोई भी अनुसंधान बिना परीक्षण के नहीं होता । अनुसंधानकर्मी ने प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का चयन किया।

(1) युवा समस्या अभिसूची (समस्याओं के लिये)

(2) मानसिक योग्यता परीक्षण (जलोटा) (बुद्विलब्धि के लिये)

### 3.3 युवा समस्या अभिसूची :-

युवा समस्या अभिसूची का निर्माण शोधकर्मी के द्वारा स्वयं किया है । यूथ प्राब्लम इन्वेटरी में समस्याओं के केवल चार क्षेत्र है , पारिवारिक स्कूल संबंधी ,सामाजिक एवं व्यक्तिगत । युवा समस्या अभिसूची में समस्याओं के निम्नांकित आठ क्षेत्र सम्मिलित किये गये हैं ।

1. पारिवारिक समस्यायें
2. सांवेगिक समस्यायें ,
3. व्यावसायिक समस्यायें
4. शैक्षिक संबंधी समस्यायें
5. शारीरिक समस्यायें
6. व्यक्तिगत समस्यायें
7. विलंगी समस्यायें
8. सामाजिक समस्यायें

यह अभिसूची अधिक संवेदनशीलता में समस्याओं को इंगित करती है । इस अभिसूची में कुल 100 पद हैं , जो उपरोक्त 8 क्षेत्रों में विभक्त हैं जिनमें पारिवारिक के 20 सांवेगिक के, 14 व्यावसायिक के, 6 स्कूल संबन्धी के 20, एवं अन्य चारों समस्याओं के कमशः 10–10 पद हैं, इस सूची को अन्तिम रूप से 500 किशोरों पर प्रशासित किया गया है एवं अर्ध विच्छेद विधि से विश्वसनीयता मे सह सम्बन्ध गुणांक ज्ञात किया है जो कि पारिवारिक समस्याओं में .94, सांवेगित समस्याओं मे .98, व्यावसायिक समस्याओं मे .98, स्कूल संबंधी .96, शारीरिक समस्याओं में .99, व्यक्तिगत में .99, एवं विलंगी समस्याओं में .88 है ।

<u>फलांकन</u> :–

परीक्षण का फलांकन सम एवं विषम संख्या के आधार पर परीक्षण की बैधता को ध्यान में रखकर किया गया है । समस्याओं के प्रत्येक क्षेत्र में 2, 4, 6, 8, 10, 12, 14, 16, 18, 20 नम्बर की संख्याओं में सत्य पर ( ) लगाने पर 2 अंक एवं असत्य पर ( ) लगाने पर 0 अंक दिया गया है । इसी तरह 1, 3, 5, 7, 9, 11, 13, 15, 17, 19 नम्बर वाली संख्याओं के सत्य पर ( ) लगाने पर 0 अंक एवं असत्य पर लगाने पर 2 अंक दिये गये हैं ।

क्योंकि सूची में दिये गये विषम संख्या वाले पद समस्या रहित हैं एवं सम संख्या वाले पद समस्यापूर्ण । आंशिक सत्य पर ( ) का निशान लगाने पर 1 अंक दिया गया है । कोई भी किशोर पारिवारिक में अधिकतम 40 सांवेगिक में अधिकतम 28, व्यावसायिक में 12, स्कूल संबंधी 40 एवं कमशः अन्य चारों समस्याओं में अधिकतम 20 अंक प्राप्त कर सकती है । पूरी सूची में अधिकतम 200 अंक प्राप्त किये जा सकते हैं ।

3.4 <u>डा0 जलोटा का साधारण मानसिक योग्यता परीक्षण</u> :–

जलोटा का बुद्धि परीक्षण सामूहिक शाब्दिक परीक्षण है । इस परीक्षण में 100 प्रश्न दिये गये हैं यह निश्चित समयावधि में किया जाता है । 20 मिनट के अन्त में एक बालक कितने प्रश्न हल कर पाता है, यह संख्या बालक की मानसिक आयु की सूचक होती है । सामान्य

मानसिक योग्यता परीक्षण के 100 प्रश्न शब्द भंडार के समान विलोम रूप, संख्याओं के कम, वर्गीकरण, सर्वोत्कृष्ट उत्तर अनुभव तथा सादृश्य उत्तरों से सम्बन्धित है यह परीक्षण यद्यपि बुद्धि को सामान्य घटक के रूप में मानता है तथापि इसके 100 प्रश्न व्यक्ति की तर्कशक्ति, शाब्दिक शक्ति तथा अंकों के गणना की योग्यता का मापन करते हैं । समानतार्थ एवं विलोम एवं सादृश्य शब्द से सम्बन्धित प्रश्न शाब्दिक मानसिक शक्ति का परीक्षण करते हैं । अंकों की गणना तथा अग्रिम संख्याओं को ज्ञात करने प्रश्न गणितीय तथा अमूर्त चिन्तन सम्बन्धी मानसिक एवं सादृश्य वाले प्रश्न व्यक्ति की स्मृति तर्कना शक्ति का परिचय देते हैं ।

इस प्रकार साधारण मानसिक बुद्धि परीक्षण बुद्धि की तीन घटकों शाब्दिक गणितीय एवं तार्किक योग्यता का मापन करता है ।

**परीक्षण का प्रशासन :-**

प्रत्येक परीक्षण के प्रशासन की निर्दिष्ट विधि होती है जिसके अनुसार परीक्षण का प्रशासन प्रदत्तों की विश्वसनीयता एवं शुद्धता को बढ़ा देता है । परीक्षण प्रारम्भ करने से पूर्व किशोरों की निम्नलिखित निर्देश दिये गये :-

1— यह परीक्षण आपकी मानसिक शक्ति जानने हेतु लिया जा रहा है अतः सावधानी पूर्वक उत्तर दे ।

2— यह परीक्षण 20 मिनट में करना है अतः शीघ्रता से बिना इधर उधर देखे परीक्षा दें ।

3— 20 मिनट में 100 प्रश्न करने हैं अतः जो प्रश्न नहीं आये वह छोड़ दें आगे के प्रश्न करे

4— समय नष्ट न करें ।

5— जब तक प्रारम्भ करने आदि आदेश न मिले पन्ना न उलटे ।

6— प्रथम पृष्ठ के अभ्यास प्रश्नों को मैं कराऊँगी उन्हें ध्यान से सुने क्योंकि इन्हीं प्रश्नों पर परीक्षण में 100 प्रश्न आधारित हैं ।

7— जैसे ही कार्य बन्द करने को कहे कार्य बन्द कर दें ।

किशोरों को अभ्यास के प्रश्न अच्छी तरह समझा देने के उपरान्त परीक्षा देने के लिये कहा गया 20 मिनट के अन्तराल निरीक्षण किया गया ठीक 20 मिनट बाद उत्तर पुस्तिका ले ली गई यह परीक्षण पूर्व, मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था की उच्च एवं निम्न संप्राप्ति वाली 1200 किशोरों पर डाला गया है ।

फलांकन :

परीक्षण की उत्तर तालिका के उत्तरों को स्कोरिंग की से मिलाकर सही प्रश्नों की संख्या के अनुसार मानसिक आयु ज्ञात की तथा मानसिक आयु एवं वास्तविक आयु द्वारा निम्नलिखित सूत्र से बुद्धिलब्धि ज्ञात की गयी ।

$$\text{बुद्धिलब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु या शारीरिक आयु}} \times 100$$

3.5 **चर अथवा परिवर्ती** :—

चर वह प्रत्येक वस्तु है जिसका हम निरीक्षण कर सकते हैं और यह इस प्रकार की हो जिसकी इकाई को निरीक्षण के विभिन्न वर्गों में कही वर्णन किया जा सके ।

बुगेल्सकी के अनुसार — "चर किसी घटना, किया या प्रकिया का वह पक्ष या स्वरूप है जो अपनी उपस्थिति से किसी दूसरी घटना या प्रकिया को जिसका अध्ययन किया जा रहा है, प्रभावित करें" अनुसंधान में दो प्रकार के चर महत्त्वपूर्ण हैं ।

1. स्वतंत्र चर
2. आश्रित चर

करलिंगर के अनुसार — स्वतंत्र चर किसी आश्रित चर का अनुमानित कारक है, तथा आश्रित चर स्वतंत्र चर का अनुमानित प्रभाव है ।

<u>स्वतंत्र चर</u> – टाउन सैण्ड के अनुसार – "स्वतंत्र चर वह राशि है जिसे प्रयोगकर्ता किसी निरीक्षित प्रपंच से सम्बन्धित करने के लिये घटाता – बढ़ाता है ।"

प्रस्तुत अध्ययन में संप्राप्ति स्तर बुद्धि, लब्धि, आयु वर्ग एवं सामयिक स्तर स्वतंत्र चर हैं ।

<u>आश्रित चर</u> – टाउनसैण्ड के अनुसार "आश्रित चर वह चर राशि है जो प्रयोगकर्ता द्वारा स्वतंत्र चर के प्रदर्शन पर प्रदर्शित हो, हटाने पर अदृश्य हो, तथा मात्रा के परिवर्तित होने पर परिवर्तित हो जाया"

प्रस्तुत अध्ययन में पारिवारिक , सांवेगिक, व्यावसायिक, स्कूल सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत विलिगी समस्यायें आश्रित चर है, क्योंकि संप्राप्ति स्तर, बुद्धिलब्धि एवं आयुवर्ग की भिन्नता से समस्यायें प्रभावित हो रही है ।

**3.6** <u>न्यादर्श</u> -- इकाईयों के समूचे समूह को जिसके लिये चर का मान निकालना अभीष्ट है जनसंख्या कहते हैं । किसी भी अनुसंधान के समग्र में व्यक्तियों को अध्ययन करना संभव नहीं है अतः उस समग्र से कुछ ऐसी इकाइयों का चयन कर लिया जाता है तो समग्र का प्रतिनिधित्व करता है और उन पर किये गये अध्ययन के आधार ही निष्कर्ष निकाले जाते हैं ।

<u>न्यायादर्श के उद्देश्य</u> :

1– अध्ययन को मितव्ययी बनाना ।

2– जनसंख्या का इतना स्पष्ट चित्र प्राप्त करना जितना की संभव हो सकता है ।

3– अनुमान की विश्वसनीयता को प्रकट करना ।

4– प्रतिचयन प्रसरण को कम करना ।

5– निष्कर्षो में परिशुद्धता तथा यर्थाथता के स्तरों को स्थापित करना ।

न्यादर्श के प्रकार :

न्यादर्श प्रणाली के देव न्यादर्श, त्वरित न्यादर्श, सोद्देश्य न्यादर्श आदि प्रकार हो सकते हैं । शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में सौद्देश्य न्यादर्श प्रणाली को अपनाया है । सोद्देश्य न्यादर्श में अन्वेषक जनसंख्या के उस समूह की इकाइयों का अध्ययन करता है जिसे वह पूर्ण ज्ञान के आधार पर उस जनसंख्या का प्रतिनिधि समझता है या जिससे उसके उद्देश्य की पूर्ति होती है ।

अनुसंधानकर्ता ने इस अध्ययन में आँकड़े एकत्र करने हेतु जालौन जिले के 1200 किशोरों को संप्राप्ति स्तर, बुद्धिलब्धि, आयु वर्ग एवं सामाजिक स्तर की भिन्नता के आधार पर अध्ययन के रूप में लिया है ।

न्यादर्श – 1200 किशोर

सामाजिक स्तर के आधार पर न्यादर्श

| सामाजिक स्तर | किशोरों की संख्या |
|---|---|
| शहरी | 750 |
| ग्रामीण | 450 |

आयु वर्ग की भिन्नता के आधार पर शहरी एवं ग्रामीण किशोरो का न्यादर्श

| सामाजिक स्तर | किशोरो का आयु वर्ग | किशोरों की संख्या |
|---|---|---|
| शहरी किशोर | पूर्व किशोरावस्था | 250 |
| | मध्य किशोरावस्था | 250 |
| | उत्तर किशोरावस्था | 250 |
| ग्रामीण किशोर | पूर्व किशोरावस्था | 150 |
| | मध्य किशोरावस्था | 150 |
| | उत्तर किशोरावस्था | 150 |

संप्राप्ति स्तर के आधार पर शहरी किशोरों का न्यादर्श

बुद्धि लब्धि के आधार पर शहरी किशोरों का न्यादर्श

| संप्राप्ति स्तर | किशोरों की संख्या | बुद्धि लब्धि | किशोरों की संख्या |
|---|---|---|---|
| उच्च संप्राप्ति प्राप्त | 375 | उच्च बुद्धि लब्धि | 250 |
| निम्न संप्राप्ति प्राप्त | 375 | सामान्य बुद्धि लब्धि | 250 |
| | | निम्न बुद्धि लब्धि | 250 |

**सार्थकता के स्तर :**

निकाला गया अन्तर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है या नहीं यह संभावना पर निर्भर करता है कि दिया गया अन्तर "संयोग" द्वारा प्रकट हो सकता है । यह प्रयोग के उद्देश्य पर भी निर्भर करता है, सामान्यतः अन्तर को उस समय सार्थक कहा जाता है जब दो न्यादर्श मध्यमानों के बीच का अन्तर उस जनसंख्या के प्रचलन के वास्तविक अन्तर की ओर संकेत करता है जिससे वे लिये गये है । सार्थक या निरर्थक के निर्णय से पूर्व कुछ आलोच्य बिन्दु संभाव्यता माप पर अवश्य निर्धारित करने चाहिये जो कि इन दो निर्णायक श्रेणियों को अलग करने में सहायक होगी । प्रस्तुत अनुसंधान में इन इच्छित स्तरों को चुनाव जिसे सांख्यिकी में सार्थकता के स्तर कहते हैं । .05 एवं .01 स्तर पर का मूल्य ज्ञात किया गया है ।

.01 स्तर से तात्पर्य है 100 प्रयासों में से एक बार अशुद्धता का दावा किया जा सकता है ।

.05 स्तर से तात्पर्य है 100 प्रयासों में पाँच बार अशुद्धता का दावा किया जा सकता है ।

शोधकर्त्री ने आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है क्योंकि उसे अपने शोध में समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना है और तुलना, समानता एवं विभिन्नता के लिये

आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का ही प्रयोग किया जाता है । तथ्य संकलन हेतु उन्होंने बुद्धि लब्धि जानने के लिये जलोटा का "साधारण मानसिक योग्यता परीक्षण" तथा समस्याओं के लिये स्वनिर्मित" युवा समस्या अभिसूची" का प्रयोग किया गया हैं ।

सांख्यिकी में पद मूल्यों का विचलन ज्ञात करने के लिये मध्यमान तथा उस विचलन का वर्ग ज्ञान कर औसत निकालने के लिये प्रमाणिक विचलन एवं प्रमाणिक त्रुटि एवं दो चर राशियाँ कहाँ तक एक दूसरे पर निर्भर करती हैं । यह जानने के लिये "टी अनुपात" का प्रयोग किया है ।

# सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1– भटनागर पारसनाथ चंद : अनुसंधान परिचय, आगरा लक्ष्मी नारायण अग्रवाल 1974, पृ0 273

2– बेरट जे0 डब्ल्यू0 : रिसर्च इन एजूकेशन, यू0एस0 प्रैन्टिस हाल 1959 पृ0 320

3– बुगेल्सकी बी0आर0 'अ फर्स्ट फोर्स इन एक्सपेरिमेन्टल साइकलॉजी हेनरी हाल्ट एण्ड कं0 न्यूयार्क ।

4– गैरेट एच0ई0, जनरल साइकोलॉजी, न्यू दिल्ली यूरेशिया पब्लिशिंग हाऊस 1964 पृ0 626

5– घोष एण्ड चौधरी, सांख्यिकी थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस, पृ0 85

6– गुडे डब्ल्यू जे0 एण्ड हैट पी0के0 "मैथडस इन सोशल रिसर्च इन टोकियो – मैग्राहिल बुक कम्पनी 1952 पृ0 56

7– कोन बेक – इन्सैन्शियल आफ साइकोलोजिकल टैस्टिंग न्यूयार्क हार्पर एण्ड ब्रदर्स सन 1944, पृ0सं0 126

8– लेकन तथा मेयर "अण्डर स्टैण्डिंग एजूकेशन रिसर्च मैग्राहित बुक कम्पनी, न्यूयार्क पृ 54

9– टाउनसैण्ड जे0 सी0 "इण्टरोडेक्शन टू एक्सपेरीमेन्टल मैथेड, मैकग्राहिल बुक कम्पनी न्यूयार्क

10– येग पी0 वी0 काटेड बाई एम0 एन0 वर्मा "इन्टरोडेल्शन टू एजूकेशनल एण्ड साइकोलीजिकल रिसर्च लंदन । यूरेशिया पब्लिशिंग हाऊस 1945 पृ0 सं0 65

11– करलिंगर एफ0 एन0 "फाउन्डेशन आर्फ विहेवियरल रिसर्च एन0 वाई0 होल्ट, रिनहर्ट एण्ड विन्सटन

12– इडवार्ड ए0 एल0 "एक्सपेरीमेंटल डिजाइन इन साइकोलीजिकल रिसर्च, थर्ड एडीसन एन0 वाई0 होल्ट, रिनचर्ट एण्ड विन्सटन

13– फ्रीमेन एफ0 एस0 थियोरी एण्ड प्रेक्टिकल आर्फ साइकोलीजिकल टेस्टिंग, एन0 वाई0 होल्ट, रिनचर्ट एण्ड विन्सटन

14– गिलफोर्ड जे0 पी0 फन्डामेन्टल स्टैटस्टिक्स इन साइकोलीजिकल एण्ड एजूकेशन एन0 वाई0 मेकग्राहिल बुक कारपोरेशन ।

# चतुर्थ अध्याय

## प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

भौतिक संसार के समान सामाजिक संसार तथा मनोवैज्ञानिक संसार भी व्यवस्थित है । उनमें कमबद्धता है । यदि सामाजिक संसार में किसी प्रकार की व्यवस्था न होंती तो सामाजिक अध्ययनों के प्रदत्तों का विश्लेषण सम्भव नहीं होता। अनुसंधान प्रदत्तों के विश्लेषण का सामान्य उद्देश्य है सामाजिक और मनोवैज्ञानिक तथ्यों का पता लगाना,उनकी प्रकृत्ति का अध्ययन करना तथा तथ्यों के पारस्परिक सम्बन्धों का तथा उनको नियमित करने वाले सिद्वान्तों का पता लगाना ताकि प्रागुक्ति सम्भव हो । इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये अनुसंधानकर्ता शैक्षिक प्रदत्त के विश्लेषण एवं व्याख्या करता है ।

अनुसंधान या शोधकार्य में केवल तथ्यों का संकलन ही महत्वपूर्ण कार्य नहीं होता है। सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य तथ्यों को व्यवस्थित करके उनकी विश्लेषण एवं व्याख्या करता होता है । श्रीमती यंग ने लिखा है कि "यदि सुव्यवस्थित तथ्यों को सम्पूर्ण अध्ययन से सम्बन्धित किया जाये तो उनका एक महत्वपूर्ण सामान्य अर्थ प्रकट हो सकता है । जिसके आधार पर घटना की सप्रमाण व्याख्यायें प्रस्तुत की जा सकती हैं ।" तथ्यों का वर्गीकरण संकेतीकरण, व्याख्या विवरण,तुलना करने से विभिन्न तथ्यों को एक व्यवस्थित कमबद्व एवं संदीपन रूप मिल जाता है ।

प्रस्तुत अध्ययनार्थ आकड़े जालौन जिले से एकत्रित किये गयें हैं । सभी विद्यालयों से लगभग 2000 किशोरों पर परीक्षण प्रस्तुत किये गयें जिनमें से सम्प्राप्ति स्तर, बुद्विलब्धि स्तर आयुवर्ग एवं सामाजिक स्तर को ध्यान में रखते हुए 1200 किशोरों को अध्ययन हेतु चुना है ।

कुल न्यायदर्श – 1200 किशोर

सम्प्राप्ति स्तर कें आधार पर शहरी किशोरों का कुल न्यायदर्श – 750

उच्च संप्राप्ति प्राप्त किशोर – 375

निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोर – 375

बुद्विलब्धि के आधार पर शहरी किशोरो का कुल न्यायदर्श – 750

उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त किशोर – 250

सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोर – 250

निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोर – 250

आयुवर्ग की भिन्नता के आधार पर शहरी एवं ग्रामीण किशोरों का कुल न्यायदर्श – 1200

शहरी किशोर – 750

पूर्व किशोरावस्था वाले किशोर – 250

मध्य किशोरावस्था वाले किशोर – 250

उत्तर किशोरावस्था वाले किशोर – 250

ग्रामीण किशोर – 450

पूर्व किशोरावस्था वाले किशोर – 150

मध्य किशोरावस्था वाले किशोर — 150

उत्तर किशोरावस्था वाले किशोर — 150

सामाजिक स्तर के आधार पर शहरी एवं ग्रामीण

किशोरों का न्यायदर्श — 1200

शहरी किशोर — 750

ग्रामीण किशोर — 450

न्यायदर्श का विश्लेषण निम्नांकित पदों कें अनुसार किया गया है ।

(1) मध्यमान एवं प्रामाणिक विचलन की गणना ।

(2) समूहों के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर की तुलना ।

(3) समूहों के मध्यमानों के मध्य अन्तर के लेखाचित्र ।

(4) आलोचनात्मक अनुपात एवं "टी" मूल्य की गणना ।

## सारिणी — 1

किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों का पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी ।

| समस्यायें | संप्राप्ति | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | उच्च | 375 | 6000 | 16.00 | 7.50 | .58 | 11.51 XX |
| | निम्न | 375 | 85.06 | 22.68 | 8.60 | | |
| सांवेगिक | उच्च | 375 | 3724 | 9.93 | 4.20 | .322 | 8.91 XX |
| | निम्न | 375 | 4800 | 12.8 | 4.89 | | |
| व्यावसायिक | उच्च | 375 | 2040 | 5.44 | 3.69 | .21 | 1.19 |
| | निम्न | 375 | 2134 | 5.69 | 2.59 | | |
| शैक्षिक संबंधी | उच्च | 375 | 3406 | 9.08 | 8.60 | .70 | 7.07 XX |
| | निम्न | 375 | 5288 | 14.10 | 10.86 | | |
| शारीरिक | उच्च | 375 | 2280 | 6.08 | 4.81 | .513 | 3.54 XX |
| | निम्न | 375 | 32681 | 7.89 | 6.24 | | |
| सामाजिक | उच्च | 375 | 3202 | 8.54 | 3.37 | .256 | 4.88 XX |
| | निम्न | 375 | 3671 | 9.79 | 4.97 | | |
| व्यक्तिगत | उच्च | 375 | 2010 | 5.36 | 4.30 | .364 | 3.598 XX |
| | निम्न | 375 | 2610 | 6.96 | 5.61 | | |
| विलिंगी | उच्च | 375 | 4035 | 10.76 | 6.09 | .63 | .04 |
| | निम्न | 375 | 3735 | 9.96 | 6.12 | | |

X 0.05 स्तर पर 748डी0 एफ0 के लिए टी का मूल्य = 1.96

XX 0.01 स्तर पर 748 डी0 एफ0 के लिए टी का मूल्य = 2.58

सारिणी – 1:–

किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों का पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता ।

उपरोक्त सारिणी–1 में किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों का पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं प्रमाणिक त्रुटि दी गयी है । किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों का पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलंगी समस्याओं का ही अनुपात क्रमशः 11.51, 8.91, 1.19, 7.07, 3,54, 4,88, 3,59 एवं .04 है । 748 डी0 एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर 2.58 है । उपरोक्त सारिणी के अनुसार किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों का पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक सम्बन्धी,शारीरिक, सामाजिक, एवं व्यक्तिगत समस्याओं का ही अनुपात जो कि क्रमशः 11.51, 8.91, 7.07, 3.54, 4,88, एवं 3.59 है .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है क्योंकि उपरोक्त समस्याओं का टी मूल्य .05 स्तर पर दिये गये अपेक्षित टी मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर 2.58 से अधिक है । व्यावसायिक एवं विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य क्रमशः 1.19 एवं .04 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है, क्योंकि व्यावसायिक एवं विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित 1.96 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित मूल्य 2.58 से कम है । अतः यह स्पष्ट होता है कि किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति प्राप्त एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों का व्यावसायिक एवं विलिंगी समस्याओं के अतिरिक्त उपरोक्त सभी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है, मध्यमानों के अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों का पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की तुलना में अधिक है ।

## सारिणी –2

पूर्व किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों का पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | संप्राप्ति | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | उच्च | 125 | 1413 | 11.30 | 6.26 | .73 | 7.46 xx |
| | निम्न | 125 | 2094 | 16.75 | 6.32 | | |
| सांवेगिक | उच्च | 125 | 1024 | 8.19 | 4.89 | .60 | .646 xx |
| | निम्न | 125 | | 12.07 | 4.64 | | |
| व्यावसायिक | उच्च | 125 | 520 | 4.16 | 2.71 | .34 | 1.58 |
| | निम्न | 125 | 462 | 4.70 | 2.76 | | |
| शैक्षिक संबंधी | उच्च | 125 | 792 | 6.33 | 8.51 | .1.05 | 4.22 xx |
| | निम्न | 125 | 1347 | 10.77 | 8.21 | | |
| शारीरिक | उच्च | 125 | 670 | 5.36 | 4.28 | .61 | 5.29 xx |
| | निम्न | 125 | 1024 | 8.59 | 5.38 | | |
| सामाजिक | उच्च | 125 | 909 | 7.27 | 5.52 | .71 | 3.33 xx |
| | निम्न | 125 | 1205 | 9.64 | 5.76 | | |
| व्यक्तिगत | उच्च | 125 | 567 | 4.53 | 3.57 | .55 | 4.00 xx |
| | निम्न | 125 | 842 | 6.73 | 5.10 | | |
| विलिंगी | उच्च | 125 | 1010 | 8.98 | 6.91 | .88 | .43 |
| | निम्न | 125 | 963 | 7.70 | 7.04 | | |

x 0.05 स्तर पर 248डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx 0.01 स्तर पर 248 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

(सारिणी 2) :--

पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत, समस्याओं में सार्थक अन्तर होता ।

उपरोक्त सारिणी–2 में पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, एवं प्रमाणिक त्रुटि दी गयी है पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात कमशः 7.46, 6. 46, 1.58, 4.22, 5.29, 3.33, 4.00, एवं .43 हैं । 248 डी0 एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का मूल्य 1.97, एवं .01 स्तर पर 2.59 है । उपरोक्त सारिणी के अनुसार पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक सम्बन्धी, सामाजिक, एवं व्यक्तिगत समस्याओं का टी अनुपात जो कि कमशः 7.46, 6.46, 4.22, 5.09, 3.33, 4.00, है, जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक हैं, क्योंकि उपरोक्त समस्याओं का टी मूल्य .05 स्तर पर दिये गये अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.59 से अधिक है। व्यावसायिक एवं विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य .कमशः 1.58 एवं .41 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है, क्योंकि व्यावसायिक एवं विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य .05 स्तर अपेक्षित 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित मूल्य 2.59 से कम है । अतः यह स्पष्ट होता है कि पूर्व किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति प्राप्त एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की व्यावसायिक एवं विलिंगी समस्याओं के अलावा उपरोक्त सभी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक,सांवेगिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सारिणी – 3

मध्य किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | संप्राप्ति | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | उच्च | 125 | 1878 | 15.02 | 7.51 | 1.04 | 7.65 |
| | निम्न | 125 | 2873 | 22.18 | 8.92 | | xx |
| सांवेगिक | उच्च | 125 | 1258 | 1.06 | 3.70 | .568 | 5.52 |
| | निम्न | 125 | 1658 | 13.20 | 5.18 | | xx |
| व्यावसायिक | उच्च | 125 | 725 | 5.80 | 3.54 | .36 | 2.88 |
| | निम्न | 125 | 596 | 4.76 | 2.04 | | xx |
| शैक्षिक संबंधी | उच्च | 125 | 983 | 7.86 | 5.84 | .1.03 | 5.55 |
| | निम्न | 125 | 1698 | 13.58 | 9.95 | | xx |
| शारीरिक | उच्च | 125 | 867 | 6.93 | 3.92 | .580 | 1.72 |
| | निम्न | 125 | 992 | 7.93 | 5.17 | | |
| सामाजिक | उच्च | 125 | 1131 | 9.04 | 4.03 | .56 | 3.98 |
| | निम्न | 125 | 1409 | 11.27 | 4.82 | | xx |
| व्यक्तिगत | उच्च | 125 | 816 | 6.52 | 4.11 | .57 | 2.98 |
| | निम्न | 125 | 1028 | 8.22 | 4.89 | | xx |
| विलिंगी | उच्च | 125 | 1368 | 10.94 | 6.06 | .748 | .739 |
| | निम्न | 125 | 1378 | 11.02 | 5.63 | | |

x 0.05 स्तर पर 248डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx 0.01 स्तर पर 248 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

(सारिणी 3) :–

मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारणी–3 में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात कमशः 7.65, 5.52, 2.28, 5.55, 1.72, 3.98, 2.98, एवं .739 हैं । 248 डी0 एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का मूल्य 1.97, एवं 0.01 स्तर पर 2.59 है, उपरोक्त सारिणी के अनुसार मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, सामाजिक, एवं व्यक्तिगत समस्याओं का टी अनुपात जो कि कमशः 7.65, 5.52, 2.28, 5.55, 3.98, 2.98, .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक हैं, क्योंकि उपरोक्त समस्याओं का टी मूल्य .05 स्तर पर दिये गये अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.59 से अधिक है। शारीरिक एवं विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य .कमशः 1.72 एवं .739 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक हैं। क्योंकि शारीरिक एवं विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य .05 स्तर अपेक्षित 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित मूल्य 2.59 से कम है, अर्थात् मध्य किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति प्राप्त एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की शारीरिक एवं विलिंगी समस्याओं के अलावा उपरोक्त सभी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के अन्तर से स्पष्ट होता है कि निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक,सांवेगिक, शैक्षिक सम्बन्धी, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है, एवं व्यावसायिक समस्यायें अपेक्षाकृत कम है ।

## सारिणी – 4

उत्तर किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | संप्राप्ति | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | उच्च | 125 | 2103 | 16.82 | 6.94 | .953 | 9.18 xx |
| | निम्न | 125 | 3197 | 25.57 | 8.10 | | |
| सांवेगिक | उच्च | 125 | 1441 | 11.52 | 3.86 | .51 | 5.82 xx |
| | निम्न | 125 | 1812 | 14.49 | 4.23 | | |
| व्यावसायिक | उच्च | 125 | 706 | 5.64 | 2.46 | .29 | 2.68 x |
| | निम्न | 125 | 803 | 6.42 | 2.14 | | |
| शैक्षिक संबंधी | उच्च | 125 | 1664 | 13.31 | 11.20 | 1.38 | 3.74 xx |
| | निम्न | 125 | 2310 | 18.48 | 10.75 | | |
| शारीरिक | उच्च | 125 | 1081 | 8.65 | 5.14 | .67 | 3.30 xx |
| | निम्न | 125 | 1357 | 10.86 | 5.46 | | |
| सामाजिक | उच्च | 125 | 1150 | 9.20 | 3.96 | .52 | 2.96 xx |
| | निम्न | 125 | 1343 | 11.74 | 4.31 | | |
| व्यक्तिगत | उच्च | 125 | 802 | 6.41 | 4.30 | .62 | 3.72 xx |
| | निम्न | 125 | 1090 | 8.72 | 5.38 | | |
| विलिंगी | उच्च | 125 | 1687 | 13.49 | 5.44 | .706 | 1.74 |
| | निम्न | 125 | 1533 | 12.26 | 5.73 | | |

x 0.05 स्तर पर 248डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx 0.01 स्तर पर 248 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

(सारिणी 4) :—

उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारणी–4 में किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात कमशः 9.18, 5.82, 2.68, 3.74, 3.30, 2.96, 3.72 एवं .259 हैं । उपरोक्त सारिणी के अनुसार उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, सामाजिक, एवं व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक समस्याओं का टी अनुपात जो कि कमशः 9.18, 5.82, 2.68, 3.74, 3.30, 2.96, 3.72 है । .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक हैं, क्योंकि उपरोक्त समस्याओं का टी मूल्य .05 स्तर पर दिये गये अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.59 से अधिक है । विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य 1.74 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है क्योंकि विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है, अर्थात् उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की विलिंगी समस्याओं के अतिरिक्त उपरोक्त सभी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के अन्तर से स्पष्ट होता है कि निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें उत्तर किशोरावस्था की उच्च संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सारिणी – 5

किशोरावस्था में उच्च बुद्विलब्धि एवं सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | बुद्विलब्धि | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | उच्च | 250 | 3876 | 15.50 | 6.81 | .72 | 5.00 xx |
| | सामान्य | 250 | 4715 | 19.10 | 9.22 | | |
| सांवेगिक | उच्च | 250 | 2376 | 9.50 | 4.97 | .42 | 5.73 xx |
| | सामान्य | 250 | 2978 | 11.91 | 4.34 | | |
| व्यावसायिक | उच्च | 250 | 1594 | 6.37 | 3.25 | .23 | 12.47 xx |
| | सामान्य | 250 | 875 | 3.50 | 1.73 | | |
| शैक्षिक संबंधी | उच्च | 250 | 2806 | 11.22 | 10.51 | .94 | .23 |
| | सामान्य | 250 | 2860 | 11.44 | 10.44 | | |
| शारीरिक | उच्च | 250 | 1702 | 6.81 | 3.59 | .36 | 2.80 xx |
| | सामान्य | 250 | 1956 | 7.82 | 4.40 | | |
| सामाजिक | उच्च | 250 | 2211 | 8.84 | 3.96 | .38 | 2.71 xx |
| | सामान्य | 250 | 2468 | 9.87 | 4.54 | | |
| व्यक्तिगत | उच्च | 250 | 1070 | 4.28 | 3.07 | .33 | 13.51 xx |
| | सामान्य | 250 | 2186 | 8.74 | 4.29 | | |
| विलिंगी | उच्च | 250 | 3295 | 13.18 | 5.61 | .57 | 6.96 xx |
| | सामान्य | 250 | 2390 | 9.56 | 6.96 | | |

x 0.05 स्तर पर 498डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.96

xx 0.01 स्तर पर 498 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

<u>सारिणी – 5</u> :

किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक , सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 5 में किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं प्रमाणिक त्रुटि दी गई है । किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात क्रमशः 5.00, 5.73, 12.47, .23, 2.80, 2.71, 13.51, 6.96 है । 498 डी0एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 2.59 है । उपरोक्त सारिणी के अनुसार किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात क्रमशः 5.00 , 5.73, 12.47, 2.71, 2.80, 13.51 एवं 6.96 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है । क्योंकि उपरोक्त समस्याओं का टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से अधिक है । शैक्षिक सम्बन्धी समस्याओं का टी मूल्य .23 दोनों ही स्तर . 05 एवं .01 पर असार्थक है क्योंकि यह .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 दोनों से ही कम है । अर्थात् किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की शैक्षिक संबंधी समस्याओं को छोड़कर अन्य सभी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के अन्तर से स्पष्ट होता है कि किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों से अपेक्षाकृत अधिक है एवं व्यावसायिक समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है एवं व्यावसायिक समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत कम है ।

## सारिणी – 6

किशोरावस्था में उच्च बुद्विलब्धि एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | बुद्विलब्धि | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | उच्च | 250 | 3876 | 15.50 | 6.81 | .75 | 8.24 XX |
| | निम्न | 250 | 5170 | 21.68 | 9.62 | | |
| सांवेगिक | उच्च | 250 | 2376 | 9.50 | 4.97 | .43 | 6.83 XX |
| | निम्न | 250 | 3111 | 12.44 | 4.60 | | |
| व्यावसायिक | उच्च | 250 | 1594 | 6.37 | 3.25 | .27 | 4.51 XX |
| | निम्न | 250 | 1287 | 5.15 | 2.81 | | |
| शैक्षिक संबंधी | उच्च | 250 | 2806 | 11.22 | 10.51 | .97 | .86 |
| | निम्न | 250 | 3016 | 12.06 | 11.12 | | |
| शारीरिक | उच्च | 250 | 1702 | 6.80 | 3.59 | .45 | 3.33 XX |
| | निम्न | 250 | 2074 | 8.30 | 6.18 | | |
| सामाजिक | उच्च | 250 | 2211 | 8.84 | 3.96 | .39 | 4.18 XX |
| | निम्न | 250 | 2670 | 10.68 | 4.72 | | |
| व्यक्तिगत | उच्च | 250 | 1070 | 4.28 | 3.07 | .42 | 5.57 XX |
| | निम्न | 250 | 1707 | 6.82 | 5.87 | | |
| विलिंगी | उच्च | 250 | 3295 | 13.18 | 5.61 | .54 | 5.42 XX |
| | निम्न | 250 | 2563 | 10.25 | 6.37 | | |

X 0.05 स्तर पर 498डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.96

XX 0.01 स्तर पर 498 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

<u>सारिणी –6</u> :

किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 6 में किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गयी है । किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात कमशः 8.24, 6.83, 4.51, .86, 3.33,4.18, 5.57 एवं 5.42 है । 498 डी0एफ0 के लिये टी का अपेक्षित मूल्य 1.96, .05 स्तर पर एवं .01 स्तर पर 2.59 है । उपरोक्त सारिणी के अनुसार किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य कमशः 8.24, 6.83, 4.51, 3.33, 4.18, 5.57 एवं 5.42 है । जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर सार्थक है, क्योंकि उपरोक्त समस्याओं के टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से अधिक है । शैक्षिक संबंधी समस्याओं का टी मूल्य (.86) .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है , क्योंकि शैक्षिक संबंधी समस्याओं का टी मूल्य .86 है जो कि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । अर्थात् किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों को स्कूल संबंधी समस्याओं के अलावा अन्य सभी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि किशोरावस्था में निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है । एवं व्यावसायिक एवं विलिंगी समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत कम है ।

## सारिणी – 7

किशोरावस्था में सामान्य बुद्विलब्धि एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | बुद्विलब्धि | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रमाणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | सामान्य | 250 | 4715 | 18.86 | 9.22 | .70 | 2.60 x |
| | निम्न | 250 | 5170 | 20.68 | 9.52 | | |
| सांवेगिक | सामान्य | 250 | 2978 | 11.91 | 4.08 | .48 | 1.11 |
| | निम्न | 250 | 3111 | 12.44 | 6.58 | | |
| व्यावसायिक | सामान्य | 250 | 875 | 3.50 | 1.73 | .21 | 7.84 xx |
| | निम्न | 250 | 1287 | 5.15 | 2.81 | | |
| शैक्षिक संबंधी | सामान्य | 250 | 2860 | 11.44 | 10.44 | .96 | .65 |
| | निम्न | 250 | 3016 | 12.06 | 11.12 | | |
| शारीरिक | सामान्य | 250 | 1956 | 7.82 | 4.40 | .48 | .99 xx |
| | निम्न | 250 | 2074 | 8.30 | 6.18 | | |
| सामाजिक | सामान्य | 250 | 2468 | 9.87 | 4.54 | .41 | 1.97 |
| | निम्न | 250 | 2670 | 10.68 | 4.72 | | |
| व्यक्तिगत | सामान्य | 250 | 2186 | 8.74 | 4.29 | .46 | 4.17 xx |
| | निम्न | 250 | 1707 | 6.82 | 5.87 | | |
| विलिंगी | सामान्य | 250 | 2390 | 9.56 | 6.96 | .60 | 1.15 |
| | निम्न | 250 | 2563 | 10.25 | 6.37 | | |

x 0.05 स्तर पर 498डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.96

xx 0.01 स्तर पर 498 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

<u>सारिणी — 7</u> :

किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

उपरोक्त सारिणी 7 में किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का अपेक्षित टी मूल्य 2.60, .1.11, 7.84, .65, .99, 1.97, 4.17, 1.15 है । 498 डी0एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 2.59 है । उपरोक्त सारिणी के अनुसार किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं का टी अनुपात क्रमशः 2.60, 7.84 एवं 4.17 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है । क्योंकि उपरोक्त समस्याओं का टी मूल्य .05 स्तर अपेक्षित टी मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से अधिक है । सामाजिक समस्याओं का टी मूल्य (1.97) स्तर पर तो सार्थक हैं क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.96 से अधिक है । किन्तु .01 स्तर असार्थक है क्योंकि .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । सांवेगिक , शैक्षिक संबधी, विलिंगी समस्याओं के टी मूल्य क्रमश 1.11, .65 एवं 1.15 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तार पर असार्थक है क्योंकि उपरोक्त टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । अर्थात् किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों कि पारिवारिक, व्यावसायिक, शारीरिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर है । एवं सांवेगिक शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है । मध्यमानों के अन्तर से स्पष्ट होता है कि किशोरावस्था में निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक एवं शारीरिक समस्यायें सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक हैं एवं व्यक्तिगत समस्यायें कम है ।

## सारिणी – 8

पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | बुद्विलब्धि | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | उच्च | 85 | 1208 | 14.21 | 7.18 | .1.24 | 2.25 |
| | सामान्य | 85 | 1445 | 17.00 | 8.90 | | x |
| सांवेगिक | उच्च | 85 | 663 | 7.80 | 4.92 | .63 | 2.24 |
| | सामान्य | 85 | 783 | 9.21 | 3.17 | | x |
| व्यावसायिक | उच्च | 85 | 476 | 5.60 | 3.36 | .39 | 6.87 |
| | सामान्य | 85 | 248 | 2.92 | 1.18 | | xx |
| शैक्षिक संबंधी | उच्च | 85 | 741 | 8.72 | 11.11 | 1.48 | .59 |
| | सामान्य | 85 | 667 | 7.85 | 7.92 | | |
| शारीरिक | उच्च | 85 | 353 | 4.62 | 2.60 | .55 | 4.69 |
| | सामान्य | 85 | 612 | 7.20 | 4.31 | | xx |
| सामाजिक | उच्च | 85 | 665 | 7.82 | 4.46 | .71 | .48 |
| | सामान्य | 85 | 850 | 10.00 | 4.80 | | |
| व्यक्तिगत | उच्च | 85 | 302 | 3.55 | 2.41 | .51 | 8.05 |
| | सामान्य | 85 | 651 | 7.66 | 3.99 | | xx |
| विलिंगी | उच्च | 85 | 850 | 10.00 | 5.88 | .98 | 4.02 |
| | सामान्य | 85 | 515 | 6.06 | 6.87 | | xx |

X 0.05 स्तर पर 168डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

XX 0.01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

<u>सारिणी — 8</u> :

पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, : शारीरिक, . व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 8 में पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक शैक्षिक सम्बन्धी , शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य कमशः 2.25, 2.24, 6.87, .59, 4.69, .48, 8.05, एवं 4.02 हैं । 168 डी0 एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 1.97 है तथा .01 पर टी का अपेक्षित मूल्य 2.60 है । पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरियों की व्यावसायिक, शारीरिक, व्यक्तिगत एवं विलिगी समस्याओं का टी मूल्य कमशः 6.87, 4.69, 8.05, एवं 4.02, है । जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक हैं । क्योंकि उपरोक्त समस्याओं का टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित का टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से अधिक है । पारिवारिक एवं सांवेगिक समस्याओं का टी मूल्य जो कि कमशः 2.25, एवं 2.24 हैं , .05 स्तर पर तो सार्थक हैं क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है । किन्तु .01 स्तर पर असार्थक हैं क्योकि .01 स्तर पर असार्थक हैं क्योंकि .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से अधिक है । स्कूल सम्बन्धी एवं सामाजिक समस्याओं के टी मूल्य जो कि कमशः .59 एवं .48 है, .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक हैं क्योंकि दोनों ही टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य से कम है । अर्थात् पूर्व किशोरावस्था में उंच्च बुद्धि लब्धि एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक, शारीरिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है एवं शैक्षिक सम्बन्धी एवं सामाजिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता । मध्यमानों में मध्य अन्तर देखने से स्पष्ट होता है कि पूर्व किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शारीरिक, एवं व्यक्तिगत उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक हैं एवं व्यावसायिक एवं विलिंगी समस्यायें उच्च बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत कम है ।

## सारिणी – 9

पूर्व किशोरावस्था में उच्च बुद्विलब्धि एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | बुद्विलब्धि | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | उच्च | 85 | 1208 | 14.21 | 7.18 | 1.07 | .96 |
| | निम्न | 85 | 1296 | 15.24 | 6.71 | | |
| सांवेगिक | उच्च | 85 | 663 | 7.8 | 4.92 | .67 | 4.44 |
| | निम्न | 85 | 917 | 10.78 | 3.74 | | xx |
| व्यावसायिक | उच्च | 85 | 476 | 5.60 | 3.36 | .44 | 5.75 |
| | निम्न | 85 | 261 | 3.07 | 2.28 | | xx |
| शैक्षिक संबंधी | उच्च | 85 | 741 | 8.71 | 11.11 | 1.44 | .89 |
| | निम्न | 85 | 631 | 7.42 | 7.29 | | |
| शारीरिक | उच्च | 85 | 353 | 4.15 | 2.41 | .59 | 6.23 |
| | निम्न | 85 | 666 | 7.83 | 4.84 | | xx |
| सामाजिक | उच्च | 85 | 665 | 7.82 | 4.46 | .73 | 1.99 |
| | निम्न | 85 | 788 | 9.27 | 5.02 | | xx |
| व्यक्तिगत | उच्च | 85 | 302 | 3.55 | 2.60 | .62 | 3.35 |
| | निम्न | 85 | 479 | 5.63 | 5.12 | | xx |
| विलिंगी | उच्च | 85 | 850 | 10.00 | 5.88 | 1.00 | 1.84 |
| | निम्न | 85 | 694 | 8.16 | 6.37 | | x |

x .05 स्तर पर 168डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

x .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

सारिणी – 9 :–

पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 9 में पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गयी है । पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य कमशः .96, 4.44, 5.75, .89, 6.23, 1.99, 3.35 एवं 1.84 है । 168 डी0 एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 2.60 है । पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, एवं व्यक्तिगत समस्याओं के टी मूल्य कमशः 4.44, 5.75, 6.23,एवं 3.35 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है। क्योंकि उपरोक्त समस्याओं के टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से अधिक है। सामाजिक समस्याओं का टी मूल्य 1.99 है जो कि.05स्तर पर सार्थक है क्योंकि 1.99 टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है एवं .01 स्तर पर असार्थक हैं क्योंकि .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है । पारिवारिक ,शैक्षिक सम्बन्धी एवं विलिंगी समस्याओं के टी मूल्य कमशः .96 .89 एवं 1.84 है जो कि .05 स्तर पर अपेक्षित 1.97 टी मूल्य एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम हैं अर्थात पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य के अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि पूर्व किशोरावस्था में निम्न बुद्विलब्धि वाली किशोरों की सांवेगिक, शारीरिक, सामाजिक, एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है एवं व्यावसायिक एवं विलिंगी समस्यायें अपेक्षाकृत कम है ।

## सारिणी – 10

पूर्व किशोरावस्था में सामान्य बुद्धिलब्धि एवं निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | बुद्धिलब्धि | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | सामान्य | 85 | 1445 | 17.00 | 8.90 | 1.21 | 1.45 |
| | निम्न | 85 | 1296 | 15.24 | 6.71 | | |
| सांवेगिक | सामान्य | 85 | 783 | 9.21 | 3.17 | .53 | 2.98 XX |
| | निम्न | 85 | 917 | 1078 | 3.74 | | |
| व्यावसायिक | सामान्य | 85 | 248 | 2.92 | 1.18 | .28 | .53 |
| | निम्न | 85 | 261 | 3.07 | 2.28 | | |
| शैक्षिक संबंधी | सामान्य | 85 | 667 | 7.84 | 7.92 | 1.17 | .35 |
| | निम्न | 85 | 631 | 7.42 | 7.29 | | |
| शारीरिक | सामान्य | 85 | 612 | 7.20 | 3.99 | .68 | .00 |
| | निम्न | 85 | 666 | 7.83 | 4.84 | | |
| सामाजिक | सामान्य | 85 | 850 | 10.00 | 4.80 | .75 | .97 |
| | निम्न | 85 | 788 | 9.27 | 5.02 | | |
| व्यक्तिगत | सामान्य | 85 | 651 | 7.65 | 4.31 | .73 | 2.76 XX |
| | निम्न | 85 | 479 | 5.63 | 5.12 | | |
| विलिंगी | सामान्य | 85 | 515 | 6.05 | 6.87 | 1.07 | 1.97 X |
| | निम्न | 85 | 694 | 8.16 | 7.13 | | |

x .05 स्तर पर 168डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.96

xx .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

<u>सारिणी —10</u> :—

पूर्व किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 10 में पूर्व किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गयी है । पूर्व किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः .1.45, 2.98, .53, .35, 0.00, .97, 2.76, एवं 1.97 है । 168 डी0 एफ0 के लिये टी का अपेक्षित मूल्य 1.97 हैं एवं .01 स्तर पर 2.60 है । उपरोक्त सारिणी में सांवेगिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं का टी मूल्य कमशः 2.98 एवं 2.76, .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से अधिक है । विलिंगी समस्याओं के प्रसंग में टी मूल्य 1.97 है जो कि .01 स्तर पर सार्थक है । पारिवारिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक एवं सामाजिक समस्याओं का टी मूल्य जो कि कमशः 1.45, .53, .35, .97 है, .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है, क्योंकि उपरोक्त समस्याओं के टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1. 97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है। अर्थात पूर्व किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि वाले किशोरों की व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य के अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि पूर्व किशोरावस्था में निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की व्यक्तिगत समस्यायें सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत कम है ।

## सारिणी –11

मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | बुद्विलब्धि | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक EX | मध्यमान Mean | प्रामणिक विचलन S.D. | प्रामाणिक त्रुटि S.E. | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | उच्च | 85 | 1367 | 16.08 | 7.32 | 1.33 | 3.07 xx |
| | सामान्य | 85 | 1715 | 20.17 | 9.83 | | |
| सांवेगिक | उच्च | 85 | 734 | 8.64 | 4.81 | .75 | 3.23 xx |
| | सामान्य | 85 | 940 | 11.06 | 4.96 | | |
| व्यावसायिक | उच्च | 85 | 617 | 7.26 | 3.45 | .41 | 7.60 xx |
| | सामान्य | 85 | 352 | 4.14 | 1.61 | | |
| शैक्षिक संबंधी | उच्च | 85 | 712 | 8.38 | 7.19 | 1.24 | 2.38 x |
| | सामान्य | 85 | 963 | 11.33 | 8.92 | | |
| शारीरिक | उच्च | 85 | 611 | 7.19 | 3.44 | .58 | .26 |
| | सामान्य | 85 | 598 | 7.04 | 4.13 | | |
| सामाजिक | उच्च | 85 | 763 | 8.98 | 3.82 | .69 | .81 |
| | सामान्य | 85 | 811 | 9.54 | 5.13 | | |
| व्यक्तिगत | उच्च | 85 | 354 | 4.16 | 3.20 | .57 | 7.12 xx |
| | सामान्य | 85 | 699 | 8.22 | 4.22 | | |
| विलिंगी | उच्च | 85 | 1156 | 13.60 | 5.63 | .98 | 3.23 xx |
| | सामान्य | 85 | 802 | 9.43 | 7.04 | | |

x .05 स्तर पर 168डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

<u>सारिणी – 11</u> :–

मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 11 में मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गयी है । मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 3.07, 3.23, 7.60, 2.38, .26, .81, 7.12 एवं 3.23 हैं। 168 डी0 एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 1.97 हैं एवं .01 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 2.60 हैं। पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 3.07, 3.23, 7.60, 7.12 एवं 4.23 हैं। जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है, क्योंकि उपरोक्त समस्याओं के टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से अधिक है। शैक्षिक सम्बन्धी समस्याओं का टी मूल्य 2.38 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है । किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है क्योंकि .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है । शारीरिक एवं सामाजिक समस्याओं के टी मूल्य कमशः .26 एवं .81 है जो कि .01 एवं .05 दोनों ही स्तर पर असार्थक हैं। क्योंकि .26 एवं .81 दोनों ही .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है । अर्थात प्राप्त टी अनुपात के आधार पर मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धिलब्धि वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य के अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि मध्य किशोरावस्था में सामान्य बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक सम्बन्धी, एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है एवं व्यावसायिक तथा विलिंगी समस्यायें उच्च बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत कम है ।

## सारिणी -12

मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी ।

| समस्यायें | बुद्विलब्धि | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक EX | मध्यमान Mean | प्रामणिक विचलन S.D. | प्रामाणिक त्रुटि S.E. | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | उच्च | 85 | 1367 | 16.08 | 6.32 | 1.24 | 4.78 |
| | निम्न | 85 | 1871 | 22.01 | 9.62 | | xx |
| सांवेगिक | उच्च | 85 | 734 | 8.64 | 4.81 | .72 | 6.11 |
| | निम्न | 85 | 1108 | 13.04 | 4.61 | | xx |
| व्यावसायिक | उच्च | 85 | 617 | 7.26 | 3.45 | .44 | 5.18 |
| | निम्न | 85 | 423 | 4.98 | 2.19 | | xx |
| शैक्षिक संबंधी | उच्च | 85 | 712 | 8.38 | 7.19 | 1.42 | 2.51 |
| | निम्न | 85 | 1015 | 11.94 | 10.95 | | x |
| शारीरिक | उच्च | 85 | 611 | 7.19 | 3.44 | .82 | .99 |
| | निम्न | 85 | 680 | 8.00 | 6.77 | | |
| सामाजिक | उच्च | 85 | 763 | 8.98 | 3.82 | .69 | 3.33 |
| | निम्न | 85 | 959 | 11.28 | 5.13 | | xx |
| व्यक्तिगत | उच्च | 85 | 354 | 4.16 | 3.20 | .78 | 5.20 |
| | निम्न | 85 | 699 | 8.22 | 6.42 | | xx |
| विलिंगी | उच्च | 85 | 1156 | 13.46 | 5.63 | .84 | 2.77 |
| | निम्न | 85 | 946 | 11.13 | 5.28 | | xx |

x .05 स्तर पर 168डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

<u>सारिणी –12 :–</u>

मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 12 में मध्य किशोरावस्था में उच्च बुद्विलब्धि एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गयी है । मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात कमशः 4.78, 6.11, 5.18, 2.51, .99, 3.33, 5.20,एवं 2.77 है । 168 डी0 एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 1.97 हैं तथा .01 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 2.60 है मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात कमशः 4.78, 6.11, 5.18, 3.33, एवं 5.20 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है। क्योंकि उपरोक्त समस्याओं का टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से अधिक है। शैक्षिक सम्बन्धी समस्याओं का टी मूल्य 2.51 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है क्योंकि 2.51 टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है । किन्तु .01 स्तर पर असार्थक हैं क्योंकि 2.51 टी मूल्य .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है। शारीरिक समस्याओं का टी मूल्य .99 है जो कि .05 एवं .01 दोनो ही स्तर पर असार्थक हैं । क्योंकि शारीरिक समस्याओं का टी मूल्य .99, .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 दोंनों से ही कम है। अर्थात मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्विलब्धि वाले किशोरों की शारीरिक समस्याओं के अतिरिक्त उपरोक्त सभी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य के अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि मध्य किशोरावस्था में निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है एवं व्यावसायिक एवं विलिंगी समस्यायें उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत कम है ।

## सारिणी —13

मध्य किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | बुद्विलब्धि | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक EX | मध्यमान Mean | प्रामणिक विचलन S.D. | प्रामाणिक त्रुटि S.E. | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | सामान्य | 85 | 1715 | 20.18 | 9.63 | 1.40 | 1.31 |
| | निम्न | 85 | 1871 | 22.01 | 8.62 | | |
| सांवेगिक | सामान्य | 85 | 940 | 11.06 | 4.96 | .73 | 2.71 xx |
| | निम्न | 85 | 1108 | 13.04 | 4.61 | | |
| व्यावसायिक | सामान्य | 85 | 352 | 4.14 | 1.61 | .29 | 2.90 xx |
| | निम्न | 85 | 423 | 4.98 | 2.19 | | |
| शैक्षिक संबंधी | सामान्य | 85 | 963 | 11.33 | 8.92 | 1.53 | .40 |
| | निम्न | 85 | 1015 | 11.94 | 10.95 | | |
| शारीरिक | सामान्य | 85 | 598 | 7.04 | 4.13 | .86 | 1.12 |
| | निम्न | 85 | 680 | 8.00 | 6.77 | | |
| सामाजिक | सामान्य | 85 | 811 | 9.54 | 5.13 | .79 | 2.20 xx |
| | निम्न | 85 | 959 | 11.28 | 5.13 | | |
| व्यक्तिगत | सामान्य | 85 | 699 | 8.22 | 4.22 | .83 | .02 |
| | निम्न | 85 | 699 | 8.22 | 6.42 | | |
| विलिंगी | सामान्य | 85 | 802 | 9.43 | 7.04 | .95 | 1.79 |
| | निम्न | 85 | 946 | 11.13 | 5.28 | | |

x .05 स्तर पर 168डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

<u>सारिणी – 13</u> :–

मध्य किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 13 में मध्य किशोरावस्था में सामान्य बुद्विलब्धि एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गयी है । मध्य किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात कमशः 1.31, 2.71, 2.90, .40, 1.12, 2.20, .00, एवं 1.79 है । 168 डी0 एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 1.97 हैं तथा .01 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 2.60 है। मध्य किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, समस्याओं के टी अनुपात कमशः 2.71, 2.90 है। जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है क्योंकि 2.71 एवं 2.90 दोनों ही .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से ज्यादा है । सामाजिक समस्याओं का टी मूल्य 2.20 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक हैं क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक हैं । किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है क्योंकि 2.20 टी मूल्य .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम हैं । पारिवारिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी मूल्य कमशः 1.31, .40 ,1.12, .00, एवं 1.92 है। जो कि .05 एवं .01 दोंनों ही स्तर पर असार्थक हैं , क्योंकि उपरोक्त समस्याओं के टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है, अर्थात मध्य किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि वाले किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । अन्य समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता । मध्यमानों के मध्य के अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि मध्य किशोरावस्था में निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक समस्यायें सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है।

## सारिणी –14

उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धिलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | बुद्धिलब्धि | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक EX | मध्यमान Mean | प्रामणिक विचलन S.D. | प्रामाणिक त्रुटि S.E. | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | उच्च | 85 | 1398 | 16.44 | 6.52 | 1.19 | 3.44 xx |
| | सामान्य | 85 | 1746 | 20.54 | 8.77 | | |
| सांवेगिक | उच्च | 85 | 923 | 10.86 | 5.24 | .74 | 5.03 xx |
| | सामान्य | 85 | 1239 | 14.58 | 4.33 | | |
| व्यावसायिक | उच्च | 85 | 546 | 6.42 | 3.01 | .39 | 4.85 xx |
| | सामान्य | 85 | 385 | 4.53 | 1.95 | | |
| शैक्षिक संबंधी | उच्च | 85 | 1364 | 16.05 | 10.97 | 1.74 | .86 |
| | सामान्य | 85 | 1238 | 14.56 | 11.75 | | |
| शारीरिक | उच्च | 85 | 694 | 8.16 | 4.03 | .71 | .06 |
| | सामान्य | 85 | 690 | 8.12 | 5.12 | | |
| सामाजिक | उच्च | 85 | 860 | 10.12 | 3.22 | .55 | 1.76 |
| | सामान्य | 85 | 947 | 11.09 | 3.88 | | |
| व्यक्तिगत | उच्च | 85 | 413 | 4.86 | 3.35 | .59 | 9.12 xx |
| | सामान्य | 85 | 870 | 10.24 | 4.28 | | |
| विलिंगी | उच्च | 85 | 1303 | 15.32 | 4.56 | .74 | 2.90 xx |
| | सामान्य | 85 | 1120 | 1317 | 5.09 | | |

x .05 स्तर पर 168डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

<u>सारिणी – 14</u> :–

उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 14 में उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गयी है । उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 3.44, 5.03, 4.85, .86, .06, 1.76, 9.12 एवं 2.90 हैं। 168 डी0 एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 1.97 हैं एवं .01 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 2.60 हैं। उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 3.44, 5.03, 4.85, 9.12 एवं 2.90 हैं जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है, क्योंकि उपरोक्त समस्याओं के टी अनुपात .05 स्तर पर अपेक्षित टी अनुपात 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी अनुपात 2.60 से अधिक है। शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक एवं सामाजिक समस्याओं के टी अनुपात कमशः .86, .06, एवं 1.76 है जो कि .05 एवं .01 दोंनों ही स्तर पर असार्थक हैं। क्योंकि .86, .06, एवं 1.76 तीनों ही टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 260 से कम है । अर्थात उत्तर किशोरावस्था उच्च एवं सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य के अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि उत्तर किशोरावस्था में सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक होती है एवं व्यावसायिक तथा विलिंगी समस्यायें उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत कम होती हैं ।

## सारिणी 15

उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | बुद्विलब्धि | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक EX | मध्यमान Mean | प्रामणिक विचलन S.D. | प्रामाणिक त्रुटि S.E. | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | उच्च | 85 | 1398 | 16.44 | 6.52 | 1.36 | 6.12 xx |
| | निम्न | 85 | 2105 | 24.76 | 10.73 | | |
| सांवेगिक | उच्च | 85 | 923 | 10.86 | 5.24 | .82 | 2.60 xx |
| | निम्न | 85 | 1104 | 1299 | 5.43 | | |
| व्यावसायिक | उच्च | 85 | 546 | 6.42 | 3.01 | .44 | .27 |
| | निम्न | 85 | 556 | 6.54 | 2.91 | | |
| शैक्षिक संबंधी | उच्च | 85 | 1364 | 16.05 | 10.97 | 1.74 | .07 |
| | निम्न | 85 | 1375 | 16.18 | 11.69 | | |
| शारीरिक | उच्च | 85 | 694 | 8.16 | 4.03 | .86 | 1.51 |
| | निम्न | 85 | 804 | 9.46 | 6.82 | | |
| सामाजिक | उच्च | 85 | 860 | 10.12 | 3.22 | .72 | 1.31 |
| | निम्न | 85 | 940 | 11.06 | 5.76 | | |
| व्यक्तिगत | उच्च | 85 | 413 | 4.86 | 3.35 | .72 | 2.19 x |
| | निम्न | 85 | 547 | 6.44 | 5.70 | | |
| विलिंगी | उच्च | 85 | 1303 | 15.45 | 4.86 | .83 | 3.58 xx |
| | निम्न | 85 | 1009 | 11.87 | 5.95 | | |

x .05 स्तर पर 168डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

<u>सारिणी – 15</u> :–

उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 15 में उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गयी है । उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 6.12, 2.60, .27, .07, 1.51, 1.31, 2.19, एवं3.58 हैं। 168 डी0 एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 1.97 हैं एवं .01 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 2.60 हैं। उपरोक्त सारिणी में पारिवारिक, सांवेगिक, एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 6.12, 2.60, एवं 3.58 हैं जो कि .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है, क्योंकि उपरोक्त टी अनुपात .05 स्तर पर अपेक्षित टी अनुपात 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी अनुपात 2.60 से है। व्यक्तिगत समस्याओं का टी मूल्य 2.19 है । जो कि .05 स्तर पर सार्थक हैं क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 व्यक्तिगत समस्याओं के टी मूल्य 2.19 से कम है । किन्तु .01 स्तर पर असार्थक हैं क्योंकि .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 व्यक्तिगत समस्याओं के टी मूल्य 2.19 से अधिक हैं। व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, एवं सामाजिक समस्याओं के टी मूल्य कमशः .27, .07, 1.51, एवं 1.31 हैं । जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है क्योंकि उपरोक्त समस्याओं के टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है। अर्थात उत्तर किशोरावस्था उच्च एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर है । मध्यमानों के मध्य अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि उत्तर किशोरावस्था में निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यक्तिगत समस्यायें उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है एवं विलिंगी समस्यायें अपेक्षाकृत कम हैं ।

## सारिणी –16

उत्तर किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | बुद्विलब्धि | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक EX | मध्यमान Mean | प्रामणिक विचलन S.D. | प्रामाणिक त्रुटि S.E. | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | सामान्य | 85 | 1746 | 20.54 | 8.77 | 2.01 | 2.10 xx |
| | निम्न | 85 | 2105 | 24.76 | 9.73 | | |
| सांवेगिक | सामान्य | 85 | 1239 | 14.58 | 4.33 | .75 | 2.12 x |
| | निम्न | 85 | 1104 | 12.99 | 5.43 | | |
| व्यावसायिक | सामान्य | 85 | 385 | 4.53 | 1.95 | .38 | 5.29 xx |
| | निम्न | 85 | 556 | 3.54 | 2.91 | | |
| शैक्षिक संबंधी | सामान्य | 85 | 1238 | 14.56 | 11.75 | 1.80 | .90 |
| | निम्न | 85 | 1375 | 16.18 | 11.79 | | |
| शारीरिक | सामान्य | 85 | 690 | 8.12 | 5.12 | .92 | 1.46 |
| | निम्न | 85 | 804 | 9.46 | 6.82 | | |
| सामाजिक | सामान्य | 85 | 947 | 11.14 | 3.88 | .75 | .10 |
| | निम्न | 85 | 940 | 11.06 | 5.76 | | |
| व्यक्तिगत | सामान्य | 85 | 870 | 10.24 | 4.28 | .77 | 4.94 xx |
| | निम्न | 85 | 547 | 6.44 | 5.70 | | |
| विलिंगी | सामान्य | 85 | 1120 | 13.17 | 5.11 | .848 | 1.54 |
| | निम्न | 85 | 1009 | 11.87 | 5.97 | | |

x .05 स्तर पर 168डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

<u>सारिणी – 16</u> :–

उत्तर किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 16 में उत्तर किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गयी है । उत्तर किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 2.10, 2.12, 5.29, 1.46, .10, 4.94,एवं1.54 हैं। 168 डी0 एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.60 हैं। उत्तर किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं के टी अनुपात कमशः 5.29, एवं 4.94 हैं जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है क्योंकि उपरोक्त दोनों टी अनुपात .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी अनुपात 2.60 से अधिक है, दोनों पारिवारिक एवं सांवेगिक समस्याओं का टी मूल्य 2.10, 2.12 है जो कि .05 स्तर पर तो सार्थक हैं टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है । किन्तु .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है । शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्याओं के टी मूल्य कमशः .90, 1.46, .10, एवं 1.54 हैं जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक हैं क्योंकि उपरोक्त चारों टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 सें कम है। अर्थात उत्तर किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि उत्तर किशोरावस्था में निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, एवं व्यावसायिक समस्यायें सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है। सांवेगिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरो अपेक्षाकृत कम हैं ।

## सारिणी –17

किशोरावस्था में पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | बुद्विलब्धि | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक EX | मध्यमान Mean | प्रामणिक विचलन S.D. | प्रामाणिक त्रुटि S.E. | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | पूर्व | 250 | 3903 | 15.61 | 7.49 | .75 | 5.48 xx |
| | मध्य | 250 | 4931 | 19.72 | 9.20 | | |
| सांवेगिक | पूर्व | 250 | 2563 | 10.25 | 3.91 | .40 | 2.20 x |
| | मध्य | 250 | 2782 | 11.13 | 4.92 | | |
| व्यावसायिक | पूर्व | 250 | 982 | 3.93 | 2.72 | .26 | 4.77 xx |
| | मध्य | 250 | 1292 | 5.17 | 3.02 | | |
| शैक्षिक संबंधी | पूर्व | 250 | 2072 | 8.29 | 8.92 | .83 | 2.98 xx |
| | मध्य | 250 | 2690 | 10.76 | 9.55 | | |
| शारीरिक | पूर्व | 250 | 1702 | 6.80 | 4.08 | .41 | 3.02 x |
| | मध्य | 250 | 1889 | 7.56 | 4.94 | | |
| सामाजिक | पूर्व | 250 | 2134 | 8.54 | 4.79 | .42 | 3.79 xx |
| | मध्य | 250 | 2533 | 10.13 | 4.68 | | |
| व्यक्तिगत | पूर्व | 250 | 1439 | 5.76 | 4.45 | .44 | 2.98 xx |
| | मध्य | 250 | 1768 | 7.07 | 5.36 | | |
| विलिंगी | पूर्व | 250 | 2999 | 11.99 | 6.82 | .57 | 5.57 xx |
| | मध्य | 250 | 2203 | 8.81 | 5.96 | | |

x .05 स्तर पर 498 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.96

xx .01 स्तर पर 498 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

सारिणी – 17 :

किशोरावस्था में पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 17 में पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गयी है । किशोरावस्था में पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात क्रमशः 5.48, 2.20, 4.77, 2.98, 3.02, 3.79, 2.98, एवं 5.57 है । 498 डी0 एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर 2.59 है । किशोरावस्था में पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक, स्कूल संबंधी, सामाजिक, शारीरिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात क्रमशः 5.48, 4.77, 2.98, 3.79, 2.98, 3.02एवं 5.57 है जो कि .05 एवं .01 स्तर पर सार्थक है क्योंकि उपरोक्त मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से अधिक है । सांवेगिक समस्या का टी मूल्य 2.20 है जो कि.05 स्तर पर सार्थक है क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.96 से अधिक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है क्योंकि 2.20 ही टी मूल्य .01 स्तर पर अपेक्षित मूल्य 2.59 से कम है । अर्थात किशोरावस्था में पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य के अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि किशोरावस्था में मध्य किशोरावस्था वाली किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सारिणी – 18

किशोरावस्था में मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | किशोरा–वस्था | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक EX | मध्यमान Mean | प्रामणिक विचलन S.D. | प्रामाणिक त्रुटि S.E. | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | मध्य | 250 | 4931 | 19.72 | 9.20 | .82 | 3.58 xx |
| | उत्तर | 250 | 4197 | 16.79 | 9.14 | | |
| सांवेगिक | मध्य | 250 | 2782 | 11.13 | 4.92 | .44 | 4.39 xx |
| | उत्तर | 250 | 3266 | 13.06 | 4.99 | | |
| व्यावसायिक | मध्य | 250 | 1292 | 5.17 | 3.02 | .26 | 3.00 xx |
| | उत्तर | 250 | 1487 | 5.95 | 2.72 | | |
| शैक्षिक संबंधी | मध्य | 250 | 2690 | 10.76 | 9.55 | .96 | 5.36 xx |
| | उत्तर | 250 | 3977 | 15.91 | 11.87 | | |
| शारीरिक | मध्य | 250 | 1889 | 7.56 | 4.94 | .46 | 2.59 xx |
| | उत्तर | 250 | 2188 | 8.75 | 5.40 | | |
| सामाजिक | मध्य | 250 | 2533 | 10.13 | 4.68 | .40 | 2.10 x |
| | उत्तर | 250 | 2743 | 10.97 | 4.21 | | |
| व्यक्तिगत | मध्य | 250 | 1768 | 7.07 | 5.36 | .47 | .23 |
| | उत्तर | 250 | 1796 | 7.18 | 5.25 | | |
| विलिंगी | मध्य | 250 | 2203 | 8.81 | 5.96 | .50 | 9.9 xx |
| | उत्तर | 250 | 3441 | 13.76 | 5.30 | | |

x .05 स्तर पर 498 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.96

xx .01 स्तर पर 498 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

सारिणी – 18 :–

किशोरावस्था में मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 18 में किशोरावस्था में मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गयी है । किशोरावस्था में मध्य एवं उत्तार किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 3.58, 4.39, 3.00, 5.36, 2.59, 2.10, .23, 9.9, है । 498 डी0 एफ0 के लिये टी का अपेक्षित मूल्य .05 स्तर पर 1.96 एवं .01 स्तर पर 2.59 है । किशोरावस्था में मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक ,सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 3.58, 4.39, 3.00, 5.36, 2.59, एवं 4.48 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक हैं। क्योंकि उपरोक्त समस्याओं के टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । सामाजिक समस्याओं का टी मूल्य 2.10. हैं जो कि .05 स्तर पर सार्थक है क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी का मूल्य 1.96 से अधिक है किन्तु .01 स्तार पर असार्थक है क्योंकि 2.10 टी मूल्य .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । व्यक्तिगत समस्याओं के टी मूल्य कमशः .23 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है क्योंकि टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.96 एवं.01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । अर्थात किशोरावस्था में मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्यायें मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है । मध्यमानों के मध्य के अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि किशोरावस्था में मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षा कम है ।

## सारिणी –19

किशोरावस्था में पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | किशोरा–वस्था | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक EX | मध्यमान Mean | प्रामाणिक विचलन S.D. | प्रामाणिक त्रुटि S.E. | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | पूर्व | 250 | 3903 | 15.61 | 7.49 | .75 | 1.57 |
| | उत्तर | 250 | 4197 | 16.79 | 9.14 | | .. |
| सांवेगिक | पूर्व | 250 | 2563 | 10.25 | 3.91 | .85 | 3.31 |
| | उत्तर | 250 | 3266 | 13.06 | 4.99 | | xx |
| व्यावसायिक | पूर्व | 250 | 982 | 3.93 | 2.72 | .24 | 8.42 |
| | उत्तर | 250 | 1487 | 5.95 | 2.72 | | xx |
| शैक्षिक संबंधी | पूर्व | 250 | 2072 | 8.29 | 8.92 | .97 | 7.86 |
| | उत्तर | 250 | 3977 | 15.91 | 11.87 | | xx |
| शारीरिक | पूर्व | 250 | 1702 | 6.81 | 4.08 | .43 | 4.51 |
| | उत्तर | 250 | 2188 | 8.75 | 5.40 | | xx |
| सामाजिक | पूर्व | 250 | 2134 | 8.54 | 4.79 | .40 | 6.08 |
| | उत्तर | 250 | 2743 | 10.97 | 4.21 | | xx |
| व्यक्तिगत | पूर्व | 250 | 1439 | 5.76 | 4.45 | .44 | 3.23 |
| | उत्तर | 250 | 1796 | 7.18 | 5.25 | | xx |
| विलिंगी | पूर्व | 250 | 2999 | 12.00 | 6.82 | .55 | 3.2 |
| | उत्तर | 250 | 3441 | 13.76 | 5.30 | | xx |

x .05 स्तर पर 498 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.96

xx .01 स्तर पर 498 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

<u>सारिणी — 19</u> :—

किशोरावस्था में पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तार होता है ।

उपरोक्त सारिणी 19 में किशोरावस्था में पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गयी है । किशोरावस्था में पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तार किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात कमशः 1.57, 3.31, 8.42, 7.86, 4.51, 6.08, 3,23,एवं 3.2 है । 498 डी0 एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर 2.59 है । किशोरावस्था में पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की उपरोक्त सभी समस्याओं के टी अनुपात .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक हैं। क्योंकि उपरोक्त सभी समस्याओं के टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से अधिक है । अर्थात किशोरावस्था में पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य के अन्तार को देखने से स्पष्ट होता है कि किशोरावस्था में उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षा अधिक है ।

## सारिणी –20

उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | किशोरावस्था | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि. | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | पूर्व | 125 | 1544 | 12.35 | 6.20 | .83 | 3.98 xx |
| | मध्य | 125 | 1957 | 15.66 | 6.93 | | |
| सांवेगिक | पूर्व | 125 | 1149 | 9.19 | 2.90 | .49 | .26 |
| | मध्य | 125 | 1132 | 9.06 | 4.74 | | |
| व्यावसायिक | पूर्व | 125 | 520 | 4.16 | 2.72 | .40 | 3.90 xx |
| | मध्य | 125 | 715 | 5.72 | 3.51 | | |
| शैक्षिक संबंधी | पूर्व | 125 | 825 | 6.60 | 8.91 | .99 | 1.17 |
| | मध्य | 125 | 970 | 7.76 | 6.62 | | |
| शारीरिक | पूर्व | 125 | 662 | 5.30 | 3.20 | .46 | 3.91 xx |
| | मध्य | 125 | 887 | 7.10 | 4.02 | | |
| सामाजिक | पूर्व | 125 | 919 | 7.35 | 4.52 | .55 | 3.05 xx |
| | मध्य | 125 | 1129 | 9.03 | 4.13 | | |
| व्यक्तिगत | पूर्व | 250 | 577 | 4.62 | 3.57 | .50 | 2.12 x |
| | मध्य | 250 | 710 | 5.68 | 4.23 | | |
| विलिंगी | पूर्व | 250 | 1112 | 8.89 | 6.71 | .85 | 3.35 xx |
| | मध्य | 250 | 1468 | 11.74 | 6.66 | | |

x .05 स्तर पर 248 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 248 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

<u>सारिणी – 20</u> :

उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तरहोता है ।

उपरोक्त सारिणी 20 में उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी, समस्याओं का टी अनुपात कमशः 3.98 , .26, 3.90, 1,17, 3,91, 3,05, 2,12 एवं 3,35 है । 248 डी0एफ0 के लिये टी का अपेक्षित मूल्य 0.5 स्तर पर 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.59 है । उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरो की पारिवारिक, व्यावसायिक, शारीरिक सामाजिक एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात कमशः 3.98. 3.90, 3,91, 3,05 एवं 3.35 है । जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है क्योंकि उपरोक्त समस्याओं के टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से अधिक है । व्यक्तिगत समस्याओं का टी मूल्य 2.12 है जो कि .05 स्तर पर .सार्थक है । क्योंकि 2.12 टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है एवं .01 स्तर पर असार्थक है क्योंकि .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । सांवेगिक एवं शैक्षिक संबंधी समस्याओं का टी अनुपात कमशः 1.26 एवं 1.17 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है क्योंकि .27 एवं 1.17 दोनों ही टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । अर्थात् उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर देखने से स्पष्ट होता है कि उच्च संप्राप्ति प्राप्त मध्य किशोरावस्था वाले किशोरो की पारिवारिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सारिणी –21

उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाज़िक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | किशोरा–वस्था | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक EX | मध्यमान Mean | प्रामणिक विचलन S.D. | प्रामाणिक त्रुटि S.E. | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | पूर्व | 125 | 1544 | 12.35 | 6.20 | .90 | 4.7 xx |
| | उत्तर | 125 | 2073 | 16.58 | 7.93 | | |
| सांवेगिक | पूर्व | 125 | 1149 | 9.19 | 3.89 | .54 | 4.28 xx |
| | उत्तर | 125 | 1438 | 11.50 | 4.56 | | |
| व्यावसायिक | पूर्व | 125 | 520 | 4.16 | 2.72 | .35 | 3.91 xx |
| | उत्तर | 125 | 691 | 5.53 | 2.76 | | |
| शैक्षिक संबंधी | पूर्व | 125 | 825 | 6.60 | 8.91 | 1.29 | 5.08 xx |
| | उत्तर | 125 | 1644 | 13.15 | 11.29 | | |
| शारीरिक | पूर्व | 125 | 662 | 5.30 | 3.20 | .54 | 4.35 xx |
| | उत्तर | 125 | 956 | 7.65 | 5.11 | | |
| सामाजिक | पूर्व | 125 | 919 | 7.35 | 4.52 | .54 | 5.28 xx |
| | उत्तर | 125 | 1275 | 10.20 | 3.96 | | |
| व्यक्तिगत | पूर्व | 125 | 577 | 4.62 | 3.57 | .50 | 2.88 xx |
| | उत्तर | 125 | 758 | 6.06 | 4.30 | | |
| विलिंगी | पूर्व | 125 | 1112 | 8.90 | 6.93 | .76 | 6.01 xx |
| | उत्तर | 125 | 1684 | 13.47 | 4.96 | | |

x .05 स्तर पर 248 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 248 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

सारिणी — 21 :

उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं बिलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 21 में उच्च संप्राप्ति पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक सामाजिक, व्यक्तिगत एवं बिलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात क्रमशः 4.7, 4.28, 3.91.5.08 4.35, 5.28, 2.88 एव 6.01 है । 248 डी0एफ0 के टी का अपेक्षित मूल्य .05 स्तर पर 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.59 है । उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की उपरोक्त सभी समस्याओं के टी अनुपात .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है । क्योंकि उपरोक्त सभी समस्याओं के टी अनुपात .05 स्तर पर अपेक्षित टी अनुपात 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से अधिक है । अर्थात् उच्च संप्राप्ति पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य के अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि उच्च संप्राप्ति प्राप्त उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सारिणी –22

उच्च संप्राप्ति प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | किशोरा–वस्था | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक EX | मध्यमान Mean | प्रामणिक विचलन S.D. | प्रामाणिक त्रुटि S.E. | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | मध्य | 125 | 1957 | 15.66 | 10.45 | 1.21 | .76 |
| | उत्तर | 125 | 2073 | 16.58 | 8.61 | | |
| सांवेगिक | मध्य | 125 | 1132 | 9.06 | 3.74 | .53 | 4.60 XX |
| | उत्तर | 125 | 1438 | 11.50 | 4.56 | | |
| व्यावसायिक | मध्य | 125 | 715 | 5.72 | 3.51 | .40 | .48 |
| | उत्तर | 125 | 691 | 5.53 | 2.76 | | |
| शैक्षिक संबंधी | मध्य | 125 | 970 | 7.76 | 6.62 | 1.17 | 4.61 xx |
| | उत्तर | 125 | 1644 | 13.15 | 11.29 | | |
| शारीरिक | मध्य | 125 | 887 | 7.10 | 4.02 | .58 | .95 |
| | उत्तर | 125 | 956 | 7.65 | 5.11 | | |
| सामाजिक | मध्य | 125 | 1129 | 9.03 | 4.13 | .51 | 2.29 x |
| | उत्तर | 125 | 1275 | 10.20 | 3.96 | | |
| व्यक्तिगत | मध्य | 125 | 825 | 6.60 | 8.99 | .99 | .54 |
| | उत्तर | 125 | 758 | 6.06 | 6.62 | | |
| विलिंगी | मध्य | 125 | 1468 | 11.74 | 6.66 | .77 | 2.25 xx |
| | उत्तर | 125 | 1684 | 13.47 | 5.44 | | |

x .05 स्तर पर 248 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 248 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

सारिणी – 22 :

उच्च संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 22 में उच्च संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों को पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । उच्च संप्राप्ति मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाली किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात क्रमशः .76, 4.60, .48, 4.61, .95, 2.39, .54 एवं 2.25 है । 248 डी0एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 2.59 है । उच्च संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक एवं शैक्षिक संबंधी समस्याओं का ही अनुपात क्रमशः 4.60, 4.61 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है, क्योंकि उपरोक्त दोनों समस्याओं के टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से अधिक है । सामाजिक एव विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य 2.29 एवं 2.25 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है क्योंकि ये टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है क्योंकि .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । पारिवारिक , व्यावसायिक, शारीरिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं के टी मूल्य क्रमशः .76, .48, .95 एवं .54 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है क्योकि चारों ही टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है अर्थात् उच्च संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, शैक्षिक सम्बन्धी , सामाजिक एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है किन्तु पारिवारिक व्यावसायिक, शारीरिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य के अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि उच्च संप्राप्ति में उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी एवं विलिंगी समस्यायें मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक होती है एवं सामाजिक समस्यायें मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत कम होती है ।

## सारिणी –23

निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | किशोरावस्था | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक EX | मध्यमान Mean | प्रामणिक विचलन S.D. | प्रामाणिक त्रुटि S.E. | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | पूर्व | 125 | 1957 | 15.66 | 7.47 | .97 | 3.70 |
| | मध्य | 125 | 1509 | 12.07 | 7.93 | | xx |
| सांवेगिक | पूर्व | 125 | 1149 | 9.19 | 3.89 | .54 | 4.28 |
| | मध्य | 125 | 1438 | 11.50 | 4.56 | | xx |
| व्यावसायिक | पूर्व | 125 | 462 | 3.70 | 2.70 | .32 | 2.88 |
| | मध्य | 125 | 577 | 4.62 | 2.34 | | xx |
| शैक्षिक संबंधी | पूर्व | 125 | 1247 | 9.98 | 8.61 | 1.21 | 3.12 |
| | मध्य | 125 | 1720 | 13.76 | 10.45 | | xx |
| शारीरिक | पूर्व | 125 | 1024 | 8.19 | 4.34 | .64 | .27 |
| | मध्य | 125 | 1002 | 8.02 | 5.67 | | |
| सामाजिक | पूर्व | 125 | 1215 | 9.72 | 4.75 | .61 | 2.48 |
| | मध्य | 125 | 1404 | 11.23 | 4.92 | | x |
| व्यक्तिगत | पूर्व | 125 | 862 | 6.90 | 4.90 | .66 | 2.36 |
| | मध्य | 125 | 1058 | 8.46 | 5.59 | | x |
| विलिंगी | पूर्व | 125 | 662 | 5.30 | 3.20 | .54 | 4.35 |
| | मध्य | 125 | 956 | 7.65 | 5.11 | | xx |

x .05 स्तर पर 248 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 248 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

**सारिणी – 23** :

निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 23 में निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात क्रमशः 3.70 , 4.28, 2.88, 3.12, .27, 2.48, 2.36 एवं 4.35 है । 248 डी0एफ0 के लिये ही टी का अपेक्षित मूल्य .05 स्तर पर 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.59 है । निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात क्रमशः 3.70, 4.28, 2.88, 3.12 एवं 4.35 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है क्योंकि उपरोक्त पाँचों टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य2.59 से अधिक है । सामाजिक समस्याओं एवं व्यक्तिगत समस्याओं के टी मूल्य क्रमशः 2.48 एवं 2.36 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है क्योंकि दोनों ही टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है । किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है क्योंकि 2.48 एवं 2.36 दोनों ही टी अनुपात .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । शारीरिक समस्याओं का टी मूल्य .27 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है अर्थात् निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की शारीरिक समस्याओं के अतिरिक्त उपरोक्त सभी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है मध्यमानों के मध्य अन्तर देखने से स्पष्ट होता है कि निम्न संप्राप्ति प्राप्त मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोंरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सारिणी –24

निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | किशोरा–वस्था | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक EX | मध्यमान Mean | प्रामणिक विचलन S.D. | प्रामाणिक त्रुटि S.E. | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | पूर्व | 125 | 1957 | 15.66 | 8.61 | 1.21 | 7.62 |
| | उत्तर | 125 | 3111 | 24.89 | 10.45 | | xx |
| सांवेगिक | पूर्व | 125 | 1149 | 9.19 | 4.34 | .64 | 5.66 |
| | उत्तर | 125 | 1602 | 12.81 | 5.67 | | xx |
| व्यावसायिक | पूर्व | 125 | 462 | 3.70 | 2.70 | .34 | 7.85 |
| | उत्तर | 125 | 796 | 6.37 | 2.60 | | xx |
| शैक्षिक संबंधी | पूर्व | 125 | 1247 | 9.98 | 8.61 | 1.24 | 7.00 |
| | उत्तर | 125 | 2333 | 18.66 | 10.84 | | xx |
| शारीरिक | पूर्व | 125 | 1024 | 8.19 | 4.34 | .49 | 3.41 |
| | उत्तर | 125 | 1232 | 9.86 | 5.44 | | xx |
| सामाजिक | पूर्व | 125 | 1215 | 9.72 | 4.75 | .42 | 481 |
| | उत्तर | 125 | 1468 | 11.74 | 4.32 | | xx |
| व्यक्तिगत | पूर्व | 125 | 862 | 6.90 | 4.90 | .65 | 2.58 |
| | उत्तर | 125 | 1072 | 8.58 | 5.38 | | x |
| विलिंगी | पूर्व | 125 | 662 | 5.30 | 6.62 | 1.17 | 6.71 |
| | उत्तर | 125 | 1644 | 13.15 | 11.29 | | xx |

x .05 स्तर पर 248 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 248 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

<u>सारिणी – 24</u> :

निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक,शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 24 में निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुंपात कमशः 7.62, 5.66,7.85 7.00, 3.41, 4.81, 2.58 एवं 6.71 है । 248 डी0एफ0 के लिये टी का अपेक्षित मूल्य .05 स्तर पर 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.59 है निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 7.62, 5.66, 7.85, 7.00, 3.41, 4.81 एवं 6.71 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है क्योंकि उपरोक्त टी अनुपात .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से अधिक है । व्यक्तिगत समस्याओं का टी मूल्य 2.58 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है क्योंकि .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । अर्थात निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की उपरोक्त सभी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर देखने से स्पष्ट होता है कि निम्न संप्राप्ति प्राप्त उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक होती है ।

## सारिणी –25

निम्न संप्राप्ति प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | किशोरा–वस्था | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक EX | मध्यमान Mean | प्रामणिक विचलन S.D. | प्रामाणिक त्रुटि S.E. | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | मध्य | 125 | 1509 | 12.07 | 8.96 | .80 | 16.02 xx |
| | उत्तर | 125 | 3111 | 24.89 | 8.40 | | |
| सांवेगिक | मध्य | 125 | 1438 | 11.50 | 5.10 | .63 | 2.08 x |
| | उत्तर | 125 | 1602 | 12.81 | 4.93 | | |
| व्यावसायिक | मध्य | 125 | 577 | 4.61 | 2.34 | .31 | 5.68 xx |
| | उत्तर | 125 | 796 | 6.37 | 2.60 | | |
| शैक्षिक संबंधी | मध्य | 125 | 1720 | 13.76 | 10.45 | 1.35 | 3.63 xx |
| | उत्तर | 125 | 2333 | 18.66 | 10.84 | | |
| शारीरिक | मध्य | 125 | 1002 | 8.02 | 5.67 | .70 | 2.63 xx |
| | उत्तर | 125 | 1232 | 9.86 | 5.44 | | |
| सामाजिक | मध्य | 125 | 1404 | 11.23 | 4.92 | .58 | .88 |
| | उत्तर | 125 | 1468 | 11.74 | 4.32 | | |
| व्यक्तिगत | मध्य | 125 | 1058 | 8.46 | 5.59 | .69 | .17 |
| | उत्तर | 125 | 1072 | 8.58 | 5.38 | | |
| विलिंगी | मध्य | 125 | 956 | 7.65 | 5.53 | .65 | 8.46 xx |
| | उत्तर | 125 | 1644 | 13.15 | 4.73 | | |

x .05 स्तर पर 248 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 248 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

<u>सारिणी—25</u> :

निम्न संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 25 में निम्न संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । निम्न संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 16.02, 2.08, 5.68, 3.63, 2.63, .88, .17 एवं 0.46 है । 248 डी0एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 2.59 है निम्न संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक एवं विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य कमशः 5.68, 3.63, 2.63 एवं 8.46 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है । क्योंकि उपरोक्त चारों टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से अधिक है । सांवेगिक समस्याओं का टी मूल्य 2.25 है जो कि .05 स्तर पर तो सार्थक है क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है किन्तु .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । सांवेगिक समस्याओं का टी मूल्य 2.08 है जो कि .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है क्योंकि –.01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं के टी मूल्य कमशः .88 एवं .17 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है, क्योंकि दोनों ही टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । अर्थात् निम्न संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्थउा वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक , शैक्षिक संबंधी, शारीरिक एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है किन्तु सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता । मध्यमानों के मध्य के अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि निम्न संप्राप्ति उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक एवं विलिंगी समस्यायें मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सारिणी –26

उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | किशोरावस्था | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक EX | मध्यमान Mean | प्रामणिक विचलन S.D. | प्रामाणिक त्रुटि S.E. | आलोचनात्मक अनुपात C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | पूर्व | 85 | 1178 | 13.86 | 7.18 | 1.11 | 1.87 |
| | मध्य | 85 | 1355 | 15.94 | 7.32 | | |
| सांवेगिक | पूर्व | 85 | 748 | 8.80 | 4.92 | .75 | .21 |
| | मध्य | 85 | 734 | 8.64 | 4.81 | | |
| व्यावसायिक | पूर्व | 85 | 476 | 5.60 | 3.36 | .52 | 3.19 xx |
| | मध्य | 85 | 617 | 7.26 | 3.45 | | |
| शैक्षिक संबंधी | पूर्व | 85 | 741 | 8.72 | 11.12 | 1.44 | .24 |
| | मध्य | 85 | 712 | 8.38 | 7.19 | | |
| शारीरिक | पूर्व | 85 | 393 | 4.62 | 2.41 | .46 | 5.59 xx |
| | मध्य | 85 | 611 | 7.19 | 3.44 | | |
| सामाजिक | पूर्व | 85 | 580 | 6.82 | 4.46 | .64 | 3.38 xx |
| | मध्य | 85 | 763 | 8.98 | 3.82 | | |
| व्यक्तिगत | पूर्व | 85 | 302 | 3.55 | 2.60 | .44 | 1.39 |
| | मध्य | 85 | 354 | 4.16 | 3.20 | | |
| विलिंगी | पूर्व | 85 | 850 | 10.00 | 5.88 | .88 | 3.93 xx |
| | मध्य | 85 | 1144 | 13.46 | 5.63 | | |

x .05 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

सारिणी — 26 :

उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक, एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 26 में उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 1.87, .21, 3.19, .24, 5.59, 3.38,1.39,एवं 3.93 है । 168 डी0एफ0 के लिये .05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.60 है । उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 3.19, 5.59, 3.38, एवं 3.93 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है । क्योंकि उपरोक्त चारों टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से अधिक है । पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी एवं व्यक्तिगत समस्याओं का टी मूल्य कमशः 1.87, .21, .24, एवं 1.39 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है क्योंकि ये चारों टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है । अर्थात उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है किन्तु पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी एवं व्यक्तिगत समस्याओं में अधिक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर देखने से स्पष्ट होता है कि उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सारिणी -27

उच्च बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था के किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | किशोरा-वस्था | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | पूर्व | 85 | 1178 | 13.86 | 7.18 | 1.11 | 2.21 |
| | उत्तर | 85 | 1387 | 16.31 | 7.32 | | x |
| सांवेगिक | पूर्व | 85 | 748 | 8.80 | 4.92 | .78 | 2.64 |
| | उत्तर | 85 | 923 | 10.86 | 5.24 | | xx |
| व्यावसायिक | पूर्व | 85 | 476 | 5.60 | 3.36 | .49 | 1.67 |
| | उत्तर | 85 | 546 | 6.42 | 3.01 | | |
| शैक्षिक संबंधी | पूर्व | 85 | 741 | 8.72 | 11.11 | 1.69 | 4.34 |
| | उत्तर | 85 | 1364 | 16.05 | 10.97 | | xx |
| शारीरिक | पूर्व | 85 | 393 | 4.62 | 2.41 | .51 | 6.94 |
| | उत्तर | 85 | 694 | 8.16 | 4.03 | | xx |
| सामाजिक | पूर्व | 85 | 580 | 6.82 | 4.46 | .60 | 5.50 |
| | उत्तर | 85 | 860 | 10.12 | 3.22 | | xx |
| व्यक्तिगत | पूर्व | 85 | 302 | 3.55 | 2.60 | .44 | 2.97 |
| | उत्तर | 85 | 413 | 4.86 | 3.20 | | xx |
| विलिंगी | पूर्व | 85 | 935 | 11.00 | 5.88 | .81 | 5.49 |
| | उत्तर | 85 | 1313 | 15.45 | 4.56 | | xx |

x .05 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

सारिणी – 27 :

उच्च बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था के किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 27 में उच्च बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था के किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । उच्च बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 2.12, 2.64, 1.67, 4.34, 6.94, 5. 50, 2.97, एवं 6.72 है । 168 डी0एफ0 के लिये टी का अपेक्षित मूल्य .05 स्तर पर 1.97 है एवं .01 स्तर पर 2.60 है । उच्च बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात कमशः 2.64, 4.34, 6.94, 5.50, 2.97, एवं 6.72 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है । क्योंकि उपरोक्त टी मूल्य 2.60 से अधिक है । पारिवारिक समस्याओं का टी मूल्य कमशः 2.21 है जो कि . 05 स्तर पर सार्थक है, क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है । किन्तु .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है । व्यावसायिक समस्याओं का टी मूल्य 1.67 है जो कि 0.5 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है क्योंकि व्यावसायिक समस्याओं का टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है । अर्थात उच्च बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। मध्यमानों के मध्य अन्तर देखने से स्पष्ट होता है कि उच्च बुद्धिलब्धि प्राप्त उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सारिणी —28

**उच्च बुद्धिलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।**

| समस्यायें | किशोरा–वस्था | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | मध्य | 85 | 1355 | 15.94 | 7.32 | 1.06 | .35 |
| | उत्तर | 85 | 1387 | 16.31 | 6.52 | | |
| सांवेगिक | मध्य | 85 | 748 | 8.8 | 4.81 | .77 | 2.67 xx |
| | उत्तर | 85 | 923 | 10.85 | 5.24 | | |
| व्यावसायिक | मध्य | 85 | 617 | 7.26 | 3.45 | .50 | 1.68 |
| | उत्तर | 85 | 546 | 6.42 | 3.01 | | |
| शैक्षिक संबंधी | मध्य | 85 | 712 | 8.38 | 7.19 | 1.42 | 5.40 xx |
| | उत्तर | 85 | 1364 | 16.05 | 10.97 | | |
| शारीरिक | मध्य | 85 | 611 | 7.19 | 3.44 | .57 | 1.70 |
| | उत्तर | 85 | 694 | 8.16 | 4.03 | | |
| सामाजिक | मध्य | 85 | 763 | 8.98 | 3.82 | .54 | 2.11 xx |
| | उत्तर | 85 | 860 | 10.12 | 3.22 | | |
| व्यक्तिगत | मध्य | 85 | 354 | 4.16 | 3.20 | .50 | 1.40 |
| | उत्तर | 85 | 413 | 4.86 | 3.35 | | |
| विलिंगी | मध्य | 85 | 1144 | 13.45 | 4.92 | .75 | 2.66 x |
| | उत्तर | 85 | 1313 | 15.44 | 4.81 | | |

x .05 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2

<u>सारिणी – 28</u> :

उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तार किशोरावस्था के किशोरों की सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तार होता है ।

उपरोक्त सारिणी 28 में उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तार किशोरावस्था के किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तार किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः .35, 2.67, 1. 68, 5.40, 1.70, 2.11, 1.40, एवं 2.66 है । 168 डी0एफ0 के लिये टी का अपेक्षित मूल्य .05 स्तार पर 1.97 एवं .01 स्तार पर 2.60 है । उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तार किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, समस्याओं का टी अनुपात कमशः 2.67 एवं 5.40 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तार पर सार्थक है । क्योंकि 2.67 एवं 5.40 दोनों ही टी मूल्य .05 स्तार पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से अधिक है । सामाजिक, एवं विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य कमशः 2.11 एवं 2.52 है । जो कि .05 स्तर पर सार्थक है, क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है एवं .01 स्तार पर असार्थक है क्योंकि .01 स्तार पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है । पारिवारिक, व्यावसायिक, शारीरिक, एवं व्यक्तिगत समस्याओं का टी मूल्य कमशः .35, 1.68, 1.70, एवं 1.40, है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है । क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित मूल्य 1.97 एवं .01 स्तार पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 दोनों ही उपरोक्त चारों टी से अधिक है । अर्थात उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तार किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तार होता है। मध्यमानों के मध्य अन्तार देखने से स्पष्ट होता है कि उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त उत्तार किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, एवं विलिंगी समस्यायें मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सारिणी –29

सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | किशोरावस्था | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | पूर्व | 85 | 1313 | 15.45 | 8.90 | 1.44 | 3.09 x |
| | मध्य | 85 | 935 | 11.00 | 9.83 | | |
| सांवेगिक | पूर्व | 85 | 868 | 10.21 | 3.17 | .64 | 1.33 |
| | मध्य | 85 | 940 | 11.06 | 4.96 | | |
| व्यावसायिक | पूर्व | 85 | 248 | 2.92 | 1.18 | .22 | .18 |
| | मध्य | 85 | 252 | 2.96 | 1.61 | | |
| शैक्षिक संबंधी | पूर्व | 85 | 667 | 7.85 | 7.92 | 1.29 | 2.70 xx |
| | मध्य | 85 | 963 | 11.33 | 8.92 | | |
| शारीरिक | पूर्व | 85 | 612 | 7.20 | 3.99 | .62 | .26 |
| | मध्य | 85 | 598 | 7.04 | 4.13 | | |
| सामाजिक | पूर्व | 85 | 765 | 9.00 | 4.80 | .76 | .71 |
| | मध्य | 85 | 811 | 9.54 | 5.13 | | |
| व्यक्तिगत | पूर्व | 85 | 651 | 7.66 | 4.31 | .65 | .86 |
| | मध्य | 85 | 699 | 8.22. | 4.22 | | |
| विलिंगी | पूर्व | 85 | 712 | 8.38 | 6.87 | 1.07 | 7.16 xx |
| | मध्य | 85 | 1364 | 16.05 | 7.04 | | |

x .05 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

<u>सारिणी – 29</u> :

सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

उपरोक्त सारिणी 29 में सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । सामान्य बुद्विलब्धि वाले पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 3.09, 1.33, .18, 2. 70, .26, .71, .86, एवं 7.16 है । 168 डी0एफ0 के लिये टी का अपेक्षित मूल्य .05 स्तर पर 1.97 एवं . 01 स्तर पर 2.60 है । उपरोक्त सारिणी में पारिवारिक, शैक्षिक संबंधी, समस्याओं एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 3.09, 2.70 एवं 7.16 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है । क्योंकि 2.70 एवं 3.04 दोनों ही टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से अधिक है । सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक, एवं व्यक्तिगत समस्याओं के टी मूल्य कमशः 1.33, .18, .26, .71, .86, है जो कि .05 एवं दोनों ही स्तर पर असार्थक है, क्योंकि उपरोक्त पॉचो टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है । अर्थात सामान्य बुद्विलब्धि वाले पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, शैक्षिक संबंधी, एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। किन्तु सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक,एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। मध्यमानों के मध्य अन्तर देखने से स्पष्ट होता है कि सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, शैक्षिक संबंधी, एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सारिणी –30

सामान्य बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | किशोरा–वस्था | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | पूर्व | 85 | 13.13 | 15.44 | 8.90 | 1.36 | 3.57 xx |
| | उत्तर | 85 | 1726 | 20.30 | 8.77 | | |
| सांवेगिक | पूर्व | 85 | 868 | 10.21 | 3.17 | .58 | 7.53 xx |
| | उत्तर | 85 | 1239 | 14.58 | 4.33 | | |
| व्यावसायिक | पूर्व | 85 | 248 | 2.92 | 1.18 | .25 | 6.44 xx |
| | उत्तर | 85 | 385 | 4.53 | 1.95 | | |
| शैक्षिक संबंधी | पूर्व | 85 | 667 | 7.85 | 7.92 | 1.54 | 4.36 xx |
| | उत्तर | 85 | 1238 | 14.56 | 11.75 | | |
| शारीरिक | पूर्व | 85 | 612 | 7.20 | 3.99 | .70 | 1.31 |
| | उत्तर | 85 | 690 | 8.12 | 5.12 | | |
| सामाजिक | पूर्व | 85 | 765 | 9.00 | 4.80 | .67 | 3.12 xx |
| | उत्तर | 85 | 943 | 11.09 | 3.88 | | |
| व्यक्तिगत | पूर्व | 85 | 651 | 7.66 | 4.31 | .66 | 3.91 xx |
| | उत्तर | 85 | 870 | 10.24 | 4.28 | | |
| विलिंगी | पूर्व | 85 | 712 | 8.37 | 6.87 | .93 | 5.15 xx |
| | उत्तर | 85 | 1119 | 13.16 | 5.09 | | |

x .05 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

सारिणी — 30 :

सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

उपरोक्त सारिणी 30 में सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । सामान्य बुद्विलब्धि वाले पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 3.57, 7.53, 6.44, 4. 36, 1.31, 3.12, 3.91, एवं 5,15 है । 168 डी0एफ0 के लिये टी का अपेक्षित मूल्य .05 स्तर पर 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.60 है । शारीरिक समस्याओं का टी मूल्य 1.31 को छोड़कर उपरोक्त सभी समस्याओं के टी अनुपात कमशः .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से अधिक है । शारीरिक समस्याओं का टी मूल्य कमशः 1.31, .05 एवं .01 दोनों स्तर पर असार्थक है। क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है । अर्थात सामान्य बुद्विलब्धि वाले पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। मध्यमानों के मध्य अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सारिणी –31

सामान्य बुद्धिलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | किशोरा–वस्था | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | मध्य | 85 | 935 | 11.00 | 9.83 | 1.43 | 6.50 |
| | उत्तर | 85 | 1726 | 20.30 | 8.77 | | xx |
| सांवेगिक | मध्य | 85 | 940 | 11.06 | 4.96 | .71 | 4.96 |
| | उत्तर | 85 | 1239 | 14.58 | 4.33 | | xx |
| व्यावसायिक | मध्य | 85 | 252 | 2.96 | 1.61 | .27 | 5.81 |
| | उत्तर | 85 | 385 | 4.53 | 1.95 | | xx |
| शैक्षिक संबंधी | मध्य | 85 | 963 | 11.33 | 8.92 | 1.60 | 2.02 |
| | उत्तर | 85 | 1238 | 14.56 | 11.75 | | x |
| शारीरिक | मध्य | 85 | 598 | 7.03 | 4.13 | .71 | 1.52 |
| | उत्तर | 85 | 690 | 8.11 | 5.12 | | |
| सामाजिक | मध्य | 85 | 811 | 9.54 | 5.13 | .70 | 2.21 |
| | उत्तर | 85 | 943 | 11.09 | 3.88 | | x |
| व्यक्तिगत | मध्य | 85 | 699 | 8.22 | 4.22 | .65 | 3.11 |
| | उत्तर | 85 | 870 | 10.24 | 4.28 | | xx |
| विलिंगी | मध्य | 85 | 1364 | 16.04 | 7.04 | .94 | 3.13 |
| | उत्तर | 85 | 1119 | 13.10 | 5.09 | | xx |

x .05 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

<u>सारिणी – 31</u> :

सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 31 में सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । सामान्य बुद्विलब्धि वाले मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः .6.50, 4.96, 5.81, 2.02, .01, 2.21, 3.11, एवं 3.13 है । 168 डी0एफ0 के लिये टी का अपेक्षित मूल्य .05 स्तर पर 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.60 है । सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक , सांवेगिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य कमशः 6.50, 4.96, 5.81, 3.11, एवं 5.85 है जो कि .05 एवं .01 दोनो ही स्तर पर सार्थक है क्योंकि उपरोक्त चारों टी मूल्य . 05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से अधिक है । शैक्षिक संबंधी एवं सामाजिक समस्याओं का टी मूल्य कमशः 2.02 एवं 2.21 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है क्योंकि 2.02 एवं 2.21 दोनों ही टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है । .01 स्तर पर असार्थक है । क्योंकि .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है । शारीरिक समस्याओं का टी मूल्य 1.52 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है, क्योंकि टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है । अर्थात सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। मध्यमानों के मध्य अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

सारिणी – 32 :

निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 32 में निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । निम्न बुद्विलब्धि वाले पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 5.00, 2.67, 5.81, 2.89, .01, 2.56, 3.02 एवं 3.61 है । 168 डी0एफ0 के लिये टी का अपेक्षित मूल्य .05 स्तर पर 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.60 है । निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य कमशः 5.00, 2.67,5.81, 2.89, 3.02 एवं 3.61 है जो कि .05 एवं .01 दोनो ही स्तर पर सार्थक है क्योंकि उपरोक्त छहों टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से अधिक है । सामाजिक समस्याओं का टी मूल्य 2.56 जो कि .05 स्तर पर सार्थक है क्योंकि 05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है , क्योंकि .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है शारीरिक समस्याओं का टी मूल्य .01 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है । क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है । अर्थात निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की शारीरिक समस्याओं कों छोड़कर उपरोक्त सभी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। मध्यमानों के मध्य अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सारिणी —33

**निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।**

| समस्यायें | किशोरा—वस्था | कुल किशोर N | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | पूर्व | 85 | 1267 | 14.90 | 6.71 | 1.37 | 6.34 |
| | उत्तर | 85 | 2005 | 23.59 | 10.73 | | xx |
| सांवेगिक | पूर्व | 85 | 947 | 11.14 | 5.02 | .78 | 2.19 |
| | उत्तर | 85 | 1093 | 12.85 | 5.13 | | x |
| व्यावसायिक | पूर्व | 85 | 252 | 2.96 | 2.28 | .40 | 10.0 |
| | उत्तर | 85 | 556 | 6.54 | 2.91 | | xx |
| शैक्षिक संबंधी | पूर्व | 85 | 664 | 7.81 | 7.29 | 1.49 | 5.62 |
| | उत्तर | 85 | 1375 | 16.18 | 11.69 | | xx |
| शारीरिक | पूर्व | 85 | 681 | 8.01 | 4.84 | .91 | 1.59 |
| | उत्तर | 85 | 804 | 9.46 | 6.82 | | |
| सामाजिक | पूर्व | 85 | 789 | 9.28 | 5.02 | .83 | 2.14 |
| | उत्तर | 85 | 940 | 11.06 | 5.76 | | x |
| व्यक्तिगत | पूर्व | 85 | 486 | 5.72 | 5.12 | .83 | .87 |
| | उत्तर | 85 | 547 | 6.44 | 5.70 | | |
| विलिंगी | पूर्व | 85 | 651 | 7.65 | 7.13 | 1.01 | 4.04 |
| | उत्तर | 85 | 998 | 11.74 | 5.95 | | xx |

x .05 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.6

सारिणी –33 :

निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 33 में निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 6.34, 2.19, 10.00, 5.62, 1.59, 2.14, .87, एवं 4.04 है । 168 डी0एफ0 के लिये टी का अपेक्षित मूल्य .05 स्तर पर 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.60 है । निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, एवं विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य कमशः 6.34, 8.75, 5.62, एवं 4.05 है जो कि .05 एवं .01 दोनो ही स्तर पर सार्थक है क्योंकि उपरोक्त चारों टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से अधिक है । सांवेगिक एवं सामाजिक समस्याओं का टी मूल्य 2.19 एवं 2.14 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है क्योंकि 05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से कम है । शारीरिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं का टी मूल्य कमशः 1.59 एवं .87 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है , क्योंकि दोनों ही टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है । अर्थात निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक एवं विलिंगी समस्याओं कें मध्य सार्थक अन्तर होता है। मध्यमानों के मध्य अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सारिणी –34

निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | किशोरा–वस्था | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | मध्य | 85 | 1807 | 21.25 | 9.62 | 1.56 | 1.50 |
| | उत्तर | 85 | 2005 | 23.58 | 10.73 | | |
| सांवेगिक | मध्य | 85 | 1108 | 13.03 | 4.61 | .77 | .23 |
| | उत्तर | 85 | 1093 | 12.85 | 5.43 | | |
| व्यावसायिक | मध्य | 85 | 385 | 4.52 | 2.19 | .40 | 5.05 xx |
| | उत्तर | 85 | 556 | 6.54 | 2.91 | | |
| शैक्षिक संबंधी | मध्य | 85 | 1015 | 11.94 | 10.95 | 1.74 | 2.44 x |
| | उत्तर | 85 | 1375 | 16.18 | 11.69 | | |
| शारीरिक | मध्य | 85 | 680 | 8.00 | 6.77 | 1.04 | 1.40 |
| | उत्तर | 85 | 804 | 9.46 | 6.82 | | |
| सामाजिक | मध्य | 85 | 959 | 11.28 | 5.12 | .83 | .26 |
| | उत्तर | 85 | 940 | 11.06 | 5.70 | | |
| व्यक्तिगत | मध्य | 85 | 715 | 8.41 | 6.42 | .93 | 1.58 |
| | उत्तर | 85 | 547 | 6.94 | 5.70 | | |
| विलिंगी | मध्य | 85 | 946 | 11.13 | 4.84 | .91 | .67 |
| | उत्तर | 85 | 998 | 11.74 | 6.82 | | |

x .05 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 168 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

<u>सारिणी – 34</u> :

निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तार नहीं होता है , जबकि व्यावसायिक एवं शैक्षिक संबंधी समस्याओं में सार्थक अन्तर पाया जाता है ।

उपरोक्त सारिणी 34 में निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 1.50, .23, 5.05, 2. 44, 1.40, .26, 1.58 एवं .67 है । 168 डी0एफ0 के लिये टी का अपेक्षित मूल्य .05 स्तर पर 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.60 है । उपरोक्त सारिणी में व्यावसायिक समस्याओं का टी मूल्य 3.90 है जो कि .05 एवं . 01 दोनो ही स्तर पर सार्थक है क्योंकि 3.90 टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से अधिक है । शैक्षिक संबंधी समस्याओं का टी मूल्य 2.44 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है क्योंकि 05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है । क्योंकि .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है । उपरोक्त सारिणी में दिये गये अन्य सभी समस्याओं के टी मूल्य .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.60 से कम है। अर्थात निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की व्यावसायिक एवं शैक्षिक संबंधी, समस्याओं को छोड़कर अन्य समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है। मध्यमानों के मध्य अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की व्यावसायिक एवं शैक्षिक संबंधी, समस्यायें मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सारिणी –35

किशोरावस्था में ग्रामीण किशोरों एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | सामाजिक स्तर | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | ग्रामीण | 450 | 105.75 | 23.50 | 10.17 | .84 | 5.72 |
| | शहरी | 750 | 14015 | 18.69 | 18.80 | | xx |
| सांवेगिक | ग्रामीण | 450 | 6028 | 13.40 | 5.43 | .48 | 4.00 |
| | शहरी | 750 | 8611 | 11.48 | 11.23 | | xx |
| व्यावसायिक | ग्रामीण | 450 | 2858 | 6.35 | 3.04 | .25 | 5.30 |
| | शहरी | 750 | 3761 | 5.01 | 5.59 | | xx |
| शैक्षिक संबंधी | ग्रामीण | 450 | 6286 | 13.97 | 9.93 | .76 | 3.05 |
| | शहरी | 750 | 8739 | 11.65 | 16.29 | | xx |
| शारीरिक | ग्रामीण | 450 | 4545 | 10.10 | 5.81 | .43 | 5.63 |
| | शहरी | 750 | 5763 | 7.68 | 8.92 | | xx |
| सामाजिक | ग्रामीण | 450 | 5225 | 11.61 | 4.90 | .43 | 4.02 |
| | शहरी | 750 | 7410 | 9.88 | 10.07 | | xx |
| व्यक्तिगत | ग्रामीण | 450 | 3510 | 7.80 | 5.58 | .40 | 2.78 |
| | शहरी | 750 | 5037 | 6.69 | 8.38 | | xx |
| विलिंगी | ग्रामीण | 450 | 4489 | 9.98 | 6.59 | .55 | 2.02 |
| | शहरी | 750 | 8321 | 11.09 | 12.37 | | x |

x .05 स्तर पर 1198 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.96

xx .01 स्तर पर 1198 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.58

<u>सारिणी – 35</u> :–

सारिणी 35 के अनुसार किशोरावस्था मे ग्रामीण किशोरों एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होंता है।

उपरोक्त सारिणी 35 में किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । किशोरावस्था मे ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के टी अनुपात कमशः 5.72, 4.00, 5.36, 3.05, 5.63, 4.02, 2.78, एवं 2.02 है । 1198 डी0एफ0 के लिये टी का मूल्य अपेक्षित मूल्य .05 स्तर पर 1.96 एवं .01 स्तर पर 2.58 है । किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोंरो की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं के उपरोक्त सभी टी मूल्य .05 एवं .01 स्तर पर सार्थक है क्योंकि उपरोक्त टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.96 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.58 से अधिक है । विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात 2.02 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.96 से अधिक है एवं .01 स्तर पर असार्थक है क्योंकि .01 स्तार पर अपेक्षित टी मूल्य 2.58 से कम है । अर्थात् किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की उपरोक्त सारिणी में दी गई सभी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर देखने से स्पष्ट होता है कि किशोरावस्था में ग्रामीण किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें शहरी किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है एवं विलिंगी समस्यायें शहरी किशोरों की अपेक्षाकृत कम है ।

## सारिणी –36

पूर्व किशोरावस्था में ग्रामीण किशोरों एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | सामाजिक स्तर | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | ग्रामीण | 150 | 2403 | 16.02 | 9.09 | .88 | .53 |
| | शहरी | 250 | 3887 | 15.55 | 7.49 | | |
| सांवेगिक | ग्रामीण | 150 | 1702 | 11.35 | 3.74 | .39 | 2.82 |
| | शहरी | 250 | 2563 | 10.25 | 3.91 | | XX |
| व्यावसायिक | ग्रामीण | 150 | 954 | 6.36 | 3.29 | .32 | 7.59 |
| | शहरी | 250 | 982 | 3.93 | 2.72 | | XX |
| शैक्षिक संबंधी | ग्रामीण | 150 | 1396 | 9.31 | 8.74 | .91 | 1.12 |
| | शहरी | 250 | 2.72 | 8.29 | 8.92 | | |
| शारीरिक | ग्रामीण | 150 | 1540 | 10.27 | 5.50 | ..52 | 6.79 |
| | शहरी | 250 | 1686 | 6.74 | 4.08 | | XX |
| सामाजिक | ग्रामीण | 150 | 1505 | 10.03 | 5.18 | .52 | 2.87 |
| | शहरी | 250 | 2134 | 8.54 | 4.79 | | XX |
| व्यक्तिगत | ग्रामीण | 150 | 822 | 5.48 | 4.36 | .45 | .62 |
| | शहरी | 250 | 1439 | 5.76 | 4.45 | | |
| विलिंगी | ग्रामीण | 150 | 1208 | 8.05 | 7.04 | .72 | .06 |
| | शहरी | 250 | 1999 | 8.00 | 6.82 | | |

x .05 स्तर पर 1198 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.96

XX .01 स्तर पर 1198 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.00

सारिणी — 36 :

पूर्व किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक, समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

उपरोक्त सारिणी 36 में पूर्व किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं प्रमाणिक त्रुटि दी गई है । पूर्व किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोंरो की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात कमशः .53, 2.82, 7.59, 1.12, 6.79, 2.87, .62 एवं .06 है । 398 डी0एफ0 के लिये टी का अपेक्षित मूल्य .05 स्तर पर 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.59 है पूर्व किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक एवं सामाजिक समस्याओं का टी अनुपात कमशः 2.82, 7.59, 6.79 एवं 2.87 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है । क्योंकि उपरोक्त चारों टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से अधिक है । पारिवारिक, शैक्षिक संबंधी, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात कमशः .53, 1.12, .62 एवं .06 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है । क्योंकि ये टी मूल्य .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । अर्थात् पूर्व किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक एवं सामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । एवं पारिवारिक , शैक्षिक संबंधी, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर देखने से स्पष्ट होता है कि पूर्व किशोरावस्था में ग्रामीण किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक एवं सामाजिक समस्यायें शहरी किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक होती है ।

## सारिणी –37

मध्य किशोरावस्था में ग्रामीण किशोरों एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | सामाजिक स्तर | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | ग्रामीण | 150 | 3520 | 23.47 | 9.72 | .98 | 4.85 xx |
| | शहरी | 250 | 4681 | 18.72 | 9.20 | | |
| सांवेगिक | ग्रामीण | 150 | 2083 | 13.89 | 6.05 | .58 | 4.76 xx |
| | शहरी | 250 | 2782 | 11.13 | 4.92 | | |
| व्यावसायिक | ग्रामीण | 150 | 879 | 5.86 | 2.37 | .27 | 2.56 x |
| | शहरी | 250 | 1292 | 5.17 | 3.02 | | |
| शैक्षिक संबंधी | ग्रामीण | 150 | 2140 | 14.27 | 8.08 | .89 | 3.94 xx |
| | शहरी | 250 | 2690 | 10.76 | 9.55 | | |
| शारीरिक | ग्रामीण | 150 | 1395 | 9.30 | 5.57 | ..55 | 3.16 xx |
| | शहरी | 250 | 1889 | 7.56 | 4.94 | | |
| सामाजिक | ग्रामीण | 150 | 1844 | 12.29 | 4.56 | .48 | 4.50 xx |
| | शहरी | 250 | 2533 | 10.13 | 4.68 | | |
| व्यक्तिगत | ग्रामीण | 150 | 1348 | 8.99 | 5.89 | .59 | 3.25 xx |
| | शहरी | 250 | 1768 | 7.07 | 5.36 | | |
| विलिंगी | ग्रामीण | 150 | 1362 | 9.08 | 6.63 | .66 | 5.21 xx |
| | शहरी | 250 | 3131 | 11.52 | 5.96 | | |

x .05 स्तर पर 398 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 398 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.59

<u>सारिणी – 37</u> :

मध्य किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 37 में मध्य किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । मध्य किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात कमशः 4.85, 4.76, 2.56, 3.94, 3.16, 4.50, 3.25 एवं 5.21 है । 398 डी0एफ0 के टी का अपेक्षित मूल्य .05 स्तर पर 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.59 है । मध्य किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की व्यावसायिक समस्याओं के टी अनुपात के अतिरिक्त अन्य सभी समस्याओं का टी अनुपात .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है क्योंकि व्यावसायिक समस्यायें के टी अनुपात 2.56 को छोड़कर अन्य सभी टी अनुपात .05 स्तर पर अपेक्षित 1.97 एवं .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से अधिक है । व्यावसायिक समस्याओं का टी मूल्य 2.56, .05 स्तर पर तो सार्थक है क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है क्योंकि .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । अर्थात् मध्य किशोरावस्था में शहरी एवं ग्रामीण किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर देखने से स्पष्ट होता है कि मध्य किशोरावस्था में ग्रामीण किशोरों की पारिवारिक सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें शहरी किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है । विलिंगी समस्यायें शहरी किशोरों की अपेक्षाकृत ग्रामीण किशोरो में कम है ।

## सारिणी –38

उत्तर किशोरावस्था में ग्रामीण किशोरों एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं की सारिणी।

| समस्यायें | सामाजिक स्तर | कुल किशोर | कुल प्राप्तांक | मध्यमान | प्रामणिक विचलन | प्रामाणिक त्रुटि | आलोचनात्मक अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पारिवारिक | ग्रामीण | 150 | 3978 | 26.52 | 8.10 | .88 | 6.61 |
| | शहरी | 250 | 5177 | 20.70 | 9.14 | | xx |
| सांवेगिक | ग्रामीण | 150 | 2243 | 14.95 | 5.59 | .55 | 3.44 |
| | शहरी | 250 | 3266 | 13.06 | 4.99 | | xx |
| व्यावसायिक | ग्रामीण | 150 | 1025 | 6.83 | 3.29 | .32 | 2.75 |
| | शहरी | 250 | 1487 | 5.95 | 2.72 | | xx |
| शैक्षिक संबंधी | ग्रामीण | 150 | 2750 | 18.33 | 10.65 | 1.15 | 2.10 |
| | शहरी | 250 | 3977 | 15.91 | 11.87 | | x |
| शारीरिक | ग्रामीण | 150 | 1610 | 10.73 | 6.26 | .61 | 3.25 |
| | शहरी | 250 | 2188 | 8.75 | 5.40 | | xx |
| सामाजिक | ग्रामीण | 150 | 1876 | 12.51 | 4.52 | .46 | 3.35 |
| | शहरी | 250 | 2743 | 10.97 | 4.21 | | xx |
| व्यक्तिगत | ग्रामीण | 150 | 822 | 5.48 | 3.29 | .32 | 4.00 |
| | शहरी | 250 | 1689 | 6.76 | 2.72 | | xx |
| विलिंगी | ग्रामीण | 150 | 2018 | 13.45 | 4.33 | .49 | .63 |
| | शहरी | 250 | 3441 | 13.76 | 5.30 | | |

x .05 स्तर पर 398 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 1.97

xx .01 स्तर पर 398 डी0 एफ0 के लिए टी का अपेक्षित मूल्य = 2.60

<u>सारिणी – 38</u> :

उत्तर किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है ।

उपरोक्त सारिणी 38 में उत्तर किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं प्रामाणिक त्रुटि दी गई है । उत्तर किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं का टी अनुपात कमशः 6.61, 3.44, 2.75, 2.10, 3.25, 3.35, 4.00 एवं .63 है । उत्तर किशोरावस्था में पारिवारिक, सांवेगिक व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं का टी मूल्य कमशः 6.61, 3.44, 2.75, 3.25, 3.35 एवं 4.00 है, ये सभी टी मूल्य .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर सार्थक है, क्योंकि 398 डी0एफ0 के लिये .03 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.59 है । उपरोक्त सभी टी मूल्य .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर अपेक्षित मूल्यों से अधिक है । शैक्षिक संबंधी समस्याओं का टी मूल्य 2.10 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है क्योंकि .05 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 1.97 से अधिक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है क्योंकि .01 स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य 2.59 से कम है । विलिंगी समस्याओं का टी मूल्य .63 है जो कि .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर असार्थक है । क्योंकि .63 टी मूल्य .05 एवं .01 दोनों ही स्तर पर अपेक्षित टी मूल्य से कम है । अर्थात् उत्तर किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की विलिंगी समस्याओं के अतिरिक्त अन्य सभी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर देखने से स्पष्ट होता है कि उत्तर किशोरावस्था में ग्रामीण किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें शहरी किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. किंग डब्ल्यू आई – 'दि एलीमेंट ऑफ स्टीटस्किल मैथड

2. थलैल आर0 एच0 – साइटिंफिक मैथड एण्ड यूज स्टैटिस्किस दि स्टडी आफ सोसायटी

3. यंग पी0 वी0 – सांइटिफिक्सोशल सर्विसेज एण्ड रिसर्च बंबई, एशिया हाऊस, 1960 पृ0 509

4. गैरेट एच0 ई0 – शिक्षा निकेतन मनोविज्ञान में सांख्यिकी, लुधियाना पब्लिशर्स सन् 1952.

5. घोष एवं चौधरी : स्टेटिस्कि थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस, टेन्थ एडीशन

6. किंग डब्ल्यू आई – दि एलीमेंट आर्फ स्टटिस्किल मैथड

7. थ्लैस आर0 एच0 – साइंटिफिक मैथ एण्ड यूज ऑफ स्टेटिक्स दि स्टडी ऑफ सोसायटी

# पंचम अध्याय

## उपलब्धियाँ एवं निष्कर्ष

सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक संसार में कमबद्धता है इसलिये अनुसंधान के निष्कर्षो का प्रस्तुतिकरण तर्कयुक्त स्पष्ट एवं वैज्ञानिक ढंग से किया जाना आवश्यक है ताकि निष्कर्षो का उचित सदुपयोग किया जा सके। प्रस्तुत अध्ययन में किशोंरों की सम्प्राप्ति स्तर, बुद्धि लब्धि एवं सामाजिक स्तर की विभिन्नता को दृष्टिगोचर रखते हुए, उससे सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं यथा पारिवारिक, सांवेगिक,व्यावसायिक, शैक्षिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलंगी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

प्राकल्पनाओं को स्वीकार व अस्वीकार करने हेतु 'टी' टेस्ट आदि सांख्यिकी का प्रयोग करके जो भी निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं वह इस अध्याय में प्रस्तुत है –

5.1 <u>उपलब्धियाँ एवं निष्कर्ष</u> :

(1) **संकियात्मक प्राकल्पना** : किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

चतुर्थ अध्याय में दिये गये परीक्षण एवं परिणाम विश्लेषण के आधार पर किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की व्यावसायिक एवं विलिंगी समस्याओं के अतिरिक्त पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक शारीरिक सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च संप्राप्ति प्राप्त किशोरों के वनिस्पत अधिक है । अर्थात् किशोरावस्था में संप्राप्ति स्तर किशोरों की समस्याओं पर सार्थक रूप से असर डालती है ।

(2) **संकियात्मक प्राकल्पना** : पूर्व किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक , व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण पर पूर्व किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की व्यावसायिक एवं विलिंगी समस्याओं के अतिरिक्त परिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के अन्तर के आधार पर निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोंरों की पारिवारिक, सांवेगिक,शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक होती है।

(3) **संकियात्मक प्राकल्पना :** मध्य किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी,शारीरिक , सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की शारीरिक एवं विलिंगी समस्याओं के अलावा पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक शैक्षिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के अन्तर के आधार पर निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी , सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है । एवं व्यावसायिक समस्यायें उच्च संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत कम है ।

(4) **संकियात्मक प्राकल्पना :** उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी , शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी मूल्य के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न संप्राप्ति किशोरों की विलिंगी समस्याओं के अतिरिक्त अन्य सभी पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक,

सांवेगिक, व्यावसायिक,शैक्षिक संबंधी , शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें उत्तर किशोरावस्था की उच्च संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(5) **संक्रियात्मक प्राकल्पना** : किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की शैक्षिक संबंधी समस्याओं को छोड़कर अन्य सभी समस्याओं – पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों से अपेक्षाकृत अधिक है एवं व्यावसायिक समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत कम है ।

(6) **संक्रियात्मक प्राकल्पना** : किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी , शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर किशोरावस्था में उच्च बुद्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की शैक्षिक संबंधी समस्याओं के अतिरिक्त पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के अन्तर के आधार पर किशोरावस्था में निम्न बुद्धि लब्धि किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है , व्यावसायिक, एवं विलिंगी समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत कम है ।

(7) **संक्रियात्मक प्राकल्पना** : किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विशलेषण के आधार पर किशोरावस्थो में सामान्य बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक, शारीरिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है एवं सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर किशोरावस्था में निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक एवं शारीरिक समस्यायें, सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है एवं व्यक्तिगत समस्यायें अपेक्षाकृत कम है ।

(8) **संक्रियात्मक प्राकल्पना** : पूर्व किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक , शैक्षिक संबंधी, शारीरिक सामाजिक व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर पूर्व किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर पूर्व किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शारीरिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है । एवं व्यावसायिक एवं विलिंगी समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत कम है ।

(9) **सांकियात्मक प्राकल्पना** : पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है एवं पारिवारिक तथा शैक्षिक संबंधी समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के अन्तर के आधार पर पूर्व किशोरावस्था में निम्न बुद्धि लब्धि वाले किशोरों की सांवेगिक, शारीरिक, सामाजिक, एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है एवं व्यावसायिक एवं विलिंगी समस्यायें अपेक्षाकृत कम है ।

(10) **सांकियात्मक प्राकल्पना** : पूर्व किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

(11) **सांकियात्मक प्राकल्पना** : मध्य किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं सामान्य बुद्धि लब्धि एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिके, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी मूल्य के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर मध्य किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यांवसायिक,शैक्षिक संबंधी, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । शारीरिक एवं सामाजिक समस्याओं से कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के अन्तर के आधार पर मध्य किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी एवं

व्यक्तिगत समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है । एवं व्यावसायिक एवं विलिंगी समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत कम है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । एवं शारीरिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के अन्तर के आधार पर मध्य किशोरावस्था में निम्न बुद्धि लब्धि वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिके संबंधी, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है एवं व्यावसायिक और विलिंगी समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत कम है ।

(12) **संक्रियात्मक प्राकल्पना** : मध्य किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर मध्य किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । पारिवारिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर मध्य किशोरावस्था में निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक समस्यायें सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोंरो की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(13) **संक्रियात्मक प्राकल्पना** : उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । शैक्षिक संबंधी, शारीरिक एवं सामाजिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर उत्तर किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक होती है एवं व्यावसायिक और विलिंगी समस्यायें उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत कम होती है ।

(14) **संक्रियात्मक प्राकल्पना :** उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक , व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । एवं व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक एवं सामाजिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर उत्तर किशोरावस्था में निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें उच्च बुद्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है एवं विलिंगी समस्यायें अपेक्षाकृत कम है ।

(15) **संक्रियात्मक प्राकल्पना :** उत्तर किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर उत्तर किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, एवं विलिंगी

समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर उत्तर किशोरावस्था में निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक एवं व्यावसायिक समस्यायें सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है एवं सांवेगिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षाकृत कम है ।

(16) **संक्रियात्मक प्राकल्पना :** किशोरावस्था में पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर किशोरावस्था में पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी,शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(17) संक्रियात्मक प्राकल्पना : किशोरावस्था में मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर किशोरावस्था में मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है एवं पारिवारिक तथा व्यक्तिगत समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर किशोरावस्था में उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्यायें मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(18) **संक्रियात्मक प्राकल्पना** : उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है एवं सांवेगिक तथा शैक्षिक संबंधी समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर उच्च संप्राप्ति प्राप्त मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(19) **संक्रियात्मक प्राकल्पना** : उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर उच्च संप्राप्ति प्राप्त उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाली किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(20) **संक्रियात्मक प्राकल्पना** : उच्च संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी मूल्य के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर उच्च संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है किन्तु पारिवारिक, व्यावसायिक, शारीरिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है, मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर उच्च संप्राप्ति प्राप्त उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी एवं विलिंगी समस्यायें मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक होती है एवं सामाजिक समस्यायें मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत कम होती है ।

(21) **संकियात्मक प्राकल्पना** : निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर निम्न संपाप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है एवं शारीरिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर निम्न संप्राप्ति प्राप्त मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरो की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(22) **संकियात्मक प्राकल्पना** : निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य

अन्तर के आधार पर उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(23) **संक्रियात्मक प्राकल्पना :** निम्न संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर निम्न संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरो की सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर निम्न संप्राप्ति प्राप्त उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक एवं विलिंगी समस्यायें मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(24) **संक्रियात्मक प्राकल्पना :** उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरो की व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है किन्तु पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक सम्बन्धी एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के अनुसार उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(25) **संक्रियात्मक प्राकल्पना :** उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरो की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। व्यावसायिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(26) **संक्रियात्मक प्राकल्पना :** उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरो की सांवेगिक, शैक्षिक सम्बन्धी, सामाजिक, एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । पारिवारिक, व्यावसायिक, शारीरिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, शैक्षिक संबधी, सामाजिक एवं विलिंगी समस्यायें मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(27) **संक्रियात्मक प्राकल्पना :** सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरो की पारिवारिक, शैक्षिक संबधी एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, शैक्षिक संबधी एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(28) **संकियात्मक प्राकल्पना** : सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरो की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। शारीरिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर को देखने से स्पष्ट होता है कि सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(29) **संकियात्मक प्राकल्पना** : सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरो की सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, सामाजिक, व्यवित्तगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। पारिवारिक एवं शारीरिक समस्याओं में

सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर सामान्य बुद्धिलब्धि प्राप्त उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(30) **संक्रियात्मक प्राकल्पना** : निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरो की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। शारीरिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(31) **संक्रियात्मक प्राकल्पना** : निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी मूल्य के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरो की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, सामाजिक, एवं विलिंगी समस्याओं के मध्य सार्थक अन्तर होता है। शारीरिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर निम्न बुद्धिलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, सामाजिक, एवं विलिंगी समस्यायें पूर्व किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(32) **संक्रियात्मक प्राकल्पना :** निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी मूल्य के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरो की पारिवारिक, सांवेगिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है। व्यावसायिक एवं शैक्षिक संबधी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की व्यावसायिक एवं स्कूल संबधी, समस्याओं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

(33) **संक्रियात्मक प्राकल्पना :** किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक , सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है । मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर किशोरावस्था में ग्रामीण किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें शहरी किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है । विलिंगी समस्याओं शहरी किशोरों की अपेक्षाकृत कम है ।

(34) **संक्रियात्मक प्राकल्पना :** पूर्व किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर पूर्व किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक एवं सामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है एवं पारिवारिक, शैक्षिक संबंधी, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर पूर्व किशोरावस्था में ग्रामीण किशोरों की व्यावसायिक, शारीरिक, सांवेगिक एवं सामाजिक समस्यायें शहरी किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक होती है।

(35) **सांख्यिकीय प्राकल्पना :** मध्य किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

टी अनुपात के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर मध्य किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर मध्य किशोरावस्था में ग्रामीण किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें शहरी किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है। विलिंगी समस्यायें शहरी किशोरों की अपेक्षाकृत कम है।

(36) **सांख्यिकीय प्राकल्पना :** उत्तर किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

टी मूल्य के परीक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर उत्तर किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर होता है। विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है। मध्यमानों के मध्य अन्तर के आधार पर उत्तर किशोरावस्था में ग्रामीण किशोरों की पारिवारिक,

सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें शहरी किशोरों की अपेक्षाकृत अधिक है ।

5.2 प्रमुख उपलब्धियाँ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में किशोरों की संप्राप्ति स्तर बुद्धि लब्धि, आयु वर्ग एवं सामाजिक स्तर की भिन्नता का पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं पर क्या प्रभाव पडता है ? इस प्रश्न का उत्तर देता है ।

उपरोक्त तथ्यों के परीक्षण के लिये 'टी अनुपात' का प्रयोग किया गया है । जिनमें निर्मित प्राक्कल्पनाओं के अनुसार निम्नांकित क्षेत्रों में 0.01 तथा 0.05 स्तर पर सार्थकता देखने को मिलती है ।

(1) किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(2) पूर्व किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(3) मध्य किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(4) उत्तर किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । व्यावसायिक समस्यायें केवल .05 स्तर पर सार्थक है .01 स्तर पर असार्थक है ।

(5) किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । शारीरिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(6) किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(7) किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक एवं शारीरिक समस्यायें .05 स्तर पर सार्थक है एवं .01 स्तर पर असार्थक है । व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(8) पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की व्यावसायिक, शारीरिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । पारिवारिक एवं सांवेगिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(9) पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । विलिंगी समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(10) पूर्व किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(11) मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । शैक्षिक संबंधी समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(12) मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । शैक्षिक संबंधी समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है .01 स्तर पर असार्थक है ।

(13) मध्य किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की सांवेगिक एवं व्यावसायिक समस्यायें .05 स्तर एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । सामाजिक समस्यायें .05 स्तर पर सार्थक है एवं .01 स्तर पर असार्थक है ।

(14) उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक , व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(15) उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । व्यक्तिगत समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है .01 स्तर पर असार्थक है ।

(16) उत्तर किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । सांवेगिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(17) किशोरावस्था में पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है, सांवेगिक एवं शारीरिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(18) किशोरावस्था में पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर असार्थक है ।

(19) किशोरावस्था में मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । सामाजिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(20) उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । व्यक्तिगत समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(21) उच्च संप्राप्ति पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक , शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 स्तर पर सार्थक है ।

(22) उच्च संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । सामाजिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(23) निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक , शैक्षिक संबंधी एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याये .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(24) निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । व्यक्तिगत समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(25) निम्न संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । सांवेगिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(26) उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक एवं बिलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(27) उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है पारिवारिक समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है सामाजिक एवं विलिंगी समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है, .01 स्तर पर असार्थक है ।

(28) उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था के किशोरों की सांवेगिक एवं स्कूल संबंधी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है सामाजिक एवं विलिंगी समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है, .01 स्तर पर असार्थक है ।

(29) सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था के किशोरों की शैक्षिक संबंधी एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है किन्तु पारिवारिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है पर .01 स्तर पर असार्थक है ।

(30) सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था के किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(31) सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था के किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । शैक्षिक संबंधी एवं सामाजिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(32) निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । सामाजिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(33) निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक हैं सांवेगिक एवं सामाजिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(34) निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की व्यावसायिक समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । शैक्षिक संबंधी समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है, .01 स्तर पर असार्थक है ।

(35) किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 स्तर पर सार्थक है । विलिंगी समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(36) पूर्व किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक एवं सामाजिक समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(37) मध्य किशोरावस्था में ग्रामीण एव शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । व्यावसायिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक हैं किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(38) उत्तर किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, साामजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है , शैक्षिक संबंधी समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु 0.1 स्तर पर असार्थक है ।

## 5.3 ज्ञात की गई समस्याओं के आधार पर सुझाव :

किशोरावस्था में किशोरों का व्यवहार अधिकांशतः परिवर्तनशील होता है। इस अवधि में उनके समक्ष अनेकानेक समस्यायें उभरती है । जिनका निदान अत्यन्त आवश्यक होता है ।

(1) स्वतंत्र रूप से बढते जाने का प्रयास करते हुए भी किशोरों को अपने माता–पिता के परामर्श और स्नेह की आवश्यकता बनी रहती है । यद्यपि विकास के सामान्य क्रम में उसे संभवतः प्रचुर एकांत की चाह रहती है तथापि माता–पिता का स्नेह इस अवस्था में बहुत जरूरी रहता है जिससे वो अपने हृदय की बात कह सके । पर एक हद तक किशोरों की समस्याओं में परिवार का बहुत बड़ा हाथ होता है । कुछ महत्वाकांक्षी माता–पिता किशोरों की रूचि–क्षमता एवं भावनाओं को ध्यान न रखकर उन पर अपनी इच्छाओं को थोपते हैं । इसके लिये अभिभावकों को निर्देशान्मुख करना चाहिये ताकि वे उनकी योग्यता, रूचि, बुद्धि, अभिवृत्ति एवं व्यक्तित्व आदि से परिचित हो सके एवं किशोरों से उनके अनुकूल ही अपेक्षायें रख सके ।

(2) वातावरण इस प्रकार निर्मित किया जाये कि किशोरों का संवेगात्मक विकास हो सके, वे हीन भावना से ग्रसित न हो सके इसके लिये विद्यालय क्रियाओं में उनको अधिकाधिक भाग लेने के लिये प्रोत्साहन दिया जाये । संवेगों के उचित नियंत्रण हेतु विभिन्न रचनात्मक कार्य कराये जाये, सामूहिक रूप से कार्य कराने की प्रवृत्ति विकसित की जाये । जिससे किशोरों के सामाजिक संबंध अच्छे बन सके ।

(3) स्कूल संबंधी समस्याओं में किसी विषय का कठिन लगना, अध्ययन के अतिरिक्त समय न मिलना, कक्षा में मन न लगने से सम्बन्धित समस्यायें किशोरों के सामने आती हैं विषयों को दैनिक जीवन से समबद्ध करके पढ़ाया जाना चाहिये, उन्हें अधिक समय अध्ययन के लिये दिया जाये । स्कूल संबंधी समस्याओं की जानकारी दी जाये ताकि किशोरों की समस्याओं को सुलझाया जा सके । इसके लिये उन्हें व्यक्तिगत निर्देशन दिया जाये । कमजोर किशोरों के

लिये अतिरिक्त अध्यापन की सुविधा दी जाये । आर्थिक रूप से असमर्थ किशोरों को भी अतिरिक्त सहायता दी जाये ।

(4) किशोरावस्था में किशोरों को उनकी योग्यता एवं रूचि के अनुसार व्यवसाय चुनाव करने हेतु व्यावसायिक निर्देशन भी देना चाहिये क्योंकि यही वक्त है जब किशोर अपने जीवन–भवन की नींव रखते हैं ।

(5) किशोरों के शरीर में होने वाले परिवर्तनों के प्रति भी उसे सचेत करना चाहिये उसकी आशंकाओं एवं भयो का निर्मूल्यन करना चाहिये ।

(6) विपरीत लिगी साथियों के प्रति आकर्षण एवं सामाजिक रोक–टोक इस अवस्था की किशोरों के सामने एक प्रमुख समस्या के रूप में उपस्थित होती है । किशोरों को उचित निर्देशन देकर उनमें स्वस्थ सम्बन्ध स्थापित करने की शक्ति जागृत करनी चाहिये । विपरीत लिंगी मित्रों के साथ किशोरों के मित्रतापूर्ण स्वस्थ सम्बन्धों को माता–पिता एवं शिक्षकों को स्वीकार करना चाहिये । समस्याग्रस्त किशोरों के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिये ताकि उनके अन्दर हीन भावना न आये एवं उचित विकास हो सके ।

### 5.4 अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता :

कोई भी अनुसंधान अथवा शोध प्रयास तभी सार्थक हो सकता है जबकि उसके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष समाजोपयोगी हो । यह शोध प्रबन्ध भी संप्राप्ति स्तर की भिन्नता, आयु वर्ग की भिन्नता, बुद्धि लब्धि की भिन्नता एवं सामाजिक स्तर की भिन्नता का किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाता है । इस अध्ययन से पता चलता है कि –

(1) बुद्धि स्तर की भिन्नता किशोरों की समस्याओं पर प्रभाव डालती है अर्थात् निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों में समस्याओं की अधिकता होती है । कदाचित् इसका कारण उनकी हीन भावना, शिक्षकों एवं परिवार जनों की उपेक्षा हो सकती है ।

(2) बुद्धि स्तर की भिन्नता किशोरों की समस्याओं पर प्रभाव डालती है अर्थात् उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों से सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों से निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की समस्यायें अधिक होती है । कदाचित ही बुद्धि समस्याओं की गम्भीरता पर प्रभाव डालती है ।

(3) आयु वर्ग की भिन्नता किशोरों की समस्याओं पर प्रभाव डालती है ।

(4) सामाजिक स्तर की भिन्नता भी किशोरों की समस्याओं पर अपनी स्पष्ट छाप छोड़ती है ।

अर्थात् उपरोक्त चारों तथ्यों को ध्यान में रखकर अगर किशोरों की समस्याओं के लिये उन्हें निर्देशन दिया जाये तो समस्याओं का एक हद तक निदान सम्भव है ।

5.5 <u>अध्ययन की सीमायें</u> :

1. प्रस्तुत अध्ययन में केवल जालौन जिले की पूर्व, मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों को लिया गया है ।

2. किशोरावस्था के केवल उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों को ही लिया गया है ।

3. उच्च, निम्न एवं सामान्य बुद्धि लब्धि स्तर वाले किशोरों का ही तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

4. शहरी एवं ग्रामीण किशोरों को ही अध्ययनार्थ लिया गया है ।

5. किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं को ही लिया गया है ।

5.6 <u>आगामी अध्ययन हेतु सुझाव</u> :

शोधकर्ता ने इस तथ्य का पूर्ण ज्ञान करके जिस समस्या का समाधान तथा अध्ययन करने की चेष्टा की थी वह तो अपेक्षाकृत पूर्ण रही । प्रत्येक शोध कार्य में किसी समस्या के एक अथवा कुछ अंशों तक अध्ययन किया जाता है बाकी पक्ष अछूते रह जाते हैं । शोधकत्री का विचार है कि न्यायदर्श तथा उपकरणों की दृष्टि से इसी अध्ययन को व्यापक तथा विस्तृत बनाने की

आवश्यकता है प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष एवं सीमाओं को ध्यान में रखकर निम्नलिखित समस्याओं पर शोध कार्य किया जा सकता है ।

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल जालौन जिले के किशोरों पर ही किया गया है यह अन्य क्षेत्रों की किशोरों पर भी किया जा सकता है ।

2. विषय वर्ग की भिन्नता के आधार पर भी यह अध्ययन संभव है ।

3. शासकीय एवं अशासकीय किशोरों की समस्याओं के आधार पर भी अध्ययन किया जा सकता है ।

4. सामाजिक आर्थिक स्तर की भिन्नता के आधार पर भी यह अध्ययन संभव है ।

5. समस्याओं के अन्य पक्षों पर भी अध्ययन संभव है ।

6. सुविधा प्राप्त एवं सुविधा विहीन किशोर किशोरियों की समस्याओं के आधार पर भी यह अध्ययन संभव है ।

7. शारीरिक रूप से विकलांग एवं सामान्य किशोर – किशोरियों की समस्याओं पर भी ये अध्ययन संभव है ।

## सारांश

विषय : संप्राप्ति स्तर, बुद्विलब्धि एवं आयु वर्ष की भिन्नता के सन्दर्भ में किशोरों की समस्याओं की अध्ययन

शोध छात्रा : कु0 शिखा श्रीवास्तव

निर्देशक : डा0 राम लखन विश्वकर्मा
शिक्षक शिक्षा विभाग
डी0 वी0 (पी0 जी0) कालेज
उरई

**अध्ययन के उद्देश्य :**

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की सफलता के लिए निम्नाकिंत उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है ।

(1) संप्राप्ति की भिन्नता के कारण समस्याओं पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

(2) बुद्विलब्धि की भिन्नता के कारण समस्याओं पर पडने वालें प्रभाव का अध्ययन करना ।

(3) आयु वर्ग की भिन्नता के कारण समस्याओं पर पडने वालें प्रभाव का अध्ययन करना ।

(4) सामाजिक स्तर की भिन्नता के कारण समस्याओं पर पड़ने वालें प्रभाव का अध्ययन करना

(5) समस्याओं के समाधान हेतु निर्देशन के लिए निर्देशन देना ।

**अध्ययन की प्राक्कल्पनायें :**

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने निम्न वैचारिक प्राक्कल्पनाओं को अध्ययन का आधार बनाया है :–

(1) किशोरावस्था में संप्राप्ति स्तर की भिन्नता का किशोरों की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(2) किशोरावस्था में बुद्धिलब्धि स्तर की भिन्नता का किशोरों की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(3) किशोरावस्था में आयु परिवर्तन का किशोरों की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(4) किशोरावस्था में सामाजिक स्तर की भिन्नता का किशोरों की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

इन चार वैचारिक प्राक्कल्पनााओं को कमशः 38 संक्रियात्मक प्राकल्पनाओं में विभक्त किया गया है :—

1— <u>वैचारिक प्राक्कल्पना</u> :

किशोरावस्था में संप्राप्ति स्तर की भिन्नता का किशोरों की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

<u>संक्रियात्मक प्राक्कल्पनायें</u> :

1. किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति किशोरों की पारिवारिक एवं सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

2. पूर्व किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक एवं सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

3. मध्य किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

4. उत्तर किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

2– **वैचारिक प्राक्कल्पना** :

किशोरावस्था में बुद्विलब्धि स्तर की भिन्नता का किशोरों की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

**संक्रियात्मक प्राक्कल्पनायें** :

5. किशोरावस्था में उच्च बुद्विलब्धि एवं सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक सम्बन्धी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

6. किशोरावस्था में उच्च बुद्विलब्धि एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

7. किशोरावस्था में सामान्य बुद्विलब्धि एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

8. पूर्व किशोरावस्था में उच्च बुद्विलब्धि एवं सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

9. पूर्व किशोरावस्था में उच्च बुद्विलब्धि एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

10. पूर्व किशोरावस्था में सामान्य बुद्विलब्धि एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

11. मध्य किशोरावस्था में उच्च बुद्विलब्धि एवं सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

12. मध्य किशोरावस्था में उच्च बुद्विलब्धि एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

13. मध्य किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

14. उत्तर किशोरावस्था में उच्च बुद्विलब्धि एवं सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

15. उत्तर किशोरावस्था में उच्च बुद्विलब्धि एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

16. उत्तर किशोरावस्था में सामान्य बुद्विलब्धि एवं निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

3— **वैचारिक प्राक्कल्पना :**

किशोरावस्था में आयु वर्ग की भिन्नता का किशोरों की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

**संक्रियात्मक प्राक्कल्पनायें :**

17. किशोरावस्था में पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

18. किशोरावस्था में पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

19. किशोरावस्था में मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

20. उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

21. उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

22. उच्च संप्राप्ति प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

23. निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

24. निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

25. निम्न संप्राप्ति प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

26. उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यवितगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

27. उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

28. उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यवितगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

29. सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यवितगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

30. सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

31. सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

32. निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

33. निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

34. निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य किशोरावस्था एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

4. **वैचारिक प्राक्कल्पना :**

किशोरावस्था में सामाजिक स्तर की भिन्नता का किशोरों की समस्याओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

**संक्रियात्मक प्राक्कल्पनायें :**

35. किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

36. पूर्व किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

37. मध्य किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

38. उत्तर किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**न्यायदर्श** :

प्रस्तुत शोध के अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने जालौन जिले की 1200 किशोरों को संप्राप्ति स्तर बुद्विलब्धि, आयु वर्ग एवं सामाजिक स्तर की भिन्नता के आधार पर चयन किया है।

**तथ्य संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण** :

प्रस्तुत अनुसंधान में शोधकर्ता ने अध्ययनार्थ निम्नांकित परीक्षणों का प्रयोग किया है ।

1. युवा समस्या की अभिसूची (समस्याओं के लिए) स्वनिर्मित
2. मानसिक योग्यता परीक्षण (बुद्विलब्धि के लिए) जलोटा

**प्रदत्तो के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी** :

शोधकर्ता ने प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु निम्नांकित सांख्यिकी का प्रयोग किया है –

1– मध्यमान

2– प्रमाणिक विचलन

3– प्रमाणिक त्रुटि

4– आलोचनात्मक अनुपात

5— लेखाचित्र

<u>अनुसंधान विधि</u> :

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के अध्ययनार्थ शोधकर्त्री ने आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है क्योंकि बड़े न्यादर्श पर आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि सर्वोपयुक्त विधि है

**शोध के मुख्य निष्कर्ष** : प्रस्तुत शोध अध्ययन किशोरो की संप्राप्ति स्तर बुद्धि लब्धि, आयु वर्ग एवं सामाजिक भिन्नता का पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं पर क्या प्रभाव पड़ता है ? इस का उत्तर देता है ।

उपरोक्त तथ्यों के परीक्षण के लिये 'टी अनुपात' का प्रयोग किया गया है जिनमें निर्मित प्रावकल्पनाओं के अनुसार निम्नांकित क्षेत्रों में 0.01 तथा 0.05 स्तर पर सार्थकता देखने को मिलती है ।

(1) किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(2) पूर्व किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(3) मध्य किशोरावस्था मे उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरो की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(4) उत्तर किशोरावस्था में उच्च संप्राप्ति एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01

दोनों स्तर पर सार्थक है । व्यावसायिक समस्यायें केवल .05 स्तर पर सार्थक है .01 स्तर पर असार्थक है ।

(5) किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । शारीरिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(6) किशोरावस्था में उच्च बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोारों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(7) किशोरावस्था में सामान्य बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक एवं शारीरिक समस्यायें .05 स्तर पर सार्थक है एवं .01 स्तर पर असार्थक है व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(8) पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की व्यावसायिक, शारीरिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । पारिवारिक एवं सांवेगिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(9) पूर्व किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । विलिंगी समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है

(10) पूर्व किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(11) मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है। शैक्षिक संबंधी समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है .01 स्तर पर असार्थक है।

(12) मध्य किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है शैक्षिक संबंधी समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक हैं .01 स्तर पर असार्थक है।

(13) मध्य किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की सांवेगिक एवं व्यावसायिक समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है। सामाजिक समस्यायें .05 स्तर पर सार्थक है एवं .01 स्तर पर असार्थक है।

(14) उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं सामान्य बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है।

(15) उत्तर किशोरावस्था में उच्च एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है। व्यवितगत समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है .01 स्तर पर असार्थक है।

(16) उत्तर किशोरावस्था में सामान्य एवं निम्न बुद्धि लब्धि प्राप्त किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है। सांवेगिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है। किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है।

(17) किशोरावस्था में पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर

सार्थक है। सांवेगिक एवं शारीरिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है। किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है।

(18) किशोरावस्था में पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर असार्थक है ।

(19) किशोरावस्था में मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । सामाजिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(20) उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । व्यक्तिगत समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(21) उच्च संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 स्तर पर सार्थक है ।

(22) उच्च संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, शैक्षिक संबधी, एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । सामाजिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(23) निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है । किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(24) निम्न संप्राप्ति प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है , व्यक्तिगत समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(25) निम्न संप्राप्ति प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । सांवेगिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है।

(26) उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(27) उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । पारिवारिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(28) उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था के किशोरों की सांवेगिक, एवं शैक्षिक संबधी, समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । सामाजिक एवं विलिंगी समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है।

(29) सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की शैक्षिक संबधी एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है। किन्तु पारिवारिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है पर .01 स्तर पर असार्थक है ।

(30) सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था के किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(31) सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था के किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । शैक्षिक संबधी एवं सामाजिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है।

(32) निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं मध्य किशोरावस्था वाले किशोरों की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(33) निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त पूर्व एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । सांवेगिक एवं सामाजिक समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(34) निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों की व्यावसायिक, समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । स्कूल सम्बन्धी समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है .01 स्तर पर असार्थक है।

(35) किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की पारिवारिक,सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोंनों स्तर पर सार्थक है विलिंगी समस्यायें .05 स्तर पर तो सार्थक है किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(36) पूर्व किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों के सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक एवं सामाजिक समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है ।

(37) मध्य किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों के पारिवारिक, सांवेगिक, शैक्षिक संबधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है । व्यावसायिक समस्यायें .05 पर तो सार्थक हैं किन्तु .01 स्तर पर असार्थक है ।

(38) उत्तर किशोरावस्था में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों के पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्यायें .05 एवं .01 दोनों स्तर पर सार्थक है, शैक्षिक संबंधी समस्यायें .05 पर तो सार्थक हैं किन्तु .01 स्तर पर असार्थक हैं।

**अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता**

कोई भी अनुसंधान अथवा शोध प्रयास तभी सार्थक हो सकता है जबकि उसके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष समाजोपयोगी हो। यह शोध प्रबन्ध भी संप्राप्ति स्तर की भिन्नता, आयु वर्ग की भिन्नता, बुद्विलब्धि की भिन्नता एवं सामाजिक स्तर की भिन्नता का किशोरों के पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक,व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाता है इस अध्ययन से पता चलता है कि :–

(1) संप्राप्ति स्तर की भिन्नता किशोरों की समस्याओं पर प्रभाव डालती है अर्थात् निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरो में समस्याओं की अधिकता होती है । कदाचित इसका कारण उनकी हीन भावना, शिक्षकों एवं परिवार जनों की उपेक्षा हो सकती हैं ।

(2) बुद्विस्तर की भिन्नता किशोरो की समस्याओं पर प्रभाव डालती हैं अर्थात उच्च बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों से सामान्य बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरो एवं सामान्य बुद्विंलब्धि प्राप्त किशोरो से निम्न बुद्विलब्धि प्राप्त किशोरों की समस्यायें अधिक होती है कदाचित ही बुद्वि समस्याओं की गम्भीरता पर प्रभाव डालती है।

(3) आयु वर्ग की भिन्नता किशोरों की समस्याओं पर प्रभाव डालती हैं ।

(4) सामाजिक स्तर की भिन्नता भी किशोरों की समस्याओं पर अपनी स्पष्ट छाप छोड़ती हैं।

अर्थात उपरोक्त चारों तथ्यों को ध्यान में रखकर अगर किशोरों की समस्याओं के लिये उन्हें निर्देशन दिया जाये तो समस्याओं का एक हद तक निदान सम्भव है ।

## अध्ययन की सीमायें

(1) प्रस्तुत अध्ययन में केवल जालौन जिले की पूर्व, मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था वाले किशोरों को लिया गया है ।

(2) किशोरावस्था की केवल उच्च एवं निम्न संप्राप्ति प्राप्त किशोरों को ही लिया गया है।

(3) उच्च निम्न एवं सामान्य बुद्विलब्धि स्तर वालें किशोरों का ही तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

(4) शहरी एवं ग्रामीण किशोरों को ही अध्ययनार्थ लिया गया है।

(5) किशोंरो की पारिवारिक, सांवेगिक, व्यावसायिक, शैक्षिक संबंधी, शारीरिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विलिंगी समस्याओं कों ही लिया गया हैं।

## आगामी अध्ययन हेतु सुझाव

शोधकर्त्री ने इस तथ्य का पूर्ण ज्ञान करके जिस समस्या का समाधान तथा अध्ययन करने की चेष्टा की थी वह तो अपेक्षाकृत पूर्ण है । प्रत्येक शोध कार्य में किसी समस्या के एक अथवा कुछ अंशों तक अध्ययन किया जाता है बाकी पक्ष अछूते रह जाते है। शोधकर्त्री का विचार है कि न्यायदर्श तथा उपकरणों की दृष्टि से इसी अध्ययन को व्यापक तथा विस्तृत बनाने की आवश्यकता है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष एवं सीमाओं को ध्यान में रखकर निम्नलिखित समस्याओं पर शोध कार्य किया जा सकता है ।

(1) प्रस्तुत अध्ययन केवल जालौन जिले के किशोरों पर ही किया गया है यह अन्य क्षेत्रों की किशोरों पर भी किया जा सकता है ।

(2) विषय वर्ग की भिन्नता के आधार पर भी यह अध्ययन संभव है ।

(3) सावासीय एवं अनावासीय किशोरों की समस्याओं के आधार पर भी अध्ययन किया जा सकता है।

(4) सामाजिक आर्थिक स्तर की भिन्नता के आधार पर भी यह अध्ययन संभव है ।

(5) समस्याओं के अन्य पक्षों पर भी यह अध्ययन संभव है ।

(6) सुविधा प्राप्त एवं सुविधा विहीन किशोर– किशोरियों की समस्याओं के आधार पर भी यह अध्ययन संभव है ।

(7) शारीरिक रूप से विकलांग एवं सामान्य किशोर – किशोरियों की समस्याओं पर भी ये अध्ययन संभव है ।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. एन्ड्रल विले : "एडमिनिस्ट्रेशन एण्ड औरगाइजेशन ऑफ द गाइडेन्स प्रोग्रामन्यूयार्क हायर एण्ड ब्रदर्स, सन् 1958

2. वैरट जे0 डब्ल्यू : रिसर्च इन एजूकेशन, यू0 एस0 प्रैन्टिस हाल 1959

3. विघ्म एफ0 एल0 : एलीमेन्ट आर्फ एजूकेशनल रिसर्च न्यूयार्क प्रिन्टिस – 1954

4. भटनागर, पारस नाथ : अनुसंधान परिचय, आगरा लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, 1974

5. वौलमैन बैजामिन वी : "डिक्शनरी आफ विहैविरल साइंस" अमेरिकन लायब्रेरी एसोसियेशन 1973"

6. गैरेट एच0 ई0 : जनरल साइकोलाजी न्यू दिल्ली, यूरेशिया पब्लिशिंग हाऊस 1966

7. गैरेट एच0 ई0 : शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी लुधियाना कल्याण पब्लिशर्स सन् 1976

8. गुडे डब्ल्यू जे0 एण्ड0 हैट : मैथड्स इन सोशल रिसर्च इन टोकियो , मेग्राहिल बुक कम्पनी 1952

9. गुड कार्टर वी0 सी0 एस0 एण्ड स्केटस ई : मैथडस आफ रिसर्च न्यूयार्क 1959

10. गुड कार्टर बी0 : मेथडालॉजी आफ एजूकेशनल रिसर्च न्यूयार्क 1941

11. गुड एण्ड हैट : मैथडस इन रिसर्च, न्यूयार्क मैकग्राहिल बुक कम्पनी सन् 1952

12. घोष एवं चौधरी : "स्टेटिरिक थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस, टेन्थ एडीशन

13. हैविंग हर्स्ट आर0 जे0 : डवलपमेंन्टल टास्कस एण्ड एजूकेशन न्यूयार्क लौन्गमन्सग्रीन एण्ड कं0 1952 (संशोधित संस्करण)

14. हर्लोक, एलिजाबेथ : ए डोलेसेन्ट डवलपमेंट, मेकग्राहिल बुक कं0 न्यूयार्क द्वितीय संस्करण 1954

15. हॉल जी0 एस0 : " अडोलेसेन्स" इटस साइकोलोजी एण्ड इटस रिलेशन्स टू फिजियोलोजी,अन्थोपोलोजी, सोशियालोजी, सेक्स0 काइम, रिलीजन एण्ड एज्यूकेशन न्यूयार्क 1904

16. होर्न ए0 एच0 : डेमोक्रैटिक फिलॉसफी ऑफ एजूकेशन मैकमिलन बुक कम्पनी, न्यूयार्क 1932

17. जैन के0 सी0 : गाइडेन्स नीडस इन स्कूल्स एजूकेशनल ट्रेन्डस वर्ष 11 अंक 2 जुलाई 1976

18. जरासिल्ड आर्थर टी0 : द साइकोलोजी ऑफ अडोलेसेन्स मैकमिलन एण्ड कम्पनी 1963

19. जोन्स आर्थर जे0 : प्रिसीपिल आफ गाइडेन्स न्यूयार्क चतुर्थ संस्करण 1951

20. काण्ट ई0 : दि एजूकेशनल थ्योरी ऑफ इम्मेनुअर काण्ट अनुवादित एवं प्रकाशित एडवर्ड फेकमिलन एकनर के द्वारा ।

21. किंग डब्ल्यू0 आई : दि एलीमेंट आर्फ स्टटिरिकल मैथड

22. कौन बैक एल0 जे0 : "एसैन्सियल ऑफ साइकोलीजिकल टैस्टिंग न्यूयार्क, हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1944

23. भुनेश डब्ल्यू0 एस0 : एन साइकलोपीडिया ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, न्यूयार्क मैकमिलन कम्पनी सन् 1963

24. लेकान तथा मेयर : अण्डर स्टैण्डिंग एजूकेशनल रिसर्च मैग्राहिल बुक कम्पनी न्यूयार्क ।

25. लोविन ई0 डी0 : प्रोडिक्शन ऑफ एकेडिमिक पराफारमेंन्स न्यूयार्क जानविली एण्ड संस 1967

26. रमल के0 एफ0 : "एन इन्ट्रोडक्शन रिसर्च प्रासीजर इन एजूकेशन" न्यूयार्क हार्पर ब्रदर्स 1958

27. सिन्हा दुर्गाप्रसाद : विश्वविद्यालयी शिक्षा मे सफलता एवं असफलता के उपादान, इण्डियन एजूकेशनल रिव्यू (एन0 सी0 ई0 आर0 टी0) 1 जुलाई 1966

28. रट्रप्स एमरी और वालक्विस्ट जी0 एल0 : "प्रिसिंपल्स एण्ड प्रैक्टिसेज इन गाइडेन्स/न्यूयार्क मैकग्राहिल बुक कम्पनी 1958

29. सुखिया एस0 पी0 : शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व प्रकाशक विनोद पुस्तक मंदिर 1 दिसम्बर 1970

30. टैवर्स राबर्ट एम0 डब्ल्यू : एन एन्ट्राडक्शन टू एजूकेशनल रिसर्च न्यूयार्क, मैकमिलन कं0 सन् 1964

31. वार डेविस एण्ड जॉनसन : एजूकेशनल रिसर्च एण्ड अप्रैजल यू0 ए0 ए0 लिपिन कोट कम्पनी सन् 1953

32. थ्लैस आर0 एच0 : सांइटिफिक मैथ एण्ड यूज आफ स्टेटिक्स दि स्टडी आफ सोसायटी ।

33. व्हिारनी एफ0 एल0 : एलीमेंन्ट आफ रिसर्च एशिया पब्लिशिंग हाऊस बम्बई 1961

34. पी0 वी0 यंग कोटेड बाई एम0 एन0 वर्मा : इन्ट्रोडेक्शन टू एजूकेशनल एण्ड साइकोलोजिक रिसर्च लंदन यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस 1945

35. यंग पी0 वी0 : "साइंटिफिक सोशल सर्विसेज एण्ड रिसर्च बम्बई, एशिया हाउस 1960

डिजरटेशन एब्सटेक्टस इण्टरनेशनल 1991–1994

## जर्नल

1. एजूकेशनल ट्रेन्डस – जुलाई 1976 वर्ष 11 अंक ।

2. राजस्थान बोर्ड आफ जर्नल एजूकेशन, अक्टूबर, दिसम्बर, अजमेर (1969 वर्ष 5, अंक 4)

## मैनुअल

1. एस0 एस0 जलोटा : मैनुअल आरू जनरलमेंटल एबिलिटि टेस्ट साइको सेन्टर दिल्ली।

2. डा0 मिथलेश वर्मा : मैनुअल ऑफ यूथ प्राब्लम इन्वेटरी कानपुर ।

स्वनिर्मित : युवा समस्या अभिसूची ।

# "युवा समस्या अभिसूची"

रामलखन विश्वकर्मा
रीडर
शिक्षक शिक्षा विभाग
डी0वी0 कालेज, उरई

शिखा श्रीवास्तव
शोधकर्त्री
डी0वी0 कालेज,
उरई

## आपसे संबंधित सूचनायें :–

नाम.............................................. लिंग..............................................

आयु.............................................. कक्षा..............................................

दिनांक.............................................. स्थान..............................................

## निर्देश

प्रायः देखा गया है कि युवावस्था में समस्याओं की अधिकता होती है। जिनका मनोवैज्ञानिक समाधान सम्भव है, अतः आप निःसंकोच सूचनायें दीजियेगा, ये आपके हित में उचित है आपके सभी उत्तर गोपनीय रखे जायेंगे।

अभिसूची में दिये गये। कथनों को ध्यान से पढ़िये, हर कथन सामने "सत्य", एवं "असत्य" लिखा हुआ है, यदि आप कथन से पूर्ण रूप से सहमत हैं तो "सत्य" के नीचे वाले खाने में (सही का निशान) लगाइये, यदि आप कथन से पूर्ण रूप से सहमत नहीं है पर कुछ अंश तक सहमत है तो (आंशिक सत्य) के नीचे वाले खाने में सही का निशान लगाइये, और अगर आप कथन से पूर्ण रूप से असहमत है तो "असत्य" वाले खाने के नीचे सही का निशान लगाइये।

ध्यान रखियेगा कि प्रत्येक कथन के लिये "सही" का निशान लगाना आवश्यक है। एक कथन के लिये एक ही खाने में "सही" का निशान लगाना है।

## उदाहरण :–

| | सत्य | आंशिक सत्य | असत्य |
|---|---|---|---|
| आप अपने जीवन से खुश है | .... | .... | .... |

अगर आप अपने जीवन से वास्तव में खुश है तो सत्य के नीचे 'सही' का चिन्ह लगाइये। यदि कुछ अंश तक खुश है तो आंशिक सत्य के नीचे 'सही' का चिन्ह लगाइये, और अगर नाखुश है तो असत्य के नीचे 'सही' का चिन्ह लगाइये।

## समस्यायें

| क्षेत्र | समस्यायें |
|---|---|
| A | पारिवारिक समस्यायें |
| B | संवेगिक समस्यायें |
| C | व्यावसायिक समस्यायें |
| D | स्कूल सम्बन्धी समस्यायें |
| E | शारीरिक समस्यायें |
| F | सामाजिक समस्यायें |
| G | व्यक्तिगत समस्यायें |
| H | विभिन्न समस्यायें |

| | सत्य | आंशिक सत्य | असत्य |
|---|---|---|---|
| १- आपके माता-पिता अच्छा कार्य करने पर आपको प्रोत्साहित करते हैं। | ... | ... | .... |
| २- आपके माता-पिता में प्रायः मतभेद रहता है। | ... | ... | ... |
| ३- आपके माता-पिता आपके मित्रों का घर आना पसन्द करते हैं। | ... | ... | ... |
| ४- आपके माता-पिता चाहते हैं कि बस आप उनके इच्छानुरूप ही कार्य करें। | ... | .... | ... |
| ५- आपके माता-पिता पुत्र-पुत्रियों को समान मानते हैं। | ... | .... | ... |
| ६- आपके माता-पिता अपने आदर्शों को अपनाने के लिए आप पर जोर देते हैं। | .... | ... | ... |
| ७- आपके एवं आपके माता-पिता के विचारों में प्रायः समानता होती है। | ... | ... | ... |
| ८- आपके माता-पिता आपकी क्रियाओं के प्रति कड़ी निगाह रखते हैं। | ... | ... | ... |
| ९- आपके भाई-बहन आपके विचारों से सहमत रहते हैं। | ... | ... | ... |
| १०-आपको छोटी सी ग़लती पर होने पर भी अपने माता-पिता से डर लगता है। | .... | ... | ... |
| ११-आपके माता-पिता आपकी समस्या सुलझाने में मदद करते हैं। | ... | ... | ... |
| १२-आपके माता-पिता आपके खेल-कूद, ड्रामें में भाग लेने यात्रा करने के सम्बन्ध में रोक लगाते हैं। | ... | ... | ... |
| १३-आप अपने माता पिता के समक्ष अपने विचारों को निश्चिन्त होकर प्रस्तुत कर सकते हैं। | .... | .... | .... |
| १४-आपके माता-पिता आपसे आपकी सामर्थ्य से अधिक आशा रखते हैं। | .... | ... | ... |
| १५-आपके माता-पिता आपकी रूचियों एवं योग्यताओं को स्वीकार करते हैं। | ... | ... | ... |
| १६-आपके माता-पिता कहते हैं कि आप अपना अच्छा बुरा समझने में असमर्थ हैं। | ... | .... | ... |
| १७-आपके माता पिता आपकी पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं में सहायता करते हैं। | ... | ... | ... |
| १८-आपके माता-पिता आपको अकेले घर से बाहर जाने को मना करते हैं। | ... | .... | .... |
| १९-आपके घर में आपको इच्छानुसार वातावरण मिलता है। | ... | ... | ... |
| २०-आपके भाई-बहिन हर बात में खुद को आपसे अच्छा समझते हैं। | ... | ... | .... |

| | सत्य | आंशिक सत्य | असत्य |
|---|---|---|---|
| १-आपको अपने परिवार जन एवं सह-सम्बन्धियों से यथोचित प्यार मिलता है। | ... | ... | .... |
| २-आपकी अगर कोई थोड़ी भी आलोचना करे तो वह आपके लिए असहनीय होती है। | .... | .... | ... |
| ३-आप अपने स्नेहिल व्यक्तियों पर विश्वास रखते हैं। | ... | .... | ... |
| ४-आपको लगता है कि आपके जीवन का कोई अर्थ नहीं है। | ... | ... | .... |
| ५-आप अपने परिवारजन से मिलकर हर्ष की अनुभूति करते हैं। | ... | ... | .... |
| ६-आप सोचते हैं कोई आपका नहीं है। | .... | ... | .... |
| ७-आप मानसिक रूप से प्रायः चिन्तामुक्त रहते हैं। | ... | ... | ... |
| ८-आप अपना क्रोध स्वयं को नुकसान पहुँचा कर उतारते हैं। | ... | ... | ... |
| ९-आपसे सम्बन्धित लोग आपको स्वीकारते हैं। | .... | ... | ... |
| १०-आपको लगता है आप अन्य लोगों से हीन हैं। | .... | ... | ... |
| ११-आप अपने संवेगों को अपने से संबन्धित व्यक्तियों से बाँटने की क्षमता रखते हैं। | ... | ... | ... |
| १२-आपको अकेले में बेचैनी अनुभव होती है। | ... | .... | ... |
| १३-आप अपने जीवन से एक हद तक सन्तुष्ट हैं। | ... | .... | .... |
| १४-आप सोचते हैं आप में कोई विशेषता नहीं है। | .... | ... | ... |

[ C ]

| | सत्य | आंशिक सत्य | असत्य |
|---|---|---|---|
| १-अपने भविष्य के लिए अपना व्यवसाय निर्धारित कर रखा है। | ... | ... | ... |
| २-आपकी रूचि के व्यवसाय हेतु उचित प्रशिक्षण अभाव है। | ... | .... | ... |
| ३-आप अपने इच्छानुसार व्यवसाय चुनने लिए स्वतन्त्र हैं। | ... | .... | .... |
| ४-आपको अपने व्यवसाय की प्राप्ति हेतु उचित निर्देश नहीं मिल पाता है। | ... | ... | ... |
| ५-आपमें आपकी रूचि के व्यवसाय की प्राप्ति हेतु योग्यतायें एवं क्षमतायें हैं। | .... | ... | .... |
| ६-आपके पास अपनी रुचि के व्यवसाय को प्राप्त करने के लिए आर्थिक साधनों की हीनता है। | ... | ... | .... |

[ D ]

| | सत्य | आंशिक सत्य | असत्य |
|---|---|---|---|
| १-आप अपने शिक्षकों से संतुष्ट हैं, | ... | ... | ... |
| २-आप इच्छा होते हुए भी विद्यालय की अन्य पाठ्येतर क्रियाओं में भाग लेने से घबराते हैं। | ... | ... | .... |
| ३-आप अपनी समस्यायें शिक्षकों के सामने बेझिझक प्रस्तुत करते हैं। | .... | ... | ... |
| ४-आपको लगता कि आप कक्षा के स्तर से कम ज्ञान ग्रहण कर पाते हैं। | ... | ... | ... |
| ५-आपके शिक्षक आपको अच्छे कार्य करने पर प्रोत्साहित करते हैं। | ... | ... | .... |

| | सत्य | आंशिक सत्य | असत्य |
|---|---|---|---|
| ६-आपके विचार से आपके शिक्षकों का ज्ञान अधूरा है। | ... | ... | ... |
| ७-आपको नई जानकारियों के लिए विद्यालय में पर्याप्त अवसर मिलते हैं। | .... | .... | ... |
| ८-आपके शिक्षक कक्षा में आपकी हँसी उड़ाते हैं। | ... | ... | .... |
| ९-आपके शिक्षक आपकी जिज्ञासाओं को सुलझाने में मदद करते हैं। | ... | ... | .... |
| १०-आपके सहपाठी आपसे व्यंग पूर्वक बात करते हैं। | .... | ... | .... |
| ११-आपके शिक्षक सब शिक्षार्थियों के साथ समान व्यवहार करते हैं। | .... | ... | .... |
| १२-आपके शिक्षक अपना पाठ अच्छी तरह समझाने में असमर्थ हैं। | ... | ... | ... |
| १३-आपके सहपाठियों का आपके साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार है। | .... | .... | ... |
| १४-आपके शिक्षक बिना गलती के ही आपको डाट देते हैं। | ... | ... | ... |
| १५-आपकी रूचि के विषय आपके विद्यालय में पढ़ाये जाते हैं। | ... | .... | .... |
| १६-आपके शिक्षक आपकी योग्यताओं को नजरन्दाज करते हैं। | ... | ... | .... |
| १७-आपको जिन विषयों में मदद की जरूरत होती है आपके शिक्षक उन विषयों में आपकी मदद करते हैं। | .... | ... | ... |
| १८-आपके शिक्षक अपने ही विचारों को मानने पर मजबूर करते हैं। | ... | ... | ... |
| १९-आपके शिक्षक आपकी समस्याओं के समाधान हेतु उचित निर्देशन देते हैं। | ... | ... | .... |
| २०-आपके सहपाठी पाठ्यक्रम सम्बन्धित विषयों में आपसे ईर्ष्या करते हैं। | ... | ... | ... |

[ E ]

| | | | |
|---|---|---|---|
| १-आपका शारीरिक व्यक्तित्व आकर्षक है। | | | |
| २-आपकी लम्बाइ औसत से कम है। | .... | ... | ... |
| ३-आपकी आवाज मधुर है। | ... | ... | .... |
| ४-आपके विचार से आपकी आँखें सामान्य व्यक्तियों से कम सुन्दर है। | .... | .... | ... |
| ५-आप अपने शारीरिक परिवर्तनो से सन्तुष्ट हैं। | .... | ... | ... |
| ६-आपको अपनी शारीरिक बनावट के कारण अपने समायु साथियों के समक्ष हीनता महसूस होती है। | ... | ... | ... |
| ७-आपका वजन आपकी आयु के अनुरूप है। | .... | ... | ... |
| ८-अपने शारीरिक रंग रूप को लेकर आपको खिन्नता होती है। | .... | ... | .... |
| ९-आप शारीरिक रूप से स्वस्थ हैं। | .... | ... | ... |
| १०-आपको अपने शरीर में आये कुछ परिवर्तनों को लेकर घबराहट होती है। | .... | ... | ... |

[ F ]

| | | | |
|---|---|---|---|
| १-आपको अपने से सम्बन्धित व्यक्तियों के समक्ष अपने सामाजिक स्तर के कारण गर्व होता है। | ... | .... | ... |
| २-आप सामाजिक रीति रिवाजों से असन्तुष्ट हैं। | ... | .... | .... |
| ३-आप अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आर्थिक रूप से समर्थ है। | ... | ..... | .... |
| ४-औरों के सामने आपको अपनी पोशाक खराब लगती है। | .... | ... | .... |
| ५-आपके पड़ोसियों के साथ आपके सबंध अच्छे हैं। | ... | ... | ... |
| ६-आपको अपने आस-पास के लोगों के सामने शर्म महसूस होती है। | ... | ... | .... |
| ७-आपको सामाजिक उत्सवों में भाग लेने से आनन्द आता है। | ... | ... | ... |
| ८-आपके समूह के लोग आपसे एवं आपके परिवार से स्वयं को श्रेष्ठ समझते हैं। | ... | ... | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९-आपका परिवार समाज में एक सभ्य परिवार का दर्जा रखता है। | .... | .... | ... |
| १०-आपको अपने परिवार की आर्थिक दशा हीन होने के कारण अन्य लोगों से मिलने जुलने में हिचकिचाहट होती है। | ... | ... | .... |

## [ G ]

| | सत्य | आंशिक सत्य | असत्य |
|---|---|---|---|
| १-आपके व्यक्तित्व का अन्य लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। | ... | ... | .... |
| २-आपको अपने नजदीकी रिश्तेदारों को छोड़कर अन्य लोगों से बात करने में घबराहट होती है। | ... | ... | ... |
| ३-आप सभ्य एवं संस्कृत व्यक्ति हैं। | ..... | ... | .... |
| ४-आपको लगता है कि आपके अपनाये हुये जीवन मूल्य गलत हैं। | .... | ... | ... |
| ५-आपमें जिम्मेदारी से काम करने की क्षमता है। | ... | .... | ... |
| ६-आपको लगता है आपकी आदतों में परिवर्तन होना चाहिए। | .... | .... | .... |
| ७-आपका वर्तमान के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। | ... | ... | ... |
| ८-आपके विचारों में प्रायः अस्थिरता रहती है। | .... | ... | .... |
| ९-आप अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को सुलझाने में समर्थ हैं। | ... | ... | ... |
| १०-आप अपने पारिवारिक एवं व्यक्तिगत जीवन से असंतुष्ट हैं। | ... | ... | ... |

## [ H ]

| | सत्य | आंशिक सत्य | असत्य |
|---|---|---|---|
| १-आपको भिन्नलिंगी साथियों से मित्रता करना अच्छा लगता है। | .... | .... | ... |
| २-आपको अपने भिन्नलिंगी साथियों के साथ बातचीत करते हुए हिचकिचाहट महसूस होती है। | ... | ... | ... |
| ३-आपको लगता है कि आप अपने भिन्नलिंगी साथियों को आकर्षित करने में समर्थ हैं। | .... | ... | ... |
| ४-आपके भिन्नलिंगी साथी आपका उपहास करते हैं। | .... | ... | ... |
| ५-आप में वे सब गुण हैं जिनकी अपेक्षा आपके भिन्नलिंगी साथी करते हैं। | .... | .... | ... |
| ६-आपको लगता है कि आपमें भिन्नलिंगी साथियों से मित्रता करने की योग्यता नहीं है। | .... | ... | .... |
| ७-आपके भिन्नलिंगी साथी आपसे दोस्ती करना पसन्द करते हैं। | ... | .... | .... |
| ८-आपके माता-पिता आपके भिन्नलिंगी साथियों के साथ सैर सपाटे पर जाने में रोक लगाते हैं। | ... | ... | .... |
| ९-आपके परिवार वाले आपकी भिन्नलिंगियों से दोस्ती पसन्द करते हैं। | .... | ... | ... |
| १०-आप अपने भिन्नलिंगी साथियों में जिसे पसन्द करते हैं उसे आप पसन्द नहीं हैं। | ... | ... | .... |

गोपनीय



# मानसिक योग्यता की सामूहिक परीक्षा (72)

(यह पुस्तिका किसी अनाधिकारी के हाथों में न जानी चाहिए)।

(आवृत्ति 84)

---

**प्रारम्भिक आदेश**

इस प्रश्न-पुस्तिका के सभी उत्तरों को केवल उत्तर-पत्र पर ही लिखना होगा।
इस परीक्षा पुस्तिका पर कुछ लिखना या चिन्ह न बनाना चाहिए।

हम अपनी सामान्य मानसिक योग्यता की परीक्षा करना चाहते हैं।
केवल 20 मिनट का समय है। आप के सामने 100 प्रश्न आयेंगे।

इस परीक्षा के आरम्भ होने से पहले इसमें दिए गए सब प्रकार के प्रश्नों और उनके उत्तर लिखने की विधि को उदाहरण देकर समझाया जायेगा। हमें आशा है कि आपको उचित सफलता मिलेगी। सभी प्रश्न साधारण भाषा में हैं। प्रत्येक प्रश्न के दोनों ओर प्रश्न की क्रमिक संख्या छपी है। प्रायः सभी प्रश्नों के कुछ सम्भाव्य वैकल्पिक उत्तर भी दिये गए हैं। हर एक वैकल्पिक उत्तर की संख्या भी उसके साथ छपी है। आपको हर प्रश्न को समझ कर केवल उसके सही उत्तर को चुनना है, तथा उस उत्तर की संख्या को तत्काल उत्तर पत्र के क्रम अनुसार उचित स्थान पर लिखना है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर संख्या में देना है। अर्थात् अक्षरों में कुछ नहीं लिखना है।

ध्यान रखें प्रत्येक प्रश्न का एक ही ठीक उत्तर है। समय अधिक नहीं है। सब प्रश्नों का सही उत्तर बहुत कम लोग दे सकते हैं। अतएव आपको खूब शीघ्रता से काम करना चाहिए और अधिक से अधिक सही प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करना चाहिए। अगर कोई प्रश्न आपको अधिक कठिन लगता है, तब उस पर सोच विचार में अधिक समय नष्ट न करें। उसे छोड़ दें और उत्तर पत्र के निश्चित स्थान पर एक कोने में हल्का सा चिन्ह बना दें, और अगले प्रश्न का उत्तर सोच कर तुरन्त उसके उचित स्थान पर लिखें। यदि अन्त में समय हो, तो अपने उत्तरों को दोहरा लीजिए तथा छूटे हुए प्रश्नों का हल सोच कर लिखिए।

× × ×

आरम्भ करने की आज्ञा सुनकर ही आप प्रश्नों को पढ़ने और उत्तर लिखने का कार्य आरम्भ करें, और जितनी शीघ्रता से हो सके साफ उत्तर लिखिए।

एक बात और ध्यान रखिए इस प्रश्न पुस्तिका पर आपको कुछ नहीं लिखना है, और न इस पर किसी प्रकार का चिन्ह ही लगाना है।

केवल उत्तर-पत्र पर यथोचित स्थान में उत्तर की संख्या ही लिखनी है।

## अभ्यास के लिए उदाहरण

इस परीक्षा में जिस प्रकार के प्रश्न पूछे गये हैं, उन के दो-दो उदाहरण नीचे दिये गये हैं इन में से पहले का उत्तर भी उत्तर पत्र पर छपा है किन्तु दूसरे का उचित उत्तर देने का अभ्यास आप सरलता से कर सकेंगे।

आइये अब हम इन को पढ़ें और इन को हल करने की विधि समझें-- 　　　　उदाहरण संख्या ↓

1. वृक्ष का अर्थ है, (1) पेड़, (2) जमीन, (3) घास (4) फल (1)
2. आज्ञा का अर्थ है, (1) कठोर, (2) स्वामी, (3) निर्देश, (4) पालन (2)
3. अच्छाई का उल्टा है, (1) चालाकी (2) बुराई, (3) लड़ाई, (4) नम्रता (3)
4. जीवन का उल्टा है, (1) निराशा, (2) आनन्द, (3) मिट्टी, (4) मृत्यु (4)
5. नीचे दिये संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें :— 1, 2, 3, 4, 5, 6 --- .... (5)
6. नीचे दिये संख्या क्रम के अनुसार आगे की संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें :— 1, 14, 13, 12, 11, 10 --- (6)
7. इन पाँच शब्दों में से बेमेल की संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें— (1) घोड़ा, (2) मुर्गा, (3) हाथी, (4) मोर, (5) लड़का (7)
8. इन पाँच शब्दों में से बेमेल शब्द की संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें— (1) निबन्ध; (2) लेखक, (3) उपन्यास, (4) कविता (5) स्तम्भ, (8)
9. छाता एक लाभदायक वस्तु है, इसलिए कि वह (1) कपड़े का बनता है। (2) हमें धूप व वर्षा से बचाता है। (3) वह सब देशों में मिलता है। (9)
10. लोग बिल्लियाँ इसलिए पालते हैं, कि (1) उनकी खाल कोमल होती है। (2) वे कुत्तों से डरती हैं। (3) वे चूहे पकड़ती हैं। (10)
11. कलम : लिखना : : चाकू : (1) आम, (2) काटना, (3) लोहा, (4) खाना (11)
12. खीर : चावल : : हलवा : (1) पूरी, (2) दही, (3) दूध, (4) सूजी (12)
13. हरदेव से सुरजीत लम्बा है, किन्तु हरदेव से जगजीत नाटा है। तो सब से लम्बा कौन ? (1) हरदेव, (2) सुरजीत, (3) जगजीत (13)
14. राम के पीछे गोविन्द खड़ा है, गोविन्द के पीछे चन्दन खड़ा है, और हरि के पीछे चन्दन खड़ा है, तो सब के पीछे कौन खड़ा है ? (1) राम, (2) गोविन्द, (3) चन्दन (4) हरि (14)

—•—

परीक्षा आरम्भ होने से पहले अपनी सभी शंकायें पूछ लीजिये।

पृष्ठ (पहला)

## मानसिक योग्यता की सामूहिक परीक्षा (72)

(उत्तर-पत्र पर क्रमांक के अनुकूल उचित उत्तर की संख्या लिखें)। प्रश्न संख्या ↓

1. प्रकाश का उल्टा है, (1) काला, (2) लैम्प, (3) सूट, (4) अन्धकार (1)

2. कृपा का अर्थ है, (1) धर्म, [illegible] कर्म, (3) दया, (4) दान (2)

3. पुलिस थाना चौबीस घण्टे खुला र[illegible] (1) पुलिस अधिकारियों को 24 घण्टे का वेतन मिलता है। (2) लूट मार और दंगे [illegible] किसी समय हो सकती है। (3) पुलिस वालों को दिन रात की वर्दियाँ मिलती हैं

4. मोटा का उल्टा है, (1) छोटा, (2) पतला, (3) हल्का, (4, परिश्रमी. (4)

5. घर का अर्थ है, (1) बीवी, (2) परिवार, (3) मकान, (4) कमरा (5)

6. इन पाँच शब्दों में से बे-मेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें—
(1) प्लेट, (2) चम्मचा, (3) प्याला, (4) पतीला, (5) केला. (6)

7. भीतर का उल्टा है, (1) बाहर, (2) खुला, (3) मैदान, (4) तांग. (7)

8. विद्या का अर्थ है, (1) पुस्तक, (2) ज्ञान, (2) रहस्य, (4) विज्ञान. (8)

9. लक्ष्मण की आयु में सीता बड़ी है, परन्तु लक्ष्मण से भरत छोटा है। तब इनमें सबसे बड़ा कौन है ?
(1) लक्ष्मण, (2) भरत, (3) सीता. (9)

10. साधु का उल्टा है, (1) झगड़ा, (2) दुष्ट, (3) भजन, (4) लड़का (10)

11. इन पाँच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें :—
(1) मोटर, (2) साइकल, (3) तांगा, (4) तार, (5) रेलगाड़ी. (11)

12. विष का उल्टा है, (1) मीठा, (2) औषध, (3) अमृत, (4) शिव. (12)

13. ऐहमद से अनवर नाटा है, किन्तु अनवर से हमीद नाटा है, तो सबसे नाटा कौन है ?
(1) ऐहमद, (2) हमीद, (3) अनवर, (13)

14. बलवान का अर्थ है, (1) मोटा, (2) धनवान, (2) प्रधान, (4) शक्तिवान (14)

15. इन पाँच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें :—
(1) चम्पा, (2) चमेली, (3) चाय, (4) बेला,. (5) गुलाब. (15)

16. अर्जुन से कमला अधिक दौड़ती है. किन्तु चपला से कमला पीछे रह जाती है, तो सबसे अधिक तेज कौन दौड़ता है। (1) चपला, (2) कमला, (3) अर्जुन (16)

17. इन पाँच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर पत्र पर लिखें :—
(1) मोटर, (2) रिक्शा, (3) तांगा, (4) पैदल (5) साइकल (17)

18. "मुख में राम बगल में छुरी" का अभिप्राय है, (1) राम-राम कहने वाले सदा बगल में छुरी रखते हैं। (2) राम कहने से छुरी से रक्षा होती है, (3) अनेक दुष्ट लोग धर्म का पाखण्ड करते हैं। (18)

19. नीचे दिए संख्या-क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें :— 8, 7, 6, 5, 4, 3. .... (19)

20. इन पाँच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें :—
(1) हृदय, (2) आँख, (3) कान, (4) नाक, (5) जीभ (20)

---

[प्रश्न 21 के लिये देखिए पृष्ठ 2 (दूसरा)] (शीघ्रता से कार्य करें)

जब तक कहा न जाए

कृपया यह

पन्ना मत उलटिये

(उत्तर-पत्र पर यथा-स्थान उचित उत्तर की संख्या लिखें।) — प्रश्न संख्या ↓

21. जूते चमड़े के इसलिए बनते हैं, (1) कि वह अधिक चलता है। (2) वह मृत पशु की खाल से बनता है (3) यह सब देशों में पाया जाता है। .... (21)

22. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें— 6 11 16, 21, 26. .... (22)

23. साँच को आँच नहीं होती, इसलिए कहते हैं कि (1) सच बोलने वाले को आग नहीं जलाती। (2) सच्चे की विजय होती है। (3) सच्चे आदमी के घर में आँच नहीं मिलती। (23)

24. नीचे दिये संख्या-क्रम के अनुसार आगे की संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें— 3 6, 9, 12, 15, 18, .... (24)

25. विदेश जाने के लिए लोग विमान यात्रा पसन्द करते हैं, इसलिए कि (1) इसमें थोड़ा समय लगता है। (2) यात्रा में खाने-पीने का पूरा प्रबन्ध होता है। (3) वह हवा में धूप से ऊपर उड़ते हैं। (25)

26. इन पाँच शब्दों में से बे-मेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें :—
(1) हाकी, (2) फुटबाल, (3) शतरंज, (4) क्रिकेट, (5) टेनिस (26)

27. पापी का मन सदा शंकित रहता है, इसलिए कि (1) उसको नरक का कष्ट भोगना पड़ेगा। (2) शंकित मन वाले पाप करते हैं। (3) पापी की पोल खुलने का डर रहता है। .... (27)

28. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें :— 6, 11, 17, 23, 29, 35, .... (28)

29. एक देश में रेल की बहुत सी लाइनें होनी चाहिए, इसलिए कि (1) इनमें माल और मनुष्यों के आने-जाने में सुविधा होती है। (2) इनसे व्यापार को लाभ होता है। (3) इनके द्वारा देश में खाद्य पदार्थों का मूल्य कम हो जाता है। (29)

30. हीरा का अर्थ है, (1) मोती, (2) महंगा, (3) पत्थर, (4) जवाहर (30)

31. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें— 3, 12, 21, 30, 39. 48, .... (31)

32. इन पाँच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर पत्र पर लिखें—
(1) कालीदास, (2) तुलसीदास, (3) जयशंकर प्रसाद, (4) बुद्ध, (5) टैगोर (32)

33. नीचे दिये संख्या क्रम के अनुसार की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें— 14, 17, 20, 23, 26, 29 .... (33)

34. घोड़ा : टाँग : गाड़ी : (1) बालक, (2) पहिया (3) सड़क, (4) टट्टू .... (34)

35. इन पाँच शब्दों में से बे-मेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें—
(1) पास, (2) दूर, (3 परे, (4) यहाँ, (5) धीमा (35)

36. लिपिक : अध्यक्ष : सैनिक (1) मजदूर, (2) विक्रेता, (3) कप्तान, (4) बालक (36)

37. इन पाँच शब्दों में से बे-मेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें—
(1) खेलना, (2) सोना, (3) गाना, (4) दौड़ना: (5) भावना .... (37)

38. तरल : ठोस :: पानी (1) बरफ (2) मछली, (3) तैरना, (4) स्नान (38)

39. नीचे दिये संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें—1, 2, 2, 4, 8, 16, 32 .... (39)

40. जनवरी : फरवरी में जुलाई : (1) मार्च (2) अगस्त (3) रविवार (4) जून. (40)

[प्र. 41 के लिए पन्ना उलटिये, और देखिए पृष्ठ 3 (तीसरा)] (शीघ्रता से कार्य करें।)

(उत्तर-पत्र पर यथा-स्थान उचित-उत्तर की संख्या लिखें।) प्रश्न संख्या ↓

41. नीचे दिये संख्या क्रम के अनुसार, आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें :— 21 19, 17 15, 13, 11, (41)

42. बहन : भाई : मासी : (1) चाचा, (3) भुआ, (3) बाबा, (4) मामा .... (42)

43. गोवर्धन की मोटाई चन्द्रन से कम है, और चन्द्रन से अधिक मोटा गिरधारी है, तो सब से दुबला कौन है ? (1) चन्द्रन (2) गिरधारी, (3) गोवर्द्धन (43)

44. नीचे दिये संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें : 18, 16, 14, 12, 10, 8 .... (44)

45. हँसना : रोना : : बचपन : (1) खेलकूद (2) बुढ़ापा (3) मारपीट (4) हार (45)

46. इन पाँच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें :—
(1) गाय, (2) भैंस, (3) घोड़ा, (4) भेड़, (5) बकरी .... (46)

47. क्रूर का उलटा है, (1) सज्जन, (2) भला, (3) दयालू, (4) कठोर (47)

48. इन पाँच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें :—
(1) कूदना, (2) फाँदना, (3) भागना, (4) खड़े रहना, (5) चलना, (48)

49. पद्‌मा से रणजीत अच्छी सिलाई करता है, किन्तु पुष्पा से पद्‌मा अच्छा कार्य करती है तब सिलाई में सब से अच्छा कौन है ? (1) रणजीत, (2) पद्‌मा, (3) पुष्पा (49)

50. इन पाँच शब्दों में से शब्द का अंक उत्तर पत्र पर लिखें :—
(1) मिट्टी, (2) लकड़ी, (3) शिला, (4) कंकर, (5) पत्थर (50)

51. उद्यम का उलटा है, (1) वियोग, (2) डरपोक, (3) विश्राम, (4) आलस्य (51)

52. नीचे दिये संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर पत्र पर लिखें :—78, 67, 56, 45, 34, 23 .... (52)

53. फल : सेब : पुष्प : (1) अनार (2) बादाम (3) गुलाब, (4) जामुन (53)

54. मोहन से नाटा राम है और किशन से नाटा राम है। तब सबसे कम लम्बा कौन है ?
(1) मोहन, (2) किशन, (3) राम (54)

55. नीचे दिये संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें :— 5, 6, 7, 8, 11, 15, 20 .... (55)

56. "झूठ के पाँव नहीं होते" यह इस कारण कहा जाता है कि (1) लंगड़े मनुष्य बहुत झूठ बोलते हैं। (2) झूठे मनुष्य की पोल शीघ्र खुल जाया करती है। (3) झूठ बोलने वाले बहुत बार चलते समय ठोकर खाते हैं : (56)

57. नाव : माझी : : मोटर : (1) स्वामी, (2) यात्री, (3) मंदर (4) चालक (57)

58. इन पाँच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें :—
(2) खाट, (2) कुर्सी, (3) प्लेट, (4) सोफा, (5) चौका (58)

59. मकान : ईंट : : सेना : (1) सिपाही, (2) पत्थर, (3) हथियार, (4) युद्ध (59)

60. नीचे दिये संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर पत्र पर लिखें :— 5, 6, 9, 10, 13, 14, (60)

[प्रश्न 61 से लिये देखिए पृष्ठ 4 (चौथा)] (शीघ्रता से कार्य करें)

(उत्तर पत्र पर यथा स्थान-उचित उत्तर की संख्या लिखें) — प्रश्न संख्या ↓

61. सम्पादक : पत्रिका : : व्यापारी : (1) बाजार, (2) विज्ञापन, (3) दुकान, (4) समाचार (61)

62. आश्चर्य का अर्थ है, (1) निराशा, (2) विस्मय, (3) घबराहट, (4) अनुभव (62)

63. चन्द्रमा : : पृथ्वी : पृथ्वी, (1) सागर, (2) मंगलतारा, (3) सूर्य, (4) मछलियाँ (63)

64. इन पाँच शब्दों में से बेमेल शब्द की संख्या उत्तर पत्र पर लिखें :—
(1) गोभी, (2) गाजर, (3) ककड़ी, (4) मूली, (5) धनिया (64)

65. सोना का अर्थ है, (1) कनक, (2) खाद, (3) धन, (4) माला (65)

66. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर पत्र
पर लिखें :— 9, 12, 14, 17, 19, 22 (66)

67. इन पाँच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर पत्र पर लिखें :—
(1) भूखा, (2) मरा, (3) प्यासा, (4) थका, (6) हारा (67)

68. सदाशिव से मुरारी लम्बा है। किन्तु मुरारी से वीरेन्द्र नाटा है और त्रिलोकी से मुरारी नाटा है।
तो सब से लम्बा कौन है ? (1) सदाशिव, (2) मुरारी, (3) वीरेन्द्र, (4) त्रिलोकी (68)

69. वृक्ष : लता : : कमल : (1) फूल, (2) चम्पा, (3) मोतिया, (4) मालसिरी (69)

70. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर पत्र
पर लिखें :— 8, 9, 12, 13, 16, 17 .... .... (70)

71. नेता : जनता : : अधिकारी : (1 चुनाव, (2) भाषण, (3) कर्मचारी, (4) निर्णय (71)

72. आरेखन कला में राम से गार्गी चतुर है। किन्तु उसकी अपेक्षा सीता चतुर है। अतः सबसे
चतुर कौन है ? (1) गार्गी, (2) सीता, (3) राम, (72)

73. इन पाँच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर पत्र पर लिखें :—
(1) घोड़ा, (2) ऊँट, (3) कंगारू, (4) गधा, (5) भैंसा (73)

74. चित्र : चुप्पा : : सिनेमा : (1) गाता, (2) चलता, (3) हँसता, (4) रोता (74)

75. नीचे दिये संख्या क्रम के अनुसार आगे की संख्या एक उत्तर पत्र
पर लिखें :— 29, 28, 26, 23, 19, 14 .... (75)

76. मेरे विचार में यदु से सीता चतुर है, किन्तु कमला से रमा निःसन्देह चतुर है। और सीता से रमा मन्द
है। तो सबसे चतुर कौन है ? (1) यदु, (2) कमला, (3) रमा, (4) सीता (76)

77. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर पत्र
पर लिखें :— 7, 8, 10, 13, 17, 22 .... .... (77)

78. सभ्यता का अर्थ है, (1) वस्त्र, (2) कला, (3) ज्ञान, (4) संस्कृति (78)

79. "जिसकी लाठी उसकी भैंस" कहने का अभिप्राय: है कि (1) भैंस वाले के पास लाठी आवश्यक
होती है। (2) अधिक बलवान की बात सबको माननी पड़ती है। (3) लाठी देखकर भैंस अधिक
दूध देती है। (79)

80. जूलियट : रोमियो : : संयोगिता : (1) स्वयंवर, (2) जयचन्द,
(3) पृथ्वीराज, (4) अकबर (80)

---

[प्रश्न 81] के लिए पन्ना उलटिए, देखिए पृष्ठ 5 (पाँचवाँ) ] (शीघ्रता से कार्य करें)

(उत्तर पत्र पर यथा-स्थान उचित उत्तर की संख्या लिखें ।) — प्रश्न संख्या ↓

81. अनेक वर्षों तक हवाई जहाज सफल न हुए, (1) वे बहुत भारी बनाये जाते थे । (2) उनके कल पुर्जे बहुत जटिल होते थे । (3) एक उत्तम इंजन नहीं बन पाया था । (81)

82. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें :— 4, 6, 9, 11, 14, 16, .... (82)

83. इन पाँच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर पत्र पर लिखें ।
(1) चिड़िया, (2) तोता, (3) बुलबुल, (4) कबूतर, (5) उल्लू (83)

84. नीचे दिये संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर पत्र पर लिखें :— 8, 9, 11, 12, 14, 15 .... (84)

85. इन पाँच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर पर लिखें :—
(1) गया, (2) पुरी, (3) प्रयाग, (4) द्वारिका, (5) दिल्ली (85)

86. दैनिक : मासिक : : पत्र : (1) कहानियाँ, (2) समाचार, (4) पत्रिका, (4) संवाद, (86)

87. ऋण का उल्टा है, (1) धन, (2) बचत, (3) बनिया, (4) व्यापार, (87)

88. कोट : पैन्ट : : कुरता : (1) समाचार, (2) टोपी, (3) पाजामा (4) पगड़ी, (88)

89. विस्तृत का उल्टा है, (1) विशाल, (2) कमरा, (3) पतला, (4) संकुचित, (89)

90. पेनसिल : चाक : : कापी : (1) पुस्तक, (2) बोर्ड, (3) ताक, सेब (90)

91. पाँच शब्दों से बेमेल शब्दों का अंक उत्तर पत्र पर लिखें :—
(1) पहरा, (2) प्रभात, (3) घंटा, (4) मिनट, (5) क्षण (91)

92. नीचे दिये संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर पत्र पर लिखें :— 2, 3, 5, 6, 8, 9, .... (92)

93. श्वेत : हिम : : श्याम : (1) दिन, (2) चिड़िया, (3) कौवा, (4) रात, (93)

94. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर पत्र पर लिखें :— 27, 36, 24, 21, 17, 12 (94)

95. विहंग का अर्थ है, (1) मोर, (2) पक्षी, (3) भद्दा, (4) विहग, (95)

96. रमा की बुद्धि देवकी से प्रखर है, पर सीता की बुद्धि सावित्री से हीन है, किन्तु देवकी की बुद्धि सावित्री से उत्तम है, तो सबसे बुद्धिमान कौन है ?
(1) देवकी, (2) सीता, (3) रमा, (4) सावित्री (96)

97. इन पाँच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर पत्र पर लिखें :
(1) हिमालय, (2) केरल, (3) मेघालय, (4) भोपाल (5) हरियाणा (97)

98. नाटा का उल्टा है, (1) भारी, (2) लम्बा, (3) तगड़ा, (4) कठोर (98)

99. गलत का अर्थ है, (1) बुरा, (2) विष, (3) कड़वा, (4) सरल, (99)

100. मकड़ी : मक्खी :: बिल्ली : (1) कुत्ता, (2) पिल्ला, (3) दूध, (4) चूहा (100)

---

(यदि समय बाकी है तो अपने उत्तरों को दोहराइए) ·

डा; प्र. अलोटा द्वारा मानकीकृत परीक्षा (72) का उत्तर पत्र [ आकृति 78 ]

नाम .................. कक्षा .................. स्कूल/कालेज/ग्राम ..................

दिनांक .................. आयु ...... वर्ष ...... माह ..................

| | उदाहरण |
|---|---|
| 1 | 1 |
| 2 | |
| 3 | 2 |
| 4 | |
| 5 | 7 |
| 6 | |
| 7 | 5 |
| 8 | |
| 9 | 2 |
| 10 | |
| 11 | 2 |
| 12 | |
| 13 | 2 |
| 14 | |

| पृष्ट 1 | | पृष्ट 2 | | पृष्ट 3 | | पृष्ट 4 | | पृष्ट 5 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | | 21 | | 41 | | 61 | | 81 | |
| 2 | | 22 | | 42 | | 62 | | 82 | |
| 3 | | 23 | | 43 | | 63 | | 83 | |
| 4 | | 24 | | 44 | | 64 | | 84 | |
| 5 | | 25 | | 45 | | 65 | | 85 | |
| 6 | | 26 | | 46 | | 66 | | 86 | |
| 7 | | 27 | | 47 | | 67 | | 87 | |
| 8 | | 28 | | 48 | | 68 | | 88 | |
| 9 | | 29 | | 49 | | 69 | | 89 | |
| 10 | | 30 | | 50 | | 70 | | 90 | |
| 11 | | 31 | | 51 | | 71 | | 91 | |
| 12 | | 32 | | 52 | | 72 | | 92 | |
| 13 | | 33 | | 53 | | 73 | | 93 | |
| 14 | | 34 | | 54 | | 74 | | 94 | |
| 15 | | 35 | | 55 | | 75 | | 95 | |
| 16 | | 36 | | 56 | | 76 | | 96 | |
| 17 | | 37 | | 57 | | 77 | | 97 | |
| 18 | | 38 | | 58 | | 78 | | 98 | |
| 19 | | 39 | | 59 | | 79 | | 99 | |
| 20 | | 40 | | 60 | | 80 | | 100 | |
| जोड़ | | जोड़ | | जोड़ | | जोड़ | | जोड़ | |

| योग्यता Ability | अंक Score | श्रेणी Grade |
|---|---|---|
| V शा | | |
| N सं | | |
| R त | | |

कुल जोड़ ...... प्रतिशतक श्रेणी ...... परीक्षक ......

| 1. | 2. | 3. | 4. | 5. | 6. | 7. | 8 | 9. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Poor | V dull | Dull | Low | Average | Bright | Superior | V Super | Excellent |
| दुर्बल | अधिक मंद | मंद | कम कुशल | औसत | तीव्र | उत्तम | अत्युत्तम | प्रतिभावान |